Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 245 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, गुरुवार 20 मार्च 2025 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

चिंता आयु को खा जाती है।

Tension eats age.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

9 महीने 14 दिन बाद पृथ्वी पर लौटीं सुनीता विलियम्स, फ्लोरिडा समुद्र तट पर लैंडिंग

डॉल्फिन्स ने किया स्वागत

फ्लोरिडा (एजेंसी)। अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स और बुच विलमोर, साथ ही नासा के निक हैग और रूसी अंतरिक्ष यात्री अलेक्जेंडर गोर्बुनोव, नौ महीने 14 दिन के लंबे मिशन के बाद पृथ्वी पर वापस लौटे हैं। एस्ट्रोनॉट्स को स्पेसएक्स के ड्रैगन अंतरिक्ष यान द्वारा सुरक्षित रूप से फ्लोरिडा के तट पर उतारा गया था। धरती पर लौटे अंतरिक्ष यात्रियों को एक सुंदर और अप्रत्याशित अनुभव हुआ। उनका स्वागत डॉल्फिन्स ने किया। ड्रैगन कैप्सूल के समुद्र में उतरते ही डॉल्फिन कैप्सूल के आसपास तैरते हुए देखे गए। यह एक लगभग जादुई क्षण था जब डॉल्फिन ने ड्रैगन कैप्सूल के चारों ओर चक्कर लगाया, इससे पहले कि इसे रिकवरी पोत पर रखा जाता। रिकवरी टीम ने कैप्सूल के साइड हैच को सावधानी से खोला, जो सितंबर के बाद से पहली बार खुला था। अंतरिक्ष यात्रियों को कैप्सूल से बाहर निकाला गया और 45 दिनों के पुनर्वास कार्यक्रम के लिए ह्यूस्टन ले जाया गया। क्रू-9 की पृथ्वी पर वापसी में अपनी चुनौतियां थीं।

मूल रूप से, यह मिशन (जो बोइंग के स्टारलाइनर की पहली चालक दल वाली उड़ान होने वाला था) केवल आठ दिनों तक चलने वाला था। हालांकि, स्टारलाइनर कैप्सूल के साथ तकनीकी समस्याओं के कारण, विलियम्स और विलमोर अंतरिक्ष में फंस गए थे। स्टारलाइनर के प्रणोदन समस्याओं के चलते सितंबर में इसकी वापसी बिना चालक दल के हुई।

वापसी की अनिश्चितता के कारण, नासा ने अंतरिक्ष यात्रियों को स्पेसएक्स के क्रू-9 मिशन में फिर से सौंप दिया। सितंबर में, स्पेसएक्स ने उन्हें वापस लाने के लिए एक ड्रैगन अंतरिक्ष यान भेजा, जिसमें चार के बजाय केवल दो चालक दल के सदस्य थे, ताकि फंसे हुए अंतरिक्ष यात्रियों को समायोजित किया जा सके। फाल्कन 9 रॉकेट पर ड्रैगन कैप्सूल को मिशन के लिए लॉन्च किया गया था। क्रू-10 ने अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर क्रू-9 की जगह ले ली है।

सीएम विष्णुदेव साय ने कहा- सुनीता विलियम्स ने रच दिया इतिहास

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने भारतीय मूल की प्रसिद्ध अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स को उनके ऐतिहासिक अंतरिक्ष मिशन की सफल समाप्ति और पृथ्वी पर सुरक्षित वापसी पर हार्दिक बधाई दी है। उनका यह ऐतिहासिक मिशन विज्ञान और अंतरिक्ष अन्वेषण की दुनिया में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि यह असाधारण अभियान सुनीता विलियम्स के धैर्य, साहस और विज्ञान के प्रति उनकी प्रतिबद्धता की अद्भुत मिसाल है, जो पूरे विश्व के लिए प्रेरणादायी है। मुख्यमंत्री ने अपने संदेश में कहा कि नभ के पार गई नारी ने धैर्य को अपना हथियार बनाया और साहस, संकल्प एवं स्वाभिमान से नव इतिहास रच दिया। कठिनाइयों के बावजूद डटे रहना ही सफलता की असली पहचान है। सुनीता विलियम्स ने इस मिशन के माध्यम से विज्ञान और अंतरिक्ष अन्वेषण के क्षेत्र में एक नई उपलब्धि जोड़ी है।

छत्तीसगढ़ विधानसभा परिसर में गूंज उठी बीजापुर के युवाओं की बुलंद आवाज- 'नक्सलवाद से मुक्ति और विकास की राह पर आगे बढ़ने का है इरादा'

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के सुदूर अंचल बीजापुर जिले के युवाओं ने आज लोकतंत्र के मंदिर- विधानसभा परिसर में इतिहास रच दिया। राज्य की 'स्वामी विवेकानंद युवा प्रोत्साहन योजना' के तहत शैक्षणिक भ्रमण पर पहुंचे बीजापुर के इन युवा प्रतिनिधियों ने मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के सामने एकजुट होकर अपनी मंशा व्यक्त की- हम अपने गांव, जिले और प्रदेश को नक्सलवाद से मुक्त देखना चाहते हैं और विकास की मुख्यधारा में शामिल होकर अपने भविष्य को उज्जवल बनाना चाहते हैं। इस ऐतिहासिक अवसर पर मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने युवाओं की इस मजबूत इच्छाशक्ति की सराहना करते हुए कहा कि आपका संकल्प ही हमारा संकल्प है। यदि क्षेत्र के युवा ठान लें, तो हम सभी के सहयोग से जल्द ही नक्सलवाद के अंधकार को समाप्त कर छत्तीसगढ़ को समृद्धि और विकास की नई ऊंचाइयों तक ले जाएंगे।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा- 'आपका संकल्प हमारा संकल्प, हम मिलकर छत्तीसगढ़ को नक्सल मुक्त बनाएंगे'

मुख्यमंत्री श्री साय ने युवाओं को भरोसा दिलाया कि राज्य सरकार 'नियद नेल्ला नार योजना' के माध्यम से उनके गांवों तक मूलभूत सुविधाएं पहुंचाने के लिए तेजी से कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि निरंतर खुल रहे सुरक्षा कैंपों और सुदूर अंचलों में प्रशासन की बढ़ती पहुंच से नक्सली दायरा सिमटता जा रहा है, जिससे अब विकास को नई गति मिल रही है। मुख्यमंत्री श्री साय ने हाल ही में अपने दिल्ली प्रवास के दौरान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह से हुई महत्वपूर्ण चर्चा का जिक्र करते हुए कहा कि केंद्र सरकार भी बीजापुर और बस्तर संभाग के अन्य क्षेत्रों के विकास के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह राज्य के दूरस्थ इलाकों की स्थिति पर लगातार नजर रखते हैं और वहां हो रहे विकास कार्यों की नियमित समीक्षा कर रहे हैं।

सशक्त युवा-सशक्त छत्तीसगढ़ : मुख्यमंत्री साय

मुख्यमंत्री श्री साय ने इस अवसर पर युवाओं को यह संदेश दिया कि शिक्षा ही विकास का मूलमंत्र है। जब युवा सही दिशा में आगे बढ़ेंगे, तो कोई भी ताकत क्षेत्र के विकास को बाधित नहीं कर सकती है। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ की युवा पीढ़ी अब बदलाव के लिए तैयार है। बीजापुर के युवाओं की यह मजबूत आवाज पूरे प्रदेश के लिए एक नई रोशनी लेकर आई है। नक्सल मुक्त छत्तीसगढ़- विकसित छत्तीसगढ़ के संकल्प को जल्द पूरा करने की प्रतिबद्धता के साथ मुख्यमंत्री ने बीजापुर के युवाओं से कहा कि हम आपके साथ हैं, आपके गांव के विकास और आप सभी के स्वर्णिम भविष्य को साकार करने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने युवाशक्ति से आह्वान किया कि इस बदलाव का हिस्सा बनें, अपने सपनों को साकार करें, और छत्तीसगढ़ को नई ऊंचाइयों तक ले जाएं। उन्होंने युवाओं से सरकारी योजनाओं का अधिकतम लाभ उठाने की अपील की और कहा कि हम सभी मिलकर छत्तीसगढ़ को नक्सल मुक्त, विकसित और समृद्ध राज्य बनाएंगे।

मुख्यमंत्री श्री साय ने युवाओं को समीक्षा कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री श्री साय ने युवाओं को आश्वस्त किया कि उनके गांवों में मोबाइल टावर लगाने, पक्की सड़कें बनाने, हर घर तक बिजली पहुंचाने और परिवहन सुविधाओं का विस्तार करने की योजनाएं सरकार की प्राथमिकता में हैं। उन्होंने कहा कि इस दिशा में तेजी से काम किया जा रहा है ताकि सुदूर अंचल के ग्रामीणों को भी शहरी सुविधाओं का लाभ मिल सके।

बीजापुर जिले के विभिन्न गांवों से आए सैकड़ों युवाओं के लिए यह दिन एक ऐतिहासिक अनुभव से कम नहीं था। राजधानी रायपुर में आयोजित इस शैक्षणिक भ्रमण के दौरान उन्होंने रेलवे स्टेशन, छत्तीसगढ़ विधानसभा और वनवासी कल्याण आश्रम का दौरा किया। राजधानी में आगमन के दौरान युवाओं ने विधानसभा परिसर का दौरा किया और दर्शक दीर्घा में बैठकर सदन की कार्यवाही देखी। वे पहली बार लोकतंत्र के इस मंच से जनप्रतिनिधियों की बहस और नीतिगत चर्चाओं को देखकर रोमांचित हो उठे। इस दौरान उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा, वन मंत्री श्री केदार कश्यप, स्वास्थ्य मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल, विधायक श्री धर्म कौशिक, अनुज शर्मा और सुश्री लता उसेंडी ने भी युवाओं से भेंट कर चर्चा की।

उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा ने युवाओं से उनके गांव की स्थिति के बारे में जानकारी ली और उन्हें आश्वस्त किया कि राज्य सरकार आपके गांवों में पक्की सड़क, बिजली, शुद्ध पेयजल, राशन, चिकित्सा और आवास जैसी सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

सुनीता विलियम्स की वापसी पर पीएम मोदी ने कहा- धरती पर स्वागत है...

आपका अटूट दृढ़ संकल्प हमेशा लाखों लोगों को प्रेरित करेगा : मोदी

नई दिल्ली (आरएनएस)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स और क्रू-9 टीम की धरती पर सुरक्षित वापसी के बाद सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर अपनी खुशी जाहिर की। पीएम नरेंद्र मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर सुनीता विलियम्स के साथ एक पुरानी तस्वीर शेयर करते हुए कैप्शन में लिखा- आपका स्वागत है क्रू-9, धरती ने आपको याद किया। यह उनके धैर्य, साहस और मानवीय भावना की परीक्षा रही। सुनीता विलियम्स और क्रू-9 के अंतरिक्ष यात्रियों ने एक बार फिर हमें दिखाया है कि दृढ़ता का वास्तव में क्या मतलब है। अज्ञात के सामने उनका अटूट दृढ़ संकल्प हमेशा लाखों लोगों को प्रेरित करेगा। पीएम मोदी ने आगे कहा, अंतरिक्ष अन्वेषण का मतलब है मानवीय क्षमता की सीमाओं को आगे बढ़ाना, सपने देखने का साहस करना और उन सपनों को हकीकत में बदलने का साहस रखना। सुनीता विलियम्स, एक पथप्रदर्शक और एक आइकान, ने अपने पूरे करियर में इस भावना का उदाहरण दिया है। हमें उन सभी पर बहुत गर्व है जिन्होंने क्रू-9 की सुरक्षित वापसी सुनिश्चित करने के लिए अथक मेहनत की।

संक्षिप्त समाचार

जम्मू में एनआईए ने 10 स्थानों पर की छापेमारी

जम्मू (आरएनएस)। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने जम्मू-कश्मीर के भटिंडी में घुसपैठ से जुड़े मामले में बड़ी कार्रवाई की है। बुधवार सुबह, जम्मू में 10 स्थानों पर छापेमारी की गई। बताया गया कि पाकिस्तान से भारत में आतंकवादियों की घुसपैठ को लेकर यह कार्रवाई की गई है। बता दें कि जम्मू-कश्मीर में आतंकवादियों की घुसपैठ मामले में एनआईए छापेमारी करती रही है। इससे पहले 13 दिसंबर 2024 को एनआईए ने छापेमारी की थी, जिसमें जम्मू-कश्मीर के विभिन्न जिलों समेत कुल 19 स्थानों पर रेड डाली गई। इस दौरान जम्मू-कश्मीर के रियासी, बड़गाम, अनंतनाग और बारामुला जिलों में छापेमारी की गई थी।

तेजस्वी बोले-नीतीश 20 साल से चला रहे खटारा सरकार, भाजपा भड़की

पटना (आरएनएस)। बिहार में इस साल के अंत में होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले आरजेडी नेता तेजस्वी यादव ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को घेरना शुरू कर दिया है। तेजस्वी कभी नीतीश की मानसिक स्थिति पर सवाल खड़े कर रहे हैं, तो कभी कह रहे हैं कि नीतीश कुमार सिर्फ पैर छूने वाले मुख्यमंत्री रह गए हैं। बुधवार को तो उन्होंने नीतीश की सरकार को खटारा करार दिया। तेजस्वी के इन आरोपों पर भाजपा भड़क गई है।

केंद्र सरकार के साथ मीटिंग से पहले चंडीगढ़ बॉर्डर पर रोके गए किसान

नई दिल्ली (आरएनएस)। फसलों पर न्यूनतम समर्थन मूल्य (~~एमएसपी~~) समेत अन्य मांगों को लेकर आज यानी 19 मार्च को केंद्र सरकार और किसानों के बीच सातवें दौर की वार्ता शुरू होने जा रही है। किसानों की ओर से संयुक्त किसान मोर्चा के नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल और किसान मजदूर मोर्चा के संयोजक सरवन सिंह पंधेर के नेतृत्व में 28 किसान नेता शामिल हो रहे हैं।

मंत्रिमण्डल विस्तार जल्द ही होगा : सीएम विष्णुदेव साय

दिल्ली से लौटकर मुख्यमंत्री ने दी जानकारी

रायपुर (विसं)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय दिल्ली दौरे से लौट चुके हैं। दिल्ली दौरे से लौटने के बाद सीएम साय ने मीडिया से बातचीत की और दिल्ली में पीएम मोदी समेत अन्य नेताओं से हुई चर्चा में बारें में जानकारी दी। सीएम विष्णुदेव साय ने कहा कि नगरी निकाय और पंचायती चुनाव में मिली जीत को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से चर्चा हुई, जिसमें प्रधानमंत्री ने इसे सुशासन, विकास और जनता के विश्वास की जीत बताया। इस अवसर पर 30 मार्च को प्रधानमंत्री के छत्तीसगढ़ दौरे पर भी चर्चा हुई।

सीएम साय ने यह भी बताया कि, नक्सलवाद पर सरकार और सेना के जवानों की लड़ाई लगातार जारी है। उन्होंने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और प्रधानमंत्री मोदी को इस बारे में पूरी जानकारी दी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि बस्तर में शांति और खुशहाली की स्थापना हेतु हमारी सरकार दृढ़ संकल्पित है। नक्सली गोली-बारूद की भाषा छोड़ कर आत्मसमर्पण करें, हमारी सरकार उनके पुनरुत्थान के लिए तत्पर है। इसके अलावा शहरी विकास मंत्री से नगरी क्षेत्र के विकास को लेकर भी बैठक हुई।

वहीं, कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी सचिन पायलट के दौरे और बैठक को लेकर मुख्यमंत्री ने कहा कि, वह एक ही फ्लाइट से रायपुर लौटे हैं और सचिन पायलट से मुलाकात भी हुई। मंत्रिमंडल विस्तार की चर्चाओं पर उन्होंने कहा कि यह विस्तार जल्द ही होगा, लेकिन साथ ही यह भी जोड़ा कि कांग्रेस का जो हश्र होना था, वह हो चुका है।

छ.ग. विधानसभा : उद्यानिकी महाविद्यालयों में प्रोफेसरों की कमी को दूर करने मंत्री ने की अहम घोषणा

रायपुर (विसं)। छत्तीसगढ़ विधानसभा का बजट सत्र जारी है। बुधवार को प्रश्नकाल के दौरान कई मुद्दों पर चर्चा हुई। सत्ता पक्ष और विपक्ष के विधायकों ने मंत्रियों से एक के बाद एक कई सवाल दागे। प्रश्नकाल के दौरान विश्वविद्यालय और स्कूलों में शिक्षकों की कमी का मुद्दा गूंजा।

प्रश्नकाल के दौरान भाजपा के वरिष्ठ विधायक अजय चंद्राकर ने कहा महात्मा गांधी उद्यानिकी विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित 15 अनुसंधान केंद्र सिर्फ अनुसंधान केंद्र हैं या फिर कॉलेज हैं? अगर अनुसंधान केंद्र हैं तो किस विषय के अनुसंधान होते हैं? मंत्री केदार कश्यप ने कहा कि वर्तमान में यहां सिर्फ कॉलेज हैं। अजय चंद्राकर ने रिक्त पदों की जानकारी मांगी। मंत्री केदार कश्यप ने कहा कि 15 महाविद्यालयों में 600 स्वीकृत पदों में 652 शैक्षणिक पद में से

केवल 69 पद भरे हैं। 623 पद रिक्त है। अभी वैकल्पिक शिक्षकों की व्यवस्था है। आने वाले समय में इसकी भर्ती करेंगे। इसी के संबंधित सवालों पर मंत्री ने बाद में जानकारी उपलब्ध कराने की बात कही। उद्यानिकी विश्विद्यालय के अंतर्गत संचालित महाविद्यालयों में प्रोफेसरों की कमी को लेकर भाजपा विधायक धरमलाल कौशिक ने भी चिंता जताई। उन्होंने कहा कि एक शिक्षक 100 से 150 बच्चों को पढ़ा रहे हैं। नियुक्ति के संबंध में जानकारी मांगी। इस पर मंत्री केदार कश्यप ने सदन में अगले सत्र तक वैकल्पिक व्यवस्था करने की घोषणा की।

मार्च में रेडी टू ईट वितरण रुका, मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े घिरीं

विधानसभा में बुधवार को ध्यानाकर्षण में रेडी टू ईट वितरण में अनियमितता का मामला उठा. विधायक बालेश्वर साहू ने जांजगीर-चांपा क्षेत्र में लम्बे समय से रेडी टू ईट का वितरण नहीं होने की बात कही. इस पर मंत्री के इंकार करने पर सभापति ने अधिकारियों को जांच करने के निर्देश देने की बात कही. मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने सदन में जांजगीर-चांपा में रेडी टू ईट का वितरण नहीं होने की बात पर कहा कि यह कहना गलत है कि बीज निगम से रेडी टू ईट वितरण नहीं किया जा रहा, सभी जगह आपूर्ति हो रही है. कहीं कोई गड़बडी नहीं है. इस पर समाचार का हवाला देते हुए विधायक ने कहा कि 15 से 30 तारीख तक भंडारण करना होता है, लेकिन मार्च में नहीं हुआ.

तेलंगाना सरकार ने पेश किया तीन लाख करोड़ से ज्यादा का बजट

हैदराबाद (आरएनएस)। तेलंगाना के उपमुख्यमंत्री और वित्त मंत्री मल्लू भट्टी विक्रमार्क ने बुधवार को विधानसभा में वित्त वर्ष 2025-26 के लिए 3.04 लाख करोड़ रुपये का बजट पेश किया।

कांग्रेस सरकार का दूसरा पूर्ण बजट पेश करते हुए विक्रमार्क ने राजस्व व्यय 2.26 लाख करोड़ रुपये और पूंजीगत व्यय 36,504 करोड़ रुपये रहने का अनुमान लगाया। उन्होंने कहा, वित्त वर्ष 2025-26 के लिए मैं कुल 3,04,965 करोड़ रुपये का व्यय प्रस्तावित कर रहा हूं, जिसमें राजस्व व्यय 2,26,982 करोड़ रुपये और पूंजीगत व्यय 36,504 करोड़ रुपये होगा। पिछले साल जुलाई में वित्त मंत्री ने 2024-25 के लिए 2.91 लाख करोड़ रुपये का बजट पेश किया था।

मौजूदा कीमतों पर तेलंगाना के सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) में 2024-25 के दौरान 10.1 प्रतिशत की वृद्धि का अनुमान है, जबकि राष्ट्रीय विकास दर 9.9 प्रतिशत है। तेलंगाना का जीएसडीपी 16,12,579 करोड़ रुपये है। वित्त वर्ष 2024-25 में तेलंगाना की प्रति व्यक्ति आय 3,79,751 रुपये थी, जो 9.6 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाती है। उन्होंने कहा, इसकी तुलना में देश की प्रति व्यक्ति आय 2,05,579 रुपये है, जिसमें 8.8 प्रतिशत की वृद्धि दर है। स्पष्ट रूप से, तेलंगाना की प्रति व्यक्ति आय (राष्ट्रीय औसत से) 80 प्रतिशत यानी 1,74,172 रुपये अधिक है। यह राज्य की मजबूत आर्थिक प्रगति को दर्शाता है।

जेल पहुंचे पीसीसी प्रभारी सचिन पायलट ने की कवासी लखमा से मुलाकात

दीपक बैज, देवेंद्र यादव सहित कई नेता मिलने पहुंचे सेंट्रल जेल

कवासी लखमा दिलेरी से झेल रहे कष्ट : डॉ. महंत

रायपुर (आरएनएस)। छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस प्रभारी सचिन पायलट आज सेंट्रल जेल पहुंचे, जहां उन्होंने जेल में बंद पूर्व मंत्री कवासी लखमा से मुलाकात की. इस दौरान उनके साथ नेता प्रतिपक्ष चरणदास महंत, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज, विधायक देवेंद्र यादव समेत कई अन्य कांग्रेस नेता भी मौजूद रहे. जेल में कवासी लखमा से मुलाकात के बाद सचिन पायलट ने मीडिया से बातचीत में भाजपा सरकार पर तीखे हमले किए.

उन्होंने कहा कि जो लोग भाजपा की विचारधारा का विरोध करते हैं, सरकार उनके साथ ऐसा ही व्यवहार करती है. हम न्यायालय में लड़ाई लड़ते रहेंगे. लोगों का चरित्र हनन करने की कोशिश की जाती है. सरकारी द्वारा एजेंसी के माध्यम से मनोबल तोड़ने की कोशिश की जाती है. हमें पूरा विश्वास है कि हमें न्यायालय के माध्यम से विजय मिलेगी. हमारा पोलिटिकल संघर्ष जारी रहेगा. सरकारी एजेंसी का धड़ल्ले से दुरुपयोग हो रहा है. ये व्यक्ति विशेष की लड़ाई नहीं, हम इसका पुरजोर विरोध करेंगे, पूरे देश में जहां-जहां बीजेपी सरकारी एजेंसी का दुरुपयोग कर रही है. वहां वहां विरोध करेंगे.

नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरणदास महंत ने भी सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि शासन की ओर से जो भी कष्ट मिल रहा है. उसे बड़े दिलेरी के साथ कवासी लखमा झेल रहे हैं. उनमें झेलने की ताकत है. जो वह सह रहे हैं वो सरकार की प्रताड़ना है. केंद्रीय और राज्य सरकार की प्रताड़ना को झेलने में कोई कोताही नहीं बरत रहे हैं. नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरणदास महंत ने कहा कि हमारे प्रदेश प्रभारी सचिन पायलट और अन्य पदाधिकारी भी उनसे मिलने आए थे.

अब हर भारतीय भाषा में मिलेगी संसद की डिबेट

नई दिल्ली (आरएनएस)। अब संसद में होने वाली डिबेट हर भारतीय भाषा में आसानी से मिल सकेगी। इससे रिसर्चर्स, सांसदों और अन्य लोगों को फायदा होगा। यह जानकारी केंद्रीय रेल, सूचना एवं प्रसारण, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव द्वारा दी गई। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि इंडियाएआई मिशन और लोकसभा के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) साइन हुआ है। इसके तहत एआई का उपयोग करके संसद में होने वाले डिबेट का हर भारतीय भाषा में 'एआईकोष' के नाम से डेटासेट बनाया जाएगा। इससे संसद में होने वाली डिबेट का ट्रांसक्रिप्शन किसी भी भाषा में लिया जा सकेगा। वैष्णव ने कहा कि इससे हमारे रिसर्चर्स, सांसदों और अकादमिक से जुड़े लोगों को संसद की डिबेट का विस्तृत ट्रांसक्रिप्शन किसी भाषा में मिल पाएगा।

श्री दावड़ा यूनिवर्सिटी की महानिदेशक डॉ. चार्मी दावड़ा को 'शक्ति सम्मान 2025' से सम्मानित किया गया

रायपुर (विश्व परिवार)। आज दिनांक 19 मार्च 2025 को श्री दावड़ा यूनिवर्सिटी की महानिदेशक डॉ. चार्मी दावड़ा को शिक्षा और महिला सशक्तिकरण में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए 'शक्ति सम्मान 2025' से सम्मानित किया गया। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार मशहूर बॉलीवुड अभिनेत्री रवीना टंडन और महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े द्वारा प्रदान किया गया।

डॉ. चार्मी दावड़ा ने शिक्षा के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट नेतृत्व क्षमता और महिलाओं के उत्थान के प्रति समर्पण से महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की हैं। उनके मार्गदर्शन में श्री दावड़ा यूनिवर्सिटी ने शैक्षिक उत्कृष्टता और सामाजिक कल्याण के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों को छुआ है।

पुरस्कार प्राप्त करने के बाद, डॉ. चार्मी दावड़ा ने अपनी खुशी जाहिर करते हुए कहा कि यह सम्मान मुझे शिक्षा और युवा सशक्तिकरण के लिए और अधिक मेहनत करने की प्रेरणा देता है। मैं इस पुरस्कार को अपनी टीम और विद्यार्थियों को समर्पित करती हूँ। 'शक्ति सम्मान' उन प्रभावशाली महिलाओं को दिया जाता है, जिन्होंने अपने क्षेत्र में विशेष योगदान दिया है। इस भव्य समारोह में शिक्षा, राजनीति और फिल्म जगत की कई प्रतिष्ठित हस्तियों ने भाग लिया और महिला सशक्तिकरण की भावना का उत्सव मनाया। कार्यक्रम का आयोजन IBC 24 के द्वारा किया गया।

संक्षिप्त समाचार

नामांकन के अंतिम दिन 105 फार्म दिये गये

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ चेम्बर ऑफ़ कामर्स एंड इंडस्ट्रीज के चुनाव-2025 की प्रक्रिया के तहत नाम निर्देशन के अंतिम दिन आज बुधवार, दिनांक 19 मार्च 2025 को 105 नाम निर्देशन पत्र दिये गये जिसमें 3 अध्यक्ष, 2 महामंत्री, 2 कोषाध्यक्ष तथा जिला उपाध्यक्ष के 51 एवं जिला मंत्री के 47 थे। इस अवसर पर मुख्य निर्वाचन अधिकारी शिवराज भंसाली, निर्वाचन अधिकारी-प्रकाशचंद गोलछा, बालकृष्ण दानी, के. सी. माहेश्वरी, रमेश गांधी, महावीर तालेड़ा, अनिल जैन(कुचेरिया), संजय देशमुख, संजय जोशी, अमित वर्मा, मनोज शर्मा, घनश्याम लालवानी, मुख्य निर्वाचन नियंत्रक एच.एस.कर, एवं चेम्बर चुनाव कार्यालय प्रभारी एस.एम.रावते प्रमुख रूप से उपस्थित थे। कल दिनांक 20 मार्च 2025, दिन गुरुवार को नाम निर्देशन पत्र जमा करने का अंतिम दिन है, समय प्रातः 11 बजे से शाम 5 बजे तक रहेगा।

मृणालिका ओझा की कहानी जापान के उकियोतो इंटरनेशनल चिल्ड्रन्स बुक अवार्ड्स 2025 के लिए चयनित

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के लिए यह गौरव की बात है कि रायपुर की डॉ. मृणालिका ओझा की बाल कहानी जंगल मितान का चयन जापान के उकियोतो इंटरनेशनल चिल्ड्रन्स बुक अवार्ड्स 2025 के लिए किया गया है। यह चयन चिल्ड्रन्स बुक ऑफ द ईयर के अंतर्गत किया गया है। ज्ञातव्य है कि डॉ. ओझा ने न केवल छत्तीसगढ़ की लोककथाओं पर शोध किया है अपितु छत्तीसगढ़ के रीति-रिवाज, संस्कृति आदि पर आपने अनेक शोधालेख राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत किए हैं। आपने दो सौ से अधिक पुस्तकों की समीक्षा का भी वृहद कार्य किया है।

राशन वितरण में लाखों की अनियमितता, प्रबंधक-विक्रेता गिरफ्तार

बिलासपुर-रायपुर (आरएनएस)। शासकीय राशन के वितरण में गड़बड़ी करने वाले प्रबंधक और विक्रेता को पुलिस ने गिरफ्तार किया है. इन पर 10 लाख रुपये की अनियमितता के आरोप में कार्रवाई हुई है. इस मामले में दो फूड इंस्पेक्टर को भी कलेक्टर ने नोटिस जारी किया है. यह मामला मस्तूरी के शासकीय उचित मूल्य की दुकान का है. मस्तूरी ब्लॉक में पीडीएस चावल गबन करने के मामले में संचालक प्रबंधक मनोज रात्रे और विक्रेता मनीराम कुर्रे पर सरकारी राशन में गड़बड़ी का आरोप लगा था. खाद्य विभाग ने जांच में दुकान संचालक और विक्रेता पर 10 लाख 82 हजार 720 रूपए की गड़बड़ी का आरोप सही पाया गया था. दरअसल, वर्ष 2024 में शासकीय उचित मूल्य दुकान मस्तूरी आईडी 402002001 के प्रबंधक मनोज रात्रे तथा विक्रेता मनीराम कुर्रे था. उनके द्वारा राशन दुकान में चावल 272.50 क्विंटल कम, शक्कर 3.77 क्विटल अधिक एवं रिफाइंड नमक 8.04 क्विटल अधिक पाया गया.

महापौर ने वार्ड क्र.-20 का निरीक्षण, वार्डवासियों से रूबरू होकर सुनी समस्या, अधिकारियों को दिये निर्देश

वार्ड में सफाई व्यवस्था में सुधार करें, महापौर का अधिकारियों के साथ औचक निरीक्षण

दुर्ग (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम सीमा क्षेत्र के उचित विकास के लिए दुरुस्त मार्ग व्यवस्था, बेहतर सीवेज सिस्टम और अन्य मूलभूत आवश्यकताओं का बेहतर होना बेहद आवश्यक होता है। इसलिए विकसित संरचनात्मक व्यवस्था का होना प्रगतिशील समाज के लिए बेहद आवश्यक है। इसी कड़ी में आगे बढ़ते हुए नगर पालिक निगम महापौर श्रीमती अलका बाघमार, सभापति श्याम शर्मा ने आयुक्त सुमित अग्रवाल, वार्ड पार्षद सहित जनप्रतिनिधियों व अधिकारियों के साथ आदित्य नगर वार्ड क्रमांक 20 में आज क्षेत्र के नागरिकों के साथ मिलकर क्षेत्र की सफाई व्यवस्था का निरीक्षण किया और साथ ही उन्होंने स्थानीय निवासियों की समस्याएं जानी।

इस दौरान लोक कर्म प्रभारी देवनारायण चन्द्राकर, राजस्व विभाग प्रभारी चंद्रशेखर चन्द्राकर, स्वास्थ्य विभाग प्रभारी नीलेश अग्रवाल, गरीबी उन्मूलन, समाज कल्याण विभाग प्रभारी शिव नायक, वार्ड पार्षद श्रीमती सावित्री दमाहे, पार्षद श्रीमती सुरुचि उमरे, अरुण सिंह, मनमोहन शर्मा के अलावा सहायक अभियंता संजय ठाकुर, वीपी मिश्रा, धर्मेंद्र मिश्रा, पंकज साहू, मोहित मरकाम, तेखन सिन्हा, जितेंद्र सिंह राजपूत के सहित नागरिकगण मौजूद रहें। महापौर श्रीमती अलका बाघमार ने बुधवार को आदित्य नगर वार्ड 20 का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने ने वार्ड के समस्त गलियों और चौक चौराहे का निरक्षण किया। इस दौरान गलियों में गंदगी मिलने के चलते सुपर वाइजर व सफाई कर्मियों को सफाई व्यवस्था में सुधार के निर्देश दिए।

महापौर ने वार्डवासियों की सुनी समस्या- आदित्य नगर के वार्ड 20 के कुछ हिस्सों में सफाई व्यवस्था बेहतर नहीं है, वार्ड के नालिया कचरे से जाम मिली जिसे तत्काल साफ करवाने के निर्देश दिए।साथ ही साथ लोग अपने घर के पास नालियों के ऊपर फॉरिंग कर रखा है।जिसके चलते स्थानीय निवासियों के लिए आने जाने में बाधा उत्पन्न होती है। महापौर ने संबंधित अधिकारियों को नोटिस जारी कर नाली के ऊपर फॉरिंग को तोड़ने के निर्देश दिए।उन्होंने आदित्य नगर में जहाँ नाली नही है वहाँ नाली निर्माण को प्रस्तावों में लाने की बात कही।

कुशाभाऊ ठाकरे भवन के सामने आदित्य नगर चौक दुकान के बाहर समान रखने वालों को हटवाए, जुर्माना लगवाए, वहीं चौक चौराहों सड़क पर किसी भी ठेले को न लगने दिया जाए। लोगो को आने जाने में बाधा उत्पन्न होती है। आदित्य नगर शिव मंदिर के अपने अपने घरों के सामने रहवासियों के द्वारा अवैध तरीके से सड़क सीमा पर जाली व लोहे का गेट लगवाया गया है, तत्काल नोटिस जारी कर हटवाने के निर्देश।

अग्निवीर भर्ती हेतु आवेदन की अंतिम तिथि 10 अप्रैल

रायपुर (विसं)। अग्निवीर भारतीय थल सेना भर्ती के लिए 12 मार्च से 10 अप्रैल तक आवेदन ऑनलाइन किया जा सकता है। जिला रोजगार अधिकारी ने जानकारी देते हुए आज सोमवार को बताया कि सेना भर्ती कार्यालय रायपुर द्वारा अग्निवीरों की भर्ती के लिए अधिसूचना जारी की गई है, जो भारतीय सेना की वेबसाइट ज्वाइन इंडियन आर्मी डॉट एनआईसी डॉट इन पर उपलब्ध है। अग्निवीर की भर्ती जनरल, तकनीकी, क्लर्क, ट्रेडमैन (8वीं एवं 10वीं कक्षा उत्तीर्ण) महिला सैन्य पुलिस और रेगुलर कैडर भर्ती धर्म गुरु, नर्सिंग सहयोगी और सिपाही फार्मा के पदों के लिए जारी की गई है।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे

ई-नीलामी सूचना क्र.: COM/C/G/R/E-auction/25 दिनांक: 17.03.2025

रायपुर मंडल में आय एवं लीज़िंग अनुबंध हेतु ई-नीलामी निम्नानुसार निर्धारित है :

Sr. No.	Asset Description	Auction Date	Auction Time From	Auction Time To
1	**भिलाई** स्टेशन पर टिकट काउंटर पर 01 डिजिटल डिस्प्ले सिस्टम स्क्रीन की स्थापना के लिए विज्ञापन अनुबंध के लिए निविदा	01.04.2025	12:00	12:30
2	**कुम्हारी** स्टेशन पर टिकट काउंटर पर 02 डिजिटल डिस्प्ले सिस्टम स्क्रीन की स्थापना के लिए विज्ञापन अनुबंध के लिए निविदा	01.04.2025	12:00	12:40
3	**भानुप्रतापपुर** रेलवे स्टेशन पर दो पहिया एवं चार पहिया वाहन पार्किंग स्टैंड हेतु निविदा	03.04.2025	10:00	10:30
4	**दल्ली राजहरा** रेलवे स्टेशन पर दो पहिया एवं चार पहिया वाहन पार्किंग स्टैंड हेतु निविदा	03.04.2025	10:00	10:40
5	**उरकुरा** रेलवे स्टेशन पर दो पहिया एवं चार पहिया वाहन पार्किंग स्टैंड हेतु निविदा	03.04.2025	10:00	10:50
6	**सरोना** रेलवे स्टेशन पर दो पहिया एवं चार पहिया वाहन पार्किंग स्टैंड हेतु निविदा	03.04.2025	10:00	11:00

सभी ई-नीलामी अधिसूचनाओं का विवरण वेबसाइट www.ireps.gov.in पर अपलोड किया गया है।
सहायक मंडल वाणिज्य प्रबंधक, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, रायपुर
PR/R/SR.DCM/FL/270 South East Central Railway @secrail

महापौर परिषद के समक्ष विचारार्थ बजट प्रस्तुत किया गया

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम भिलाई में महापौर परिषद की बजट बैठक आज महापौर नीरज पाल की अध्यक्षता में आहूत की गई। नगर निगम भिलाई के प्रभारी आयुक्त/सचिव नरेन्द्र कुमार बंजारे द्वारा महापौर परिषद के समस्त सदस्यों की उपस्थिति में महापौर नीरज पाल को बजट विचारर्थ हेतु प्रस्तुत किया गया। दिनांक 20.03.2025 को समय 12 बजे महापौर परिषद के सदस्यों द्वारा आयुक्त के उपस्थिति में आगामी वित्तीय वर्ष 2025-26 के बजट पर संबंधित अधिकारियो की उपस्थिति में चर्चा की जायेगी।

महापौर परिषद के सदस्य सीजू एन्थोनी, लक्ष्मीपति राजू, केशव चैबे, संदीप निरंकारी, साकेत चंद्राकर, लालचंद वर्मा, आदित्य सिंह, मन्नान गफ्फार खान, इंजीनियर सरमान, श्रीमती नेहा साहू, मालती ठाकुर, निगम के लेखाधिकारी चन्द्रभूषण साहू, जोन आयुक्त अजय सिंह राजपूत, येशा लहरे, कुलदीप गुप्ता, कार्यपालन अभियंता अखिलेश चंद्राकर, अनिल सिंह, रवि सिन्हा, संजय अग्रवाल, अरविंद शर्मा, सुनील जैन, राजस्व अधिकारी जगदीश तिवारी, स्वास्थ्य अधिकारी जावेद अली, स्थापना प्रभारी श्रीमती रीता चतुर्वेदी, जनसम्पर्क अधिकारी अजय शुक्ला, उपअभियंता बसंत साहू, देवराज राजपूत, प्रकाश गढपाले आदि उपस्थित रहे।

CHHATTISGARH STATE POWER GENERATION CO. LTD.
(A Govt. of Chhattisgarh Undertaking) CIN: U40108CT2003SGC015821

No. 15-16/ABVTPS/WT-09/24-25/3425 Marwa, Dt.13-03-2025

NOTICE INVITING TENDER

Seal tenders are invited from experience contractor/firms for:-

Sl. No.	Tender specification no.	Particulars	Last date for sale of tender documents	Due date of submission/opening of tender	Tender fee	EMD
01	15-16/ ABVTPS/ W-T- 09/24-25	Hiring of one number (SUV Vehcile (6+1 seater) for E.E. (CHP-MM/EM), ABVTPS, CSPGCL, Marwa for an average run of 1250 KM per month including driver fuels and other consumbles etc.	28/04/2025	29/04/2025	Rs. 590 including GST @18% +Rs 112 Postal charges (if require by post)	6283/-

Note: -Tender fee is non-refundable and required in form of P.O./DD/B.C. in favour of the "Sr. Account Officer, 2 x 500 MW, ABVTPS, CSPGCL, Marwa, Champa" payable at SBI Champa only.

//SAVE ELECTRICITY FOR THE BENEFIT OF SELF AND NATION//

SUPERINTENDING ENGINEER (CHP-Maint)
2x500 MW ABVTPS, CSPGCL, Marwa

SAMVAD- 43278/ 1

सड़क पर अतिक्रमण कर पुराने कंडम गाड़ी रखने वालो पर होगी कार्यवाही

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम भिलाई क्षेत्र में अवैध रूप से अतिक्रमण कर सड़क पर पुराने कंडम गाड़ी रखने वालो पर निगम के राजस्व की टीम कार्यवाही कर रही है। सर्वप्रथम सभी गाड़ी मालिको को नोटिस दिया जा रहा है, जिन गाड़ियो के कोई मालिक नहीं मिल रहे है, उनके उपर भी नोटिस चस्पा किया जा रहा है। यातायात विभाग के सहयोग से रोड के किनारे खड़े गाड़ियो को जप्ती बनाया जायेगा। जिस किसी की भी गाड़ी होगी, नम्बर के आधार पर आरटीओ विभाग से उन्हे आर्थिक दण्ड निर्धारित किया जायेगा।

आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय प्रतिदिन की भांति जब क्षेत्रों का निरीक्षण करने जाते है। तो स्थानीय लोगो द्वारा शिकायत की जाती है कि वर्षो से पुरानी कंडम गाड़ियॉ खड़ी है। गैरेज वाले रख दिये है, लेकर भी नहीं जा रहे है। इससे सड़क और निगम की जगह दोनो पर अतिक्रमण होता है। आवागमन बाधित होता है, दुर्घटना की संभावना बनी रहती है। मुख्य मार्ग, सर्विस मार्ग, चैंक चैराहो के किनारे इस प्रकार की गाड़ियॉ पड़ी रहती है। इस संबंध में आयुक्त पाण्डेय द्वारा सभी जोन के सहायक राजस्व अधिकारी को निर्देशित किये है कि अपने-अपने जोन क्षेत्रों में पुरानी गाड़ियो के मालिको को पहले नोटिस दे, उसके बाद यातायात विभाग के सहयोग से संबंधित वाहनो को जप्ती बनाने की कार्यवाही करें।

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./18708/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2025
रायपुर, दिनांक 19-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 18708
वार्ड का नाम- 52 - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 52 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR446L00783** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **1. PRASHANT GUPTA , 2. NIDHI GUPTA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MAHESH KUMAR GUPTA, PRASHANT GUPTA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **GOURI SHANKR GUPTA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SITARAM GUPTA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./19102/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2025
रायपुर, दिनांक 19-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19102
वार्ड का नाम- 16 - वीर शिवाजी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 16 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR107I00408** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **KOMAL PRASAD SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE. GOVERDHAN SAHU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **BINDU SHARMA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O RAJU SHARMA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./18666/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2025
रायपुर, दिनांक 19-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 18666
वार्ड का नाम- 16 - वीर शिवाजी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 16 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR107H00043** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **LALITA SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **DINESH KUMAR SAHU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SANT RAM PAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O RATAN LAL PAL** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./19104/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2025
रायपुर, दिनांक 19-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19104
वार्ड का नाम- 16 - वीर शिवाजी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 16 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR107J00029** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **NATHURAM RAMTEKE S/O LAXMAN RAMTEKE, ASHISH RAMTEKE** पिता/पति, श्री/श्रीमती **NTTHU RAMTEKE** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती 1 **ASHA RAMTEKE 2 VISHAL RAMTEKE 3. ASHISH RAMTEKE** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O & S/O LATE NATHU RAMTEKE** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-5)
ईदगाहभाठा,नवीन पानी टंकी परिसर, रायपुर
Email ID - rmczone5@gmail.com

पत्र क्रं./19193/न.पा.नि./जोन क्रं.-5/2025
रायपुर दिनांक : 19-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19193
वार्ड का नाम-68-खुबचंद बघेल वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 68 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR567C00276** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **G. DHANLAXMI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **G. JAGAN MOHAN RAO** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **NIRMALA GOPICHAND HEMNE** पिता/पति, श्री/श्रीमती **GOPICHAND HEMNE** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 5
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./19017/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2025
रायपुर दिनांक : 19-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19017
वार्ड का नाम- 27- इंदिरा गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 27 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR220F00299** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **RADHA KHUBCHANDANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O LATE SHRI KISHANCHAND KHUBCHANDANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. ASHOK RAJPAL 2. SMT.MAHAK RAJPAL 3. MOHIT RAJPAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **1.S/O LT. AMRIT LAL RAJPAL 2 W/O ASHOK RAJPAL 3. S/O LEKHRAJ RAJPAL** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./19161/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2025
रायपुर दिनांक : 19-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19161
वार्ड का नाम- 28- शहीद हेमू कालाणी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 28 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR235E00063** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **SANTI KUMAR JAIN HUF SANTI KUMAR JAIN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE LUN KARAN JI JAIN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SHANKAR LAL KUKREJA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O SHRI GOPI RAM KUKREJA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./19160/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2025
रायपुर दिनांक : 19-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19160
वार्ड का नाम- 28- शहीद हेमू कालाणी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 28 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR235E00064** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **NELU JAIN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O VIJAY KUMAR JAIN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SHANKAR LAL KUKREJA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O SHRI GOPI RAM KUKREJA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./19144/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2025
रायपुर, दिनांक 19-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19144
वार्ड का नाम-30- शंकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 30 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR331A0159B** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **PURUSHOTTAM KHANDELWAL S/O RIKHIRAM KHANDELWAL , AJAY SIGI S/O TARACHAND SIGI** पिता/पति श्री/श्रीमती ..... के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SMT. NAMRATA TIWARI** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O SHIRISH TIWAR** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./19141/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2025
रायपुर, दिनांक 19-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19141
वार्ड का नाम-30- शंकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 30 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR331A0159A** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **MOHAN PARAKH S/O DHEVARCHAND PARAKH , AYUSSSH SADANI S/O VINOD SADANI** पिता/पति श्री/श्रीमती .... के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SMT. NAMRATA TIWARI** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O SHIRISH TIWAR** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./19163 /न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2025
रायपुर दिनांक : 19-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19163
वार्ड का नाम- 27- इंदिरा गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 27 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR737C00100** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **RAJESH YADAV** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O LT. FULSINGH YADAV** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SMT. LAKSHMI YADAV** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O RAJESH YADAV** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./18803/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2025
रायपुर, दिनांक 19-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 18803
वार्ड का नाम- 52 - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 52 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR446J00143** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **PANKAJ SANGAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **T.C.SANGAL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **VISHWA RANJAN PUROHIT** पिता/पति, श्री/श्रीमती **HRISHIKESH PUROHIT** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./18762/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2025
रायपुर, दिनांक 19-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 18762
वार्ड का नाम- 52 - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 52 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR446K0187A** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **RAHUL JAIN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **NIRMAL JAIN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **PRAVEEN MOHNOT JAIN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **PARAS CHAND JAIN** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर गुरूवार 20 मार्च 2025

आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिकाओं के लंबित मांगों को लेकर भारतीय मजदूर संघ ने किया धरना प्रदर्शन

प्रधानमंत्री सहित केंद्रिय वित्त मंत्री के नाम सौंपा ज्ञापन

मांग पत्र के माध्यम से केन्द्र और राज्य सरकार को दी चेतावनी

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)–आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिकाओं के लंबित मांगों को लेकर भारतीय मजदूर संघ ने एक दिवसीय धरना प्रदर्शन किया

जिला मुख्यालय सूरजपुर के रंगमंच मैदान में भारतीय मजदूर संघ ने सैकड़ों आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिकाओं को लेकर विशाल धरना प्रदर्शन किया द्य बता दें कि वर्ष 2025 – 26 के घोषित केंद्रीय बजट से नाखुश बी एम एस द्वारा बीते 10 से 12 फरवरी तक गुवाहाटी में कार्यसमिति की बैठक आयोजित की गई थी जिसमें घोषित बजट के खिलाफ एक प्रस्ताव पारित किया गया था द्य उसी प्रस्ताव के आधार पर अपने 6 सूत्रीय मांगों को लेकर क्क्स्स् ने जिला स्तरीय धरना प्रदर्शन कर विशाल रैली निकाला द्य रैली के दौरान केन्द्रीय बजट को लेकर केंद्र और राज्य सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की गई द्य जिला मुख्यालय के रंगमंच मैदान से निकलकर 2 किलोमीटर पैदल चलते हुए कलेक्टर कार्यालय के मेन गेट पर पहुंचकर प्रधानमंत्री सहित केंद्रिय वित्त मंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा

भारतीय मजदूर संघ संबद्ध आंगनबाड़ी कार्यकर्ता सहायिका संघ के बैनर तले जिले भर से लगभग 500 आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिकाओं ने मानदेय वृद्धि सहित अन्य मांगों को लेकर फिर से अपने आंदोलन को तेज कर दिया है गौरतलब है कि बीते 7 मार्च को आंगनबाड़ी कार्यकर्ता सहायिका संघ छत्तीसगढ़ के सूरजपुर इकाई से 1 हजार से अधिक कार्यकर्ता एवं सहायिकाओं ने अपने सात सूत्रीय मांगों को लेकर धरना प्रदर्शन, और रैली निकालकर मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा था द्य

इधर जानकारों की माने तो बीएमएस संबद्ध आंगनबाड़ी कार्यकर्ता सहायिका संघ द्वारा लगातार हो रहे जिलास्तरीय धरना प्रदर्शन से प्रदेश सरकार पर दबाव बढ़ता जा रहा है द्य

कार्यकर्ता और सहायिका संघ के पदाधिकारियों ने अपने सभी मांगों को जायज ठहराते हुए सरकार को यह चेतावनी दिया कि मांग पूरी न होने की स्थिति में अनिश्चित कालीन हड़ताल पर चले जाएंगे

आने वाले समय में केन्द्र और राज्य सरकार इनकी मांगों को लेकर क्या कदम उठाती है यह तो देखने वाली बात होगी द्य

इस अवसर पर भारतीय मजदूर संघ के संगठन मंत्री और सुरक्षा समिति एस ई सी एल के सदस्य संजय सिंह , बीएमएस जिलाध्यक्ष अमर सिंह,राजेश सिंह जिला मंत्री सालिक राम, जिलाध्यक्ष अमर सिंह सहित प्रदेश कोषाध्यक्ष और जिला महामंत्री श्रीमती चन्दा राजवाड़े, प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती सुमनमति और जिलाध्यक्ष श्याम देवांगन , निर्माणी मजदूर सभा के जिलाध्यक्ष दुहन सिंह और उपाध्यक्ष श्रीमती सुमन मति सहित सैकड़ों की संख्या में कार्यकर्ता एवं सहायिकाएं मौजूद थी।

संक्षिप्त समाचार

एग्रीस्टेक पोर्टल में कृषक पंजीयन के लिए सभी विकासखण्ड में लगाये जा रहे है शिविर

5 दिवसीय शिविर 19 मार्च से 23 मार्च तक

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)–कलेक्टर श्री एस जयवर्धन के निर्देश पर एग्रीस्टेक पोर्टल में कृषक पंजीयन कार्य के लिए जिले के सभी विकास खंडों में 5 दिवसीय शिविर का आयोजन किया जा रहा है। जिसके लिए 19 मार्च से 23 मार्च तक लगने वाले शिविर में 36 स्थानों का चिन्हांकन शिविर हेतु किया गया है। जिसमें लगभग 101 गांवों को कवर किया जाएगा। ज्यादा से ज्यादा से किसानों का पंजीयन किया जा सके इसके लिए 24 नोडल अधिकारी बनाये गए है और शिविर अधिकारी भी नियुक्त किये गए है। इस विषय पर जानकारी देते हुए कलेक्टर द्वारा बताया गया कि कृषक पंजीयन प्रणाली पारदर्शिता को बढ़ावा देने के साथ-साथ कृषि अनुदान, बीमा और अन्य सहायता योजनाओं की सुचारू व्यवस्था सुनिश्चित करेगी। यह प्रणाली किसानों के लिए एक डिजिटल डेटाबेस तैयार करेगी, जिससे उनके कृषि अभिलेखों का डिजिटलीकरण होगा और बार-बार केवाईसी कराने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। गौरतलब है कि इस परियोजना का उद्देश्य पूरे देश में कृषि भू-स्वामियों का एक व्यापक और एकीकृत पंजीकरण तैयार करना है, जिससे सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे पात्र किसानों तक पहुंच सके। कृषक पंजीयन हेतु वांछित दस्तावेज:- बी1 (भू-अधिकार पत्र), खसरा, ऋण पुस्तिका, आधार कार्ड, मोबाइल नंबर के साथ स्वयं, स्थानीय युवा, सीएससी (कॉमन सर्विस सेंटर) पर करा सकते हैं।

मेडिकल कॉलेज अस्पताल में 510 बेड की मिलेगी सुविधा

कोरबा(विश्व परिवार)। कोरबा जिला मेडिकल कॉलेज अस्पताल में बढ़ती मरीजों की संख्या के साथ सुविधाओं के विस्तार की प्रक्रिया जारी है। आईपीडी में मरीजों की संख्या बढने की वजह से बेड कम पड़ रहे हैं। प्रबंधन को मरीजों के इलाज के लिए ट्रामा सेंटर भवन के हॉल में बेड लगाने पड़ रहे हैं। स्थिति यह होती है कि हॉल भी अब कम पडने लगे हैं। इस समस्या को दूर करने के लिए अस्पताल परिसर में 50 बेड वाली नए भवन की स्वीकृति दी है। इसका निर्माण कार्य भी चल रहा है। दो से तीन साल के भीतर अस्पताल में 510 बेड से अधिक हो जाएंगे। मेडिकल कॉलेज अस्पताल के अधीन जिला अस्पताल और ट्रामा सेंटर में मरीजों के इलाज शुरू होने के साथ ही प्रबंधन के पास अब 420 बेड है। अस्पताल में प्रतिदिन लगभग 800 से अधिक ओपीडी (आउट पेंशन डिपार्टमेंट) और आईपीडी (इन पेशेंट डिपार्टमेंट) में रोजाना करीब 80 से अधिक मरीज इलाज कराने के लिए पहुंच रहे हैं। इस कारण जिला अस्पताल और ट्रामा सेंटर के भवन के वार्डों के साथ ही हॉल में भी मरीजों के लिए बेड लगाकर इलाज किए जा रहे हैं। जबकि हॉल से अन्य मरीज के साथ परिजनों की आवाजाही होती है। इससे संक्रमण का खतरा बना रहता है। हालांकि इस समस्या को दूर करने के लिए शासन ने दो नए भवन को स्वीकृति दी है। इसमें शासन ने 50 बेड वाली भवन 16.63 करोड़ रुपए की स्वीकृति दी गई है। निर्माण एजेंसी सीजीएमएस को बनाया गया है। ठेका कंपनी ने अस्पताल परिसर के उद्यान की साफ-सफाई के साथ निर्माण कार्य की प्रक्रिया शुरू कर दी है। हालांकि इस भवन निर्माण के कार्य के लिए अभी दो वर्ष का तक समय लग जाएगा। भवन निर्माण की प्रक्रिया पूरी होने के बाद मरीजों को सुविधा का लाभ मिलेगा। यह भवन निर्माण के बाद प्रबंधन को हैंडओवर के बाद अस्पताल में बेड की संख्या 470 बेड हो जाएगी। इसके अलावा 40 बेड वाली आई हॉस्पिटल की भी स्वीकृति मिली है।

10वीं सामाजिक विज्ञान विषय का परीक्षा हुआ संपन्न

कोरबा(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल रायपुर द्वारा संचालित परीक्षा वर्ष 2025 के अंतर्गत 10वीं की परीक्षा प्रारम्भ हो गया है। जिले में परीक्षा के दौरान अनुचित साधनों पर नियंत्रण लगाने हेतु शिक्षा विभाग द्वारा विभिन्न दलों का गठन कर परीक्षा केंद्रों का औचक निरीक्षण किया जा रहा है। 17 मार्च 2025 को हाई स्कूल के सामाजिक विज्ञान विषय की परीक्षा सम्पन्न हुई। परीक्षा हेतु बच्चों की दर्ज संख्या 13,090 उपस्थित 12690 एवं अनुपस्थित बच्चों की संख्या 400 है। हाई स्कूल परीक्षा हेतु गठित जिला स्तरीय निरीक्षण दल क्र. 1 द्वारा शा.उ.मा.वि. गोढ़ी, शा.उ.मा.वि. भैसमा, शा.उ.मा.वि. तिलकेजा, शा.उ.मा.वि. तुमान, शा.उ.मा.वि. फ्लेगंज का, दल क्र. 2.शा.उ.मा.वि. जमनीपाली, वि.गृह क्र.2 दर्री, सेजेस छुरी, सेजेस कन्या, शा.उ.मा.वि. कटघोरा, आदर्ष कटघोरा का, दल क्र.3. सेजेस कन्या बालको, सेजेस बालको, आदर्ष बालको, शा.उ.मा.वि. अजगरबहार, शा.उ.मा.वि. लेमरू कुल 16 परीक्षा केन्द्रों का निरीक्षण किया गया। सभी परीक्षा केंद्रों में शांतिपूर्वक परीक्षा संचालित हुआ एवं एक भी नकल प्रकरण प्राप्त नहीं हुआ।

डीएलसीसी व डीएलआरसी की तिमाही समीक्षा बैठक संपन्न

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)– सूरजपुर कलेक्टर एस जयवर्धन की अध्यक्षता एवं जिला पंचायत सीईओ श्रीमती कमलेश नंदिनी साहू की उपस्थिति में आज कलेक्टोरेट सभाकक्ष में डीएलसीसी/जिला स्तरीय परामर्शदात्री समिति व डीएलआरसी/जिला स्तरीय पुनरीक्षण समिति की अक्टूबर एवं दिसंबर 2024 तिमाही समीक्षा बैठक संपन्न हुई। बैठक में जमा अग्रिम एवं ऋण जमा अनुपात पर चर्चा की गई। इस दौरान समस्त शासकीय योजनाओं की लक्ष्य प्राप्ति, वार्षिक साख योजना की प्रगति, मुद्रा लोन, पेंशन योजना , पीएम स्वनिधि, किसान क्रेडिट कार्ड के प्रकरण के प्रस्तुति और स्वीकृति, अस्वीकृति एवं वर्तमान स्थिति, किसान क्रेडिट कार्ड, आधार सीडिंग, वर्ष 2024-25 हेतु एनआरएलएम द्वारा आबंटित लक्ष्य एवं प्रगति, अंत्योदय स्वरोजगार योजना , स्टैंडअप योजना, सामाजिक सुरक्षा योजना जैसे पीएमएसबीवाई, पीएम जेजे बी वाई,ए पी वाई , प्रधान मंत्री जनधन योजना ,पीएम एफएम ई योजना की प्रगति की जानकारी ली गई।

कलेक्टर श्री जयवर्धन ने उपस्थित सभी बैंकर्स को कृषि एवं इससे जुड़े क्षेत्रों के प्रकरणों का जल्द से जल्द निराकरण करने को कहा। साथ ही उन्होंने लोगों के हित को देखते हुए शासकीय योजनाओं से संबंधित सभी ऋण प्रकरणों को प्राथमिकता देते हुए स्वीकृत करने को कहा।

इसके अलावा इस दौरान कलेक्टर श्री जयवर्धन ने प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना के तहत विकासखंड रामानुजनगर के बरहोल निवासी महेंद्र राम एवं पंडरी निवासी आरकेसी मनी को उनके परिजनों के मृत्यु पर 02-02 लाख रुपए का चेक प्रदान किया। इस अवसर पर एलडीएम श्री आनंद मिंज, नाबार्ड और आर बी आई के प्रतिनिधि, विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं विभिन्न बैंकों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

देवीपुर नर्सरी में लगी आग सूचना मिलते हैं आग पर पाया गया काबू

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)– अग्निशमन केंद्र सूरजपुर को आगजनी घटना कि जानकारी मिली सूचना मिलते ही ग्राम देवीपुर पी एस सुरजपुर ने आगजनी की सूचना पुलिस कंट्रोल सूरजपुर तत्काल टर्न आउट सी जी 02ए यू 1523आगजनी घटना स्थल के लिए रवाना किया गया आगजनी घटना स्थल पहुच कर टीम द्वारा आग पर काबू पाया गया घटना स्थल पर किसी भी प्रकार का हताहत कि समाचार नहीं है

आबकारी विभाग ने 13.5 कच्ची महुआ मदिरा एवं 75 किग्रा. महुआ लाहन जब्त किया

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)–आबकारी आयुक्त श्रीमती आर संगीता एवं कलेक्टर एस जयवर्धन के निर्देशन व संभागीय उपायुक्त आबकारी विजय सेन शर्मा एवं जिला आबकारी अधिकारी इन्द्रबली सिंह मार्कण्डेय के मार्गदर्शन में आबकारी वृत प्रतापपुर एवं वृत सूरजपुर अंतर्गत 2 गैर जमानती प्रकरण दर्ज किया गया है। ग्राम हर्रा पारा थाना झिलमिली से 6.5 लीटर हाथ भट्टी निर्मित कच्ची महुआ मदिरा एवं परी थाना सूरजपुर से 7 लीटर हाथ भट्टी निर्मित कच्ची महुआ मदिरा एवम 75 किग्रा. महुआ लहान बरामद कर जप्त कर आरोपी के विरुद्ध छत्तीसगढ़ आबकारी अधिनियम की धारा के तहत प्रकरण दर्ज कर दोनों आरोपियो को न्यायिक रिमांड पर जेल दाखिला किया गया।

कार्यवाही में वृत प्रतापपुर/सुरजपुर प्रभारी आबकारी उप निरीक्षक प्रदीप वर्मा, आबकारी मुख्य आरक्षक पारस नाथ राजवाड़े, आबकारी आरक्षक कमलेश्वर राजवाड़े, महिला सैनिक देवेंद्र कुमारी, नगर सैनिक राकेश कुशवाहा, वाहन चालक प्रमोद साहू उपस्थित थे।

मरीजों को मिले बेहतर इलाज, जिला अस्पताल बने आदर्श -बाबू लाल गोयल

गोपाल सिंह विद्रोही

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)–रेड क्रॉस सोसाइटी के नवनिर्वाचित चेयरमैन बाबूलाल अग्रवाल ने जिला चिकित्सालय की स्वास्थ्य सेवाओं को और अधिक प्रभावी बनाने पर जोर दिया है। उन्होंने चर्चा के दौरान कहा कि अस्पताल में आने वाले प्रत्येक मरीज को सभी आवश्यक सुविधाएं सहज रूप से मिलनी चाहिए, ताकि किसी को असुविधा न हो। चिकित्सकों और अस्पताल प्रशासन से मरीजों के प्रति संवेदनशील रहने की अपील की। श्री अग्रवाल ने अस्पताल के चिकित्सकों और स्टाफसे आग्रह किया कि वे मरीजों की सेवा को सर्वोच्च प्राथमिकता दें और हर मरीज को बेहतर उपचार देने के लिए पूरी निष्ठा से कार्य करें। अस्पताल में आने वाले हर व्यक्ति को यह महसूस होना चाहिए कि उसकी देखभाल पूरी गंभीरता और संवेदनशीलता के साथ की जा रही है। दूर-दराज से आने वाले मरीजों के प्रति अधिक संवेदनशीलता बरती जाए, ताकि वे इलाज के अभाव में दर-दर भटकने को मजबूर न हों। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि यह शिकायत बिल्कुल नहीं आनी चाहिए कि किसी मरीज को उचित उपचार न मिलने के कारण प्राइवेट अस्पताल जाने की सलाह दी गई हो। श्री अग्रवाल ने यह भी स्पष्ट किया कि रेड क्रॉस सोसाइटी गरीब, असहाय और जरूरतमंद मरीजों की सहायता के लिए सदैव तैयार रहेगी। संस्था का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि आर्थिक तंगी या संसाधनों की कमी के कारण कोई भी व्यक्ति उपचार से वंचित न रहे। रेड क्रॉस सोसाइटी द्वारा जरूरतमंदों को दवाइयां, चिकित्सा उपकरण, और आवश्यक आर्थिक सहायता प्रदान करने की दिशा में निरंतर प्रयास किए जाएंगे। इसके अलावा, स्वास्थ्य जागरूकता अभियान, ब्लड डोनेशन कैंप और अन्य कल्याणकारी गतिविधियों को भी और अधिक सक्रिय रूप से संचालित किया जाएगा। चेयरमैन बाबूलाल अग्रवाल ने कहा कि जिला चिकित्सालय की सेवाओं को और अधिक सुदृढ़ करने के लिए राज्य सरकार से भी आवश्यक समन्वय किया जाएगा। उन्होंने बताया कि सरकार से सहयोग लेकर अस्पताल में आधुनिक चिकित्सा सुविधाएं विकसित करने और संसाधनों को बढ़ाने का प्रयास किया जाएगा। उनका लक्ष्य है कि सूरजपुर का जिला चिकित्सालय प्रदेश के बेहतरीन अस्पतालों में गिना जाए और यहां की स्वास्थ्य सेवाएं अन्य जिलों के लिए एक मिसाल बनें। उन्होंने आम नागरिकों से भी अपील की कि यदि किसी को चिकित्सालय से संबंधित कोई समस्या हो, तो वे बेझिझक रेड क्रॉस सोसाइटी से संपर्क कर सकते हैं, हर संभव प्रयास किया जाएगा कि मरीजों को बेहतरीन स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं और किसी को भी परेशानी का सामना न करना पड़े।

नशीली पदार्थों के अनाधिकृत विक्रय पर सख्त कार्रवाई की जाएगी – कलेक्टर

मेडिकल दुकानों में अनिवार्य रूप से सीसीटीवी कैमरा लगाए जाएं - पुलिस अधीक्षक श्री सिंह

स्वापक औषधि मनः प्रभावी पदार्थों के नियंत्रण हेतु जिला स्तरीय समन्वय समिति की बैठक

महासमुंद(विश्व परिवार)। स्वापक औषधि मनः प्रभावी पदार्थों के अनाधिकृत व्यवसायियों पर व्यापक और प्रभावी नियंत्रण हेतु जिला स्तरीय समन्वय समिति की बैठक आज यहाँ कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में कलेक्टर श्री विनय कुमार लंगेह की अध्यक्षता में आयोजित हुई। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक श्री आशुतोष सिंह भी मौजूद थे। कलेक्टर श्री लंगेह ने कहा कि ऐसे स्वापक औषधि मनः प्रभावी पदार्थ के अनाधिकृत व्यवसायियों पर कार्रवाई की जाए। उन्होंने कहा कि यह ज़िला ओड़िसा राज्य की सीमा से लगे होने के कारण अनाधिकृत व्यवसायियों द्वारा ऐसे औषधियों के क्रय-विक्रय की संभावना बनी रहती है। पुलिस द्वारा कार्रवाई भी की जाती है। आप भी इस पर नज़र रखे तो अंकुश लगेगा। उन्होंने नगरीय निकायों में कचरा संग्रहण केन्द्रों में विशेष रूप से बायो मेडिकल वेस्ट, सीरिंज या टेबलेट पाए जाने पर तत्काल कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। पुलिस अधीक्षक श्री आशुतोष सिंह ने कहा जिले में स्वापक औषधि मनः प्रभावी पदार्थ के रोकथाम के लिए दवा व्यवसायियों की बैठक लेकर दिशा-निर्देश दें तथा निगरानी की जाए। स्वापक औषधि मनः प्रभावी पदार्थ जो किसी रोग उपचार हेतु दवाईयों की श्रेणी में आते हैं। क्रय-विक्रय पर खाद्य एवं औषधि प्रशासन विभाग द्वारा कड़ी निगरानी रखी जाए एवं उल्लंघन करते पाये जाने पर नियमानुसार कार्रवाई के निर्देश दिए। प्रत्येक मेडिकल दुकानों में सीसीटीवी कैमरा भी अनिवार्य रूप से लगाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि औद्योगिक क्षेत्रों और मैदानी अमलों में भी इस संबंध में विशेष निगरानी रखी जाए। स्कूल, कॉलेजां में भी समन्वय कर जागरूकता अभियान चलाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कोटप्पा एक्ट की कार्रवाई बढ़ाने के निर्देश दिए। पुलिस अधीक्षक ने स्पष्ट निर्देश दिए है कि नशीली पदार्थों के अनाधिकृत विक्रय करते पाए जाने पर सख्त से सख्त कार्रवाई करें। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि जिले में नशीली दवाओं के दुरूपयोग और उसके व्यापार पर सभी कारगर कदम उठाएं। जिले के सीमावर्ती इलाकों में कड़ी नजर रखी जाए। उन्होंने कहा कि ज्यादातर अपराध नशा की वजह से होते है। उन्होंने कहा कि स्वापक औषधि एवं मनः प्रभावी पदार्थ जो किसी रोग उपचार हेतु मेडिसिन के वर्ग में आते है, इसके क्रय-विक्रय पर खाद्य एवं औषधि प्रशासन कड़ी निगरानी रखें। सहायक औषधि नियंत्रक खाद्य एवं औषधि प्रशासन ने इस संबंध में जानकारी दी। बैठक में समिति सदस्य, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, जिला आबकारी अधिकारी, उप संचालक समाज कल्याण, महाप्रबंधक जिला व्यापार एवं उद्योग सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर गुरूवार 20 मार्च 2025

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय

बात टैरिफ से आगे

जब अमेरिका ने अपने यहां बाहरी कंपनियों की पहुंच सीमित या प्रतिबंधित करने की नीति अपना रखी है, भारत के प्रति उसके रुख को मुक्त बाजार की सोच के अनुरूप नहीं कहा जा सकता। बल्कि इसे जोर-जबरदस्ती कहना ज्यादा ठीक होगा। वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल संभवत: इसी महीने दोबारा अमेरिका जाएंगे। यह संकेत है कि उनकी इस हफ्ते खत्म हुई यात्रा कामयाब नहीं रही। खबरों के मुताबिक गोयल आयात शुल्क में कटौती का जो ऑफर लेकर गए थे, उसे अमेरिका ने अपर्याप्त माना। अब वाणिज्य मंत्री नए प्रस्ताव लेकर जाएंगे। संभवत: अमेरिका भारत में टैरिफ की दर शून्य करवाने पर अड़ा हुआ है। वैसे बात अब सिर्फ टैरिफ की नहीं रही है। इसकी पुष्टि वाणिज्य राज्यमंत्री जितिन प्रसाद के लोकसभा में दिए बयान से होती है। प्रसाद ने कहा- 'भारत और अमेरिका टैरिफ और गैर-टैरिफ बाधाओं को घटा कर और आपूर्ति श्रृंखला का एकीकरण कर एक-दूसरे के बाजार में अधिक पहुंच पर ध्यान दे रहे हैं।' प्रसाद ने कहा कि दोनों देश द्विपक्षीय व्यापार समझौते पर बात कर रहे हैं, जिसके इस वर्ष के अंत तक पूरा होने की उम्मीद है। स्पष्टत: अमेरिका ने भारतीय बाजार में पहुंच और अमेरिकी कंपनियों के लिए 'समान धरातल' हासिल करने के तमाम मुद्दों को भारत के सामने रखा है। उसकी व्यापार एजेंसी पहले ही भारत में- खास कर यहां के औषधि उद्योग में- बौद्धिक संपदा अधिकारों के हनन का आरोप लगा चुकी है। इसके अलावा संकेत हैं कि सरकारी खरीद नीति, देशी कंपनियों को संरक्षण, और डब्लूटीओ नियमों के तहत विकासशील देश के नाते भारत को मिले खाद्य सुरक्षा के विशेष अधिकारों के सवाल को भी डॉनल्ड ट्रंप प्रशासन उठा रहा है। संकेत यह भी है कि इन मामलों में अपनी तमाम शर्तों को मनवाने का रुख उसने अपना रखा है। जिस दौर में खुद अमेरिका ने भूमंडलीकरण की प्रक्रिया को पलटने और अपने बाजार में बाहरी कंपनियों की पहुंच सीमित या प्रतिबंधित करने की नीति अपना रखी है, उस समय उसका यह रुख किसी रूप में मुक्त बाजार की सोच के अनुरूप नहीं कहा जा सकता। बल्कि इसे जोर-जबरदस्ती के रूप में देखना ज्यादा ठीक होगा। दुर्भाग्यपूर्ण है कि भारत सरकार ने इस पर अस्पष्ट रुख अपना रखा है। उधर भारत के कारोबारी सिर्फ अपनी खाल बचा लेने की फिराक में जुटे हैं। जाहिर है, भारत के लोगों के लिए यह चिंतित होने का वक्त है।

अमेरिका ने छेड़ा सीमा शुल्क संग्राम

अरुण कुमार

दूसरी बार सत्ता संभालने के बाद कांग्रेस (अमेरिकी संसद) के अपने पहले संबोधन में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने टैरिफ यानी सीमा शुल्क को लेकर अपनी सरकार की मंशा स्पष्ट कर दी। उन्होंने कहा, टैरिफ का मतलब है, अमेरिका को समृद्ध बनाना और यह हमारे देश को 'फिर से महान' बनाएगा। उन्होंने घोषणा की कि जब दूसरे देश दशकों से अमेरिका के खिलाफ टैरिफ का इस्तेमाल कर रहे हैं, तो ऐसा करने की बारी अब अमेरिका की है। बाकायदा भारत का नाम लेकर उन्होंने कहा कि जो देश अमेरिका पर जितना टैरिफ लगाता है, आगामी 2 अप्रैल से हम भी उस पर समान टैरिफ लगाएंगे। इस एलान से उस 'टैरिफ वार' की अब आधिकारिक शुरुआत हो गई है, जिसकी आशंका ट्रंप के सत्तासीन होने के बाद से ही जताई जा रही थी। अमेरिका स्थित चीनी दूतावास ने तो एलान भी कर दिया है कि यदि अमेरिका ऐसी जंग चाहता है, तो चीन अंत तक उससे लड़ने के लिए तैयार है। जाहिर है, इस पूरे घटनाक्रम ने विश्व-व्यवस्था में अनिश्चितता बढ़ा दी है, जिसके कई तरह के नुकसान दूसरे देशों को ही नहीं, खुद अमेरिका को भी हो सकते हैं। सीमा शुल्क बढ़ने से अमेरिका पहुंचने वाले उत्पादों की कीमतें बढ़ जाएंगी। दुनिया में तमाम कारोबार विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के नियमों के तहत होते है, जिसका एक प्रावधान यह भी है कि विकसित देशों के तुलना में आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण कुछ देशों को विशेष रियायत दी जाएगी, ताकि वहां के उद्योगों पर नकारात्मक असर न पड़े। ट्रंप ऐसी राहत पाने वाले देशों को ही 'टैरिफ किंग' कह रहे हैं। अगर 2 अप्रैल से अमेरिकी राष्ट्रपति की घोषणा प्रभावी हो जाती है, तो इससे पूरी दुनिया प्रभावित होगी, क्योंकि डब्ल्यूटीओ का एक नियम यह भी है कि हर देश अपने साथ कारोबार करने वाले सभी मुल्कों पर समान अनुपात में सीमा शुल्क लगाएगा। यूरोप इससे कहीं ज्यादा प्रभावित होगा, क्योंकि अभी वह यूक्रेन संकट में उलझा हुआ है। इस दोतरफा मुश्किल के कारण वहां उथल-पुथल बढ़ जाएगी। इन सबसे अमेरिका में लोगों की खरीदारी की क्षमता प्रभावित होगी, जिससे मांग में कमी आ सकती है। इसका असर उत्पादन पर पड़ेगा और अंतत: महंगाई बढ़ जाएगी। कुछ यही स्थिति अन्य देशों में पैदा होगी। सभी जगह निम्न आय वाले लोग खरीदारी से बचने का प्रयास करेंगे, जिससे वहां के उत्पादन और निवेश पर नकारात्मक असर पड़ेगा। इससे रोजगार में भी कमी आएगी। राष्ट्रपति ट्रंप उम्मीद जता रहे हैं कि उद्योग अमेरिका की ओर फिर से लौट जाएंगे। मगर यह तुरंत नहीं होने वाला। इसमें लंबा वक्त लगेगा और तब तक अर्थव्यवस्था के गिरने से विकास दर में गिरावट आ जाएगी। यानी, ट्रंप अमेरिका को फिर से महान बनाने का जो वायदा कर रहे हैं, स्थिति इसके बिल्कुल विपरीत हो सकती है। इसका वहां की राजनीति पर भी असर पड़ेगा, क्योंकि अगले डेढ़ साल में मध्यावधि चुनाव होने वाले हैं। ऐसे में, यदि सरकारी सेवाओं में कतरब्योंत होती है और रोजगार परिदृश्य पर असर पड़ता है, तो ट्रंप की लोकप्रियता प्रभावित हो सकती है। इस पूरे घटनाक्रम का असर भूमंडलीकरण और डॉलर पर भी पड़ेगा। अभी भले ही राष्ट्रपति ट्रंप अमेरिकी हितों की वकालत कर रहे हैं, लेकिन भूमंडलीकृत दुनिया में यदि साझा हितों की अनदेखी की गई, तो अमेरिका को भी नुकसान हो सकता है। मुमकिन है कि बाकी देश उन उत्पादों का आपस में व्यापार बढ़ा सकते हैं, जो अभी वे अमेरिका के साथ कर रहे हैं। अगर यूरोप, कनाडा, मैक्सिको, चीन, भारत जैसे तमाम राष्ट्र एक-दूसरे के खिलाफ टैरिफ पहले की तरह ही रखें, लेकिन आपसी कारोबार में तेजी ले आएं, तो अमेरिका को किनारे किया जा सकता है। इससे दुनिया गैर-भूमंडलीकरण और गैर-डॉलर की ओर बढ़ जाएगी, जिससे अमेरिका का महत्व घटेगा। इससे विकसित देशों का दबदबा भी कम हो सकता है। ट्रंप के इस कदम से मंदी का खतरा बढ़ गया है। अगर कीमतों में उछाल आने से विकास दर प्रभावित होती है, तो अमेरिका में मंदी आ सकती है। जर्मनी दो साल से इससे जूझ रहा है, जबकि यूरोप में यूक्रेन संकट के कारण पहले से मंदी की आशंका बनी हुई है। इस सूरतेहाल में तो वैश्विक मंदी मुहाने पर खड़ी जान पड़ती है। जाहिर है, भारत भी इन सबसे अछूता नहीं रहेगा। क्योंकि अगर अमेरिका समान रूप से हम पर सीमा शुल्क लगाता है, तो हमारे निर्यात पर इसका असर पड़ेगा। उसे निर्यात होने वाली चीजों का उत्पादन प्रभावित होगा। आपूर्ति-श्रृंखला में होने वाली इस रुकावट की सबसे अधिक मार गरीब तबकों पर पड़ेगी। जब महंगाई बढ़ती है, तो निम्न आय वर्ग के लोग खरीदारी में अरुचि दिखाने लगते हैं, जिसका असर मांग पर पड़ता है। यानी, यहां एक ऐसी स्थिति पैदा हो सकती है, जिसमें अर्थव्यवस्था में गिरावट भी होगी और महंगाई भी बढ़ेगी। यह अनिश्चितता हमारे शेयर बाजार को भी प्रभावित करेगी। बेशक, करीब 6,000 बड़ी कंपनियों में से महज 1,500 ही बाजार में सक्रिय हैं और सूक्ष्म व लघु उद्योगों की यहां कोई हिस्सेदारी नहीं है, फिर भी जब शेयर बाजार बिगड़ता है, तो निवेश के माहौल पर नकारात्मक असर पड़ता है। अभी बाजार में इसलिए गिरावट आई है, क्योंकि विदेशी निवेशक अपना पैसा निकाल रहे हैं। इसके कारण स्थानीय लोग भी बाजार से दूरी बनाने लगे हैं। चूंकि भारतीय शेयर बाजार में उथल-पुथल मची है, इसलिए लोग वहां पैसा लगाने लगे हैं, जहां से उनको निश्चिंतता मिल सके।जाहिर है, इस पूरे घटनाक्रम ने विश्व-व्यवस्था में अनिश्चितता बढ़ा दी है, जिसके कई तरह के नुकसान दूसरे देशों को ही नहीं, खुद अमेरिका को भी हो सकते हैं। सीमा शुल्क बढ़ने से अमेरिका पहुंचने वाले उत्पादों की कीमतें बढ़ जाएंगी। दुनिया में तमाम कारोबार विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के नियमों के तहत होते है, जिसका एक प्रावधान यह भी है कि विकसित देशों के तुलना में आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण कुछ देशों को विशेष रियायत दी जाएगी, ताकि वहां के उद्योगों पर नकारात्मक असर न पड़े। ट्रंप ऐसी राहत पाने वाले देशों को ही 'टैरिफ किंग' कह रहे हैं। अगर 2 अप्रैल से अमेरिकी राष्ट्रपति की घोषणा प्रभावी हो जाती है, तो इससे पूरी दुनिया प्रभावित होगी, क्योंकि डब्ल्यूटीओ का एक नियम यह भी है कि हर देश अपने साथ कारोबार करने वाले सभी मुल्कों पर समान अनुपात में सीमा शुल्क लगाएगा। यूरोप इससे कहीं ज्यादा प्रभावित होगा, क्योंकि अभी वह यूक्रेन संकट में उलझा हुआ है। इस दोतरफा मुश्किल के कारण वहां उथल-पुथल बढ़ जाएगी। इस लिहाज से सोना व डॉलर ही उनके मुफीद है और वे इसी में निवेश कर रहे हैं। निवेशकों के यूं बाहर जाने से हमारी विकास दर भी प्रभावित होगी। कुल मिलाकर, निवेश, लोगों की क्रय-क्षमता, निर्यात, आपूर्ति-श्रृंखला आदि सब पर इस पूरे घटनाक्रम का असर पड़ना तय है। इससे रुपये पर भी दबाव बढ़ेगा, जिससे महंगाई बढ़ सकती है, क्योंकि रुपया गिरने से उत्पादों के आयात पर हमें ज्यादा पैसे चुकाने होंगे, जिसकी भरपायी घरेलू बाजार में मूल्य-वृद्धि से की जाती है। इस परिस्थिति में अच्छा यही होगा कि अनौपचारिक क्षेत्र को मजबूत बनाया जाए। मांग की स्थिति बनाए रखने में यदि हम सफल रहे, तो अर्थव्यवस्था में गिरावट थामी जा सकेगी।

आलेख

क्रोनी खरबपतियों का गुर्दा!

हरिशंकर व्यास

भारत में ही इस तरह सोचना होता है तो सोचें, पैसा व्यक्ति को निडर बनाता है या कायर? पैसा ईमानदारी बनवाता है या बेईमानी? पैसे की अमीरी में प्रतिस्पर्धा का हौसला बनना चाहिए या हारने का डर? पैसा संतोष पैदा करता है या भूखा बनाता है? पैसे से दिमाग सत्य में बेधड़क होता है या झूठ की तूताड़ी बजाता है? इन सवालों के जवाब मनुष्यों की नस्ल, देश के सभ्य या असभ्य होने की प्रकृति पर निर्भर है! मगर भारत का, उसके सर्वकालिक जगत सेठो, अंबानी, अडानी, मित्तल आदि नामों के खरबपतियों का एक ही इतिहास है। और वह अमिट है। वह बताता है कि पैसा भारत में भ्रष्टाचार, लूट और भयाकुलता तीनों की त्रिवेणी है। नतीजतन पैसा भारत में भीरूता बनाता है। लूट बनवाता है और साथ ही कायर व अप्रतिस्पर्धी भी। इसलिए अधीनता, गुलामी और एजेंटगिरी गारंटीशुदा है। गंभीरता से विचारें कि अंबानी, अडानी, मित्तल आदि धन्नासेठों के देश और विदेश में क्या मायने हैं? मेरा मानना है दुनिया में कही भी ऐसे धनपति नहीं हैं, जैसे भारत के हैं! ये भारत के कुलीन-अमीर वर्ग के वे प्रतीक हैं, जिस पर कभी लालकृष्ण आडवाणी ने पत्रकारों के संदर्भ में बोला था कि झुकने को कहा था, लेकिन वे रेंगने लगे। पर पत्रकार तो भारत का दीन-हीन बेचारा नारद है। उन खरबपतियों पर सोचें, जो शेर को पालतू बना कर प्रधानमंत्री से शेर के पिल्लों को दूध पिलवा बहादुरी के तराने बनवाते हैं! फिर मालूम होता है कि वे खुद और उनके साथ देश ही इलॉन मस्क के चरणों में लोटपोट है। बहुत खराब! बहुत क्षोभजनक! वह इलॉन मस्क, जिसकी इंटरनेट सेवा प्रदाता कंपनी स्टारलिंक के खिलाफ मुकेश अंबानी, सुनील मित्तल अर्थात रिलायंस जियो और एयरटेल ने साझा तौर पर मोदी सरकार के आगे नियमों, कायदों, सैद्धांतिक आधारों पर दलीलें दीं। मस्क की कंपनी के भारत प्रवेश को रोके रखा। मगर गुजरे सप्ताह रातों रात इन्होंने इलॉन मस्क की कंपनी के साथ मार्केटिंग सौदे कर डाले! उसके वेंडर हो गए! भारत की ये दो संचार कंपनियां अपनी ग्राहक संख्या, भारत के विशाल बाजार पर अपनी मोनोपॉली में अपने आपको शेर खां समझती थीं। जियो के मालिक मुकेश अंबानी इलॉन मस्क को रोकने के लिए यहां तक हवाबाजी कर रहे थे कि रिलायंस भारत में खुद की सेटेलाइट आधारित इंटरनेट सेवा शुरू करेगा। सरकार को नीलामी से ही अंतरिक्ष स्पेक्ट्रम के आवंटन की नीति पर टिके रहना चाहिए। ध्यान रहे दो वर्षों से इलॉन मस्क की कंपनी भारत में उपग्रह आधारित इंटरनेट सेवा शुरू करने की अनुमति के लिए हाथ-पांव मार रही थी। लेकिन अंबानी और मित्तल ने कंपीटिशन के डर में, भारत के लोगों को घटिया सर्विस का गुलाम बनाए रखने, बेइंतहां मुनाफा कमाते रहने की भूख, देश की आत्मनिर्भरता के झूठ से इलॉन मस्क की कंपनी की एंट्री पर रोड़े अटका रखे थे। और अब क्या सच्चाई है? भारत के ये क्रोनी पूंजीपति इलॉन मस्क की कंपनी का वेलकम ही नहीं कर रहे हैं, बल्कि रातों रात स्टारलिंक कंपनी से करार करके उसके मार्केटिंग एजेंट हो गए हैं! तभी सोचें, भारत के इन अरबपतियों की दशा पर? इन्हें इलॉन मस्क की कंपनी से अपने बाजार, अपने अखाड़े में लड़ना चाहिए था, कंपीटिशन दे कर अमेरिकी कंपनी को नानी याद करानी थी या उससे कमीशनखोरी का करार कर उसकी सेवा की बिक्री करवाने का धंधा बनाना था? जिन दो भारतीय कंपनियों ने संचार में वर्चस्व से अपने को शेर खां बनाया है उनमें यह निडरता, यह ताकत क्यों नहीं जो विदेशी कंपनी से अपने अखाड़े में लड़ने, उसे हराने के लिए कमर कसते! क्या प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आदेश दिया कि लड़ना नहीं उससे सौदा पटाना है? कुल मिला कर वही कहानी है, वही सत्य है जो ईस्ट इंडिया कंपनी, चाइनीज कंपनियों के आगे भारत के धनपतियों, व्यापारी, उद्योगपतियों का था और है। भारत में सबको सिर्फ आसान पैसा चाहिए। भारत में हाथ काले करके, क़ड़ी मेहनत और सच्ची-अच्छी सेवा-सामान देने के बजाय केवल और केवल जैसे-तैसे पैसा कमाने का नशा है, संस्कार और शिक्षा है। मौके, स्थितियों का फायदा उठाना अंबानी-अडानी छाप व्यापारियों का इसलिए डीएनए है क्योंकि पैसे कमाने का यही आसान तरीका है। इलॉन मस्क को पहले आने मत दो और यदि आए तो उसके एजेंट, वेंडर बन जाओ। उससे साझा करके उसे समझाओ कि वह दुनिया में बाकी जगह भले सस्ती-अच्छी सेवा दे लेकिन भारत के बाजार में महंगी सेवा देनी है। ताकि तुम भी कमाओ और हम भी कमाएं। ग्राहकों को सर्विस या उनकी शिकायतों जैसे काम हमारी कंपनी संभाल लेगी! जाहिर है धंधे की इस तरकीब में भारत में संचार वैसा ही घटिया और महंगा बना रहेगा जैसा शुरू से आज तक है।

होली के रंग में राजनीति की भंग

अजीत द्विवेदी

भारत में जब कोई किसी को कहता है कि 'ज्यादा राजनीति मत कीजिए' तो इसका मतलब होता है कि गलत काम मत कीजिए, साजिश या धोखा मत कीजिए, भड़काऊ काम मत कीजिए या लोगों को लड़वाइए मत। सोचें, भारत में राजनीति शब्द कैसे नकारात्मक अर्थों में रूढ़ हो गया है! इस राजनीति का शिकार भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था बन रही है तो समाज व्यवस्था और धार्मिक व निजी व्यवहार और तीज त्योहार भी बन रहे हैं। यह अचानक नहीं हुआ है कि इस साल होली से पहले सामाजिक स्तर पर इतना विभाजन दिख रहा है। यहां तक पहुंचने की शुरुआत कई साल पहले हो गई थी। जब सोशल मीडिया में पानी बचाने की सलाह देने वालों को गालियां दी जाने लगी थी, रंग व गुलाल को सनातन धर्म से जोड़ा जाने लगा था और यह व्हाटअबाउटरी शुरू हुई थी कि मुस्लिम त्योहारों पर क्यों नहीं बोलते हो, तभी यह सुनिश्चित कर दिया गया था कि आने वाले दिनों में हमारे त्योहार प्यार, मोहब्बत, भाईचारे, धार्मिकता, आध्यात्मिकता की बजाय नफरत और जहालत का शिकार होने वाले हैं। अब कोई त्योहार इससे अछूता नहीं है क्योंकि सब पर राजनीति की छाया पड़ गई है। अनेक आशावादी लोग कह रहे हैं कि देश के लोग नफरत की राजनीति करने वाले और धर्म के आधार पर समाज को बांटने वाले लोगों को पहचान गए हैं और उनकी साजिशों को विफल कर देंगे। लेकिन यह विशुद्ध सदिच्छा है, जिसका जमीनी वास्तविकताओं से कोई मतलब नहीं है। पहली बात तो यह है कि पूरे कुएं में राजनीति की भंग पड़ी है और दूसरी बात यह है कि सामाजिक सद्भाव बिगाड़ने या प्यार, मोहब्बत और भाईचारे के उत्सव को या किसी धार्मिक या राष्ट्रवादी आयोजन को नफरत या हिंसा में बदल देने के लिए सभी 140 करोड़ लोगों की जरुरत नहीं होती है। थोड़े से मोटिवेटेड लोग, जो किसी व्यक्ति या किसी पार्टी या किसी संगठन के लिए काम करते हैं वे अपने से थोड़े ज्यादा लोगों के समूह को झूठी, सच्ची भड़काऊ बातों से उकसा सकते हैं और उसके बाद घटनाक्रम पर किसी का जोर नहीं रह जाएगा। ऐसी घटना देश के किसी भी कोने में हो सकती है, जिसका असर पूरे देश के लोगों की मन:स्थिति पर पड़ेगा। मिसाल के तौर पर भारत के चैंपियंस ट्रॉफी जीतने के बाद मध्य प्रदेश के महू में हुई घटना को देख सकते हैं। भारत की जीत की खुशी में पूरा देश जश्न मना रहा था लेकिन एक छोटी सी जगह पर, छोटे से समूह के लोगों की झड़प ने धर्म और संप्रदाय के आधार पर विभाजन को राष्ट्रीय बना दिया। असल में निहित स्वार्थों की सांप्रदायिक राजनीति धीरे धीरे लोगों की सोचने, समझने की क्षमता को, सहनशीलता को और उत्सव की मूल भावना की अभिव्यक्ति को कम करती जा रही है। सवाल है कि इसके लिए किसको दोष दिया जाए? क्या सिर्फ भारतीय जनता पार्टी और उसकी पिछले एक दशक की राजनीति इसके लिए दोषी है या स्वाभाविक रूप से नागरिकों में सांप्रदायिक कट्टरता बढ़ रही है, जिससे सहिष्णुता घटती जा रही है और एक साथ मिल कर सद्भाव के साथ रहने और आपस में मिल कर तीज त्योहार या उत्सव मनाने की स्वाभाविक प्रवृत्ति खत्म होती जा रही है? यह वास्तविकता है कि सांप्रदायिक कट्टरता भारत के समाज में बहुत गहरे जड़ जमाती जा रही है और इसके लिए सिर्फ भारतीय जनता पार्टी की राजनीति जिम्मेदार नहीं है। उसने तो अपने राजनीतिक लाभ के लिए धर्म के आधार पर विभाजन कराने का प्रयास किया। यह प्रयास भाजपा और उससे पहले भारतीय जनसंघ की ओर से भी किए ही जा रहे थे। लेकिन तब उसमें कामयाबी नहीं मिल पाई थी। पहले कामयाबी क्यों नहीं मिली और अब क्यों मिल गई, इसको लेकर दो तरह की थ्योरी है। एक थ्योरी भाजपा की है, जिसका मानना है कि पहले हिंदू एकतरफा तरीके से बरदाश्त करता रहा। यानी जो सद्भाव समाज में दिख रहा था वह हिंदू के सहिष्णु और उदार होने की वजह से था। इसका मतलब है कि हिंदुओं ने अब सहिष्णुता और उदारता छोड़ दी है तो टकराव बढ़ गया है। दूसरी थ्योरी सेकुलर बिरादरी की है, जिसके मुताबिक सत्ता तंत्र का इस्तेमाल करके राजनीतिक लाभ के लिए व्यवस्थित तरीके से सामाजिक सद्भाव बिगाड़ा जा रहा है। उनके मुताबिक इसके पीछे बड़ी साजिश है। इन दोनों में कुछ कुछ सचाई हो सकती है। इसके बीच एक तीसरी थ्योरी यह बनती है कि पहले सामाजिक विभाजन की कोशिशें इसलिए कामयाब नहीं हो पाती थीं क्योंकि जो लोग इसके प्रयास करते थे वे भी चुनावों के समय ही इसका प्रयास करते थे। यानी विभाजन के प्रयास में निरंतरता और सांस्थायिकता नहीं थी। दूसरे, शहरीकरण बहुत कम था और उपभोक्ता संस्कृति का विकास नहीं हुआ था। इसकी वजह से मनुष्य एकाकी या अरक्षित या बाजार पर निर्भर नहीं था। उसके अंदर सामूहिकता का भाव स्वाभाविक रूप से मौजूद था, जिससे विभाजनकारी और भड़काऊ बातों से उसे प्रभावित करना मुश्किल था। व्यक्ति पर परिवार, समूह और समाज का असर ज्यादा था। तीसरे, आजादी के बाद कई दशकों तक आजादी की लड़ाई के मूल्य जीवित थे। इसके अलावा सामाजिक स्पेस में ईमानदारी, नैतिकता, समझदारी जैसे मूल्य मौजूद थे। चाहे कारोबारी हों या फिल्म व खेल जगत के लोग हों या सामाजिक कार्यकर्ता हों या नौकरीपेशा लोग हों या मीडिया के लोग हों, सबको अपनी जवाबदेही का अहसास था। किसी भी घटना पर तत्काल समझदारी वाली बातें सुनवाई देने लगती थीं। आग में घी डालने की बजाय आग पर पानी डालने वाले लोग ज्यादा सामने आते थे। आज यह स्थिति पूरी तरह से उलट गई है।

तन और मन से मजबूत भारतीय कप्तान

नीरज बधवार

यह सही है कि खेलों की दुनिया में फिटनेस को सफलता की कुंजी माना जाता है, पर कुछ खेल ऐसे भी हैं, जहां भारी शरीर वरदान बन जाता है। सूमो कुश्ती, भारोत्तोलन, शॉट पुट, डिस्कस थ्रो जैसे खेलों की गिनती इनमें की जा सकती है। यहां तक कि रग्बी और फुटबॉल में भी कुछ पोजीशन पर खिलाड़ियों का भारी शरीर काम का माना जाता है। क्रिकेट भी कुछ अपवादों के साथ ऐसा ही एक खेल है। यहां कई ऐसे खिलाड़ी हुए हैं, जिन्होंने भारी शरीर के बावजूद शानदार प्रदर्शन किया है। मोटे होने के बाद भी इंजमाम-उल-हक (पाकिस्तान), अर्जुन रणतुंगा (श्रीलंका), रकीम कॉर्नवाल (वेस्ट इंडीज), ड्वेन लेवरॉक (बरमुडा), वारविक आर्मस्ट्रांग, डेविड बून (ऑस्ट्रेलिया) जैसे खिलाड़ियों ने अपने प्रदर्शन से अमिट छाप छोड़ी। इन क्रिकेटरों ने साबित किया है कि सही तकनीक, खेल की समझ और मेहनत से भारी शरीर वाले खिलाड़ी भी इतिहास रच सकते हैं। रोहित शर्मा इसी श्रेणी के खिलाड़ी हैं। भले ही, भारतीय कप्तान को उनके शरीर के लिए अभी कोसा जा रहा हो, पर वह सफेद गेंद क्रिकेट में सबसे बेहतरीन कप्तानों में से एक हैं। उन्होंने न केवल टीम को एकजुट रखा है, बल्कि रणनीतिक रूप से शानदार फैसले लेकर टीम को आईसीसी के चार अलग-अलग टूर्नामेंट के फाइनल में पहुंचाया, जो एक विश्व रिकॉर्ड है। एक बल्लेबाज के रूप में उनकी तकनीक और टाइमिंग कमाल की है, जिसके कारण उनको 'हिटमैन' का खिताब मिला हुआ है। आज की तारीख में वह वनडे व टी-20 क्रिकेट में खतरनाक सलामी बल्लेबाजों में से एक माने जाते हैं। उनके नाम एकदिवसीय क्रिकेट की एक ही पारी में 264 रन बनाने का विश्व रिकॉर्ड भी दर्ज है। इस फॉर्मेट में उन्होंने तीन दोहरे शतक लगाने का रिकॉर्ड भी बनाया है। एक वनडे पारी में सर्वाधिक 55 चौकों का विश्व रिकॉर्ड भी उन्हीं के पास है। 2019 वनडे वर्ल्ड कप में रोहित ने नौ मैचों में पांच शतकों की मदद से 648 रन बनाए थे, यह भी विश्व रिकॉर्ड है। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सर्वाधिक छक्के लगाने का विश्व रिकॉर्ड भी उन्हीं के नाम है। ये तमाम आंकड़े रोहित की फुर्ती, शॉट खेलने की उनकी क्षमता और लंबी पारियां खेलने की ताकत का संकेत देते हैं। ऐसे में, कांग्रेस प्रवक्ता का गैर-जिम्मेदाराना बयान खेल व खिलाड़ियों के प्रति उनकी नासमझी और

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का बेजा लाभ उठाकर व्यक्त की गई कुंठा के सिवा और कुछ नहीं। इसका तथ्यों से कोई सरोकार नहीं है। रोहित शर्मा थोड़े हेल्दी होने के बावजूद शरीर से फिट और मन से हिट हैं। जिन रोहित शर्मा पर पिछले कुछ वर्षों से वड़ा पाव वाले चुटकुले चल रहे हैं, उनको मोटा कहे जाने पर बवाल मचा हुआ है! कहा जा रहा है कि उनकी बॉडी शेमिंग की गई। अरे, वह कोई सामान्य महिला हैं कि जिनको मोटा कह दिया गया, तो बॉडी शेमिंग हो गई? वह हमारे देश के सबसे लोकप्रिय और बड़े खेल में टीम के कप्तान हैं। जाहिर सी बात है, वह एक एथलीट हैं और खुद को फिट रखना उनका काम है। लिहाजा, यदि वह ओवरवेट, यानी अधिक वजन वाले खिलाड़ी हैं, तो कहीं न कहीं यह उनकी गैर-जिम्मेदारी है कि वह अपनी फिटनेस को संभाल नहीं सके। भारतीय क्रिकेट के दिग्गज खिलाड़ी कपिल देव ने भी तो कहा था कि अगर कप्तान होकर रोहित शर्मा खुद को फिट नहीं रखते, तो यह सचमुच शर्म की बात है। और तो और, रोहित शर्मा की फिटनेस को लेकर यही बात पूर्व दक्षिण अफ्रीकी खिलाड़ी डेरिल कलिनन ने भी ऑस्ट्रेलिया दौरे के समय कही थी। अगर किसी खिलाड़ी के मोटापे पर सवाल उठाना उसकी बॉडी शेमिंग है, तो इस तर्क के मुताबिक हमें पुलिस वालों के मोटापे पर भी सवाल नहीं उठाने चाहिए! किसी पुलिस वाले के मोटापे पर इसलिए सवाल उठते हैं, क्योंकि वह खोए की दुकान पर बैठने वाला कोई लाला नहीं। वह एक पुलिस वाला है और अगर वह मोटा होगा, तो भागते हुए किसी अपराधी को पकड़ नहीं पाएगा। इसलिए, खुद को फिट रखना उसकी जिम्मेदारी है। मुझे याद आता है कि एक बार विराट कोहली ने बहुत अच्छे से बताया था कि किस तरह उनकी स्ट्रेंथ ट्रेनिंग और रनिंग उनको सेकंड का जो सौवां हिस्सा फालतू देती है, उसी की वजह से वह एक रन को दो में बदल पाते हैं। मेलबर्न के मैच में, हारिस रऊफ को विराट ने 19वें ओवर में जो स्ट्रेट सिक्स लगाया था, वह छक्का कोई तब तक नहीं लगा सकता, जब तक कि उसकी बैक में बहुत जान न हो। तभी तो विराट के उस छक्के को क्रिकेट इतिहास का 'वंडर शॉट' कहा जाता है। आज, विराट कोहली की उम्र होने के बावजूद रवि शास्त्री जैसे विशेषज्ञ भी क्यों कहते हैं कि विराट की जो फिटनेस है, उसमें वह अभी पांच साल और क्रिकेट खेल सकते हैं, लेकिन यही बात रोहित शर्मा के लिए नहीं कही जा सकती? मतलब, जो बात सारी दुनिया को पता है और जिसका मजाक क्रिकेट प्रशंसक हमेशा से उड़ाते आए हैं और जो क्रिकेटिंग लॉजिक से भी सही है।

संक्षिप्त समाचार

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय से प्रसिद्ध कथावाचक देवी चित्रलेखा की सौजन्य भेंट

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय से आज उनके निवास कार्यालय में सुविख्यात कथावाचक देवी चित्रलेखा ने सौजन्य भेंट की। मुख्यमंत्री श्री साय ने उन्हें शॉल एवं श्रीफल भेंटकर आत्मीय सम्मान प्रदान किया। प्रेरक कथाओं और भक्ति प्रवचनों के लिए विख्यात देवी चित्रलेखा ने मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में राज्य में हो रहे विकास कार्यों की सराहना की और जनकल्याण के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित कीं। मुख्यमंत्री श्री साय ने देवी चित्रलेखा के आध्यात्मिक एवं सामाजिक योगदान की प्रशंसा करते हुए कहा कि उनके विचार और प्रवचन समाज को जागरूक करने के साथ नैतिक मूल्यों को भी सशक्त करते हैं। उन्होंने देवी चित्रलेखा जी की भूमिका को समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने वाली बताते हुए कहा कि उनके प्रयास जनमानस के लिए प्रेरणादायी हैं। इस अवसर पर दोनों के बीच आध्यात्मिक चेतना के प्रसार, सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा और समाज में समरसता को प्रोत्साहित करने जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर सार्थक चर्चा हुई।

अखिल भारतीय ज्योतिष आचार्य परिषद आठवीं अधिवेशन में सम्मानित हुए कवि हृदय विकर्ष जी शास्त्री

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। अखिल भारतीय ज्योतिष आचार्य परिषद का आठवां अधिवेशन परम पूज्य बाल योगी आचार्य 108 श्री सौभाग्य सागर जी मुनिराज संसंघ के पवन सानिध्य में दिल्ली स्थित ग्रीन पार्क के श्री पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर में संपन्न हुआ जहां पर देश के विभिन्न प्रांतो और विभिन्न नगरों से अनेक विद्वानों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। जिसमें देश के जैन ज्योतिष आचार्य वास्तुविद, प्रतिष्ठाचार्य, विद्वान सम्मिलित हुए। आचार्य संघ और सभी विद्वानों के मध्य युवा विद्वान कवि हृदय विकर्ष जी शास्त्री जी द्वारा अपने अनूठी काव्य शैली में ज्योतिष विज्ञान का जैन शासन में क्या महत्व है और कौन से तीर्थंकर की आराधना से कौन से ग्रह की बाधा को दूर की जा सकती है यह बात को सबके समक्ष रखा गया। जिसको सुनकर लोग मंत्र मुग्ध हो गए। और तालिया की गड़गड़ाहट से संपूर्ण सदन गूंजयमान हो गया। इसके बाद आचार्य संघ और देश के मूर्धन्य विद्वानों के मध्य कवि हृदय विकर्ष शास्त्री जी का मोमेंट और पटका आदि पहनकर विशेष बहुमान सम्मान किया गया। और आचार्य श्री 108 सौभाग्य सागर जी द्वारा विशेष मंगल आशीर्वाद दिया गया। इस कार्यक्रम मैं जैन जगत के अंतरराष्ट्रीय ज्योतिष संरक्षक टीकम चंद्र जैन, ज्योतिषआचार्य अध्यक्ष रवि जैन गुरुजी महामंत्री हुकुम चंद्र जैन ग्वालियर संयोजक संदीप जैन प्रचारक दीपक जैन शास्त्री दिल्ली आदि देश के नामचीन विद्वान सम्मिलित रहे।

46 जैन आर्यिकाओं की ऐतिहासिक भव्य आगवानी

भाटापारा (विश्व परिवार)। 105 श्री दृढ़मति माताजी सहित 46 माताजी के विशाल संघ का भव्य आगमन बड़े ही हर्षोल्लास के साथ नगर में हुआ। एक कतारबद्ध माताजी जब नगर मार्ग पर एक साथ विहार कर रही थी ऐसा लग रहा था मानो पूरा स्वर्ग धरा पर उतर आया हो। नगर के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ जब इतने बड़े विशाल संघ की अगवानी एक साथ की गई हो, इस ऐतिहासिक पल को हर कोई अपनी आंखों में संजोना चाहता था, संपूर्ण जैन समाज गुरु माताओं की आगवानी के लिए लालायित थी।

जैन समाज अध्यक्ष सवाई सिंघई पीयूष जैन ने जानकारी देते हुए बताया कि डोंगरगढ़ में पूज्यआचार्य श्री विद्यासागर जी के समाधि स्थल से माताजी के संघ ने जैन धर्म की अलख जगाते हुए राजनांदगांव, दुर्ग, भिलाई, रायपुर, नेवरा होते हुए भाटापारा में पदार्पण किया।

जैन समाज के पदाधिकारी एवं श्रावकों ने विहार पर विभिन्न नगर में श्रीफल अर्पित कर भाटापारा आने हेतु निवेदन किया, जिसे माताजी ने स्वीकार कर अपने चरण इस धरा पर रखें।

स. सिं.श्री अशोक पियूष रेखा बैग परिवार ने निवास के सामने माताजी का पाद प्रक्षालन का सौभाग्य प्राप्त किया। माताजी ने भाटापारा पहुंचते ही मंदिर में अतिशकरी मूलनायक भगवान महावीर स्वामी जी के दर्शन कर उपस्थित सभी भक्तों को अपना वात्सल्य पूर्ण आशीर्वाद प्रदान किया।तत्पश्चात माताजी की आहारचार्य हेतु मंदिर के समक्ष सभी श्रावक श्राविकाओं ने हे माताजी वन्दामि वन्दामि के जयघोष से की और पूरा वातावरण धर्ममय हो गया।भाटापारा नगर में प्रथम बार इतनी संख्या में गुरु माताओं का आगमन हुआ था जिसे देखने पूरा जन सैलाब उमड़ पड़ा।

भक्तिपूर्वक पूज्य माताजी श्री गुरमति जी का पड़गाहन का सौभाग्य कमेटी के उपाध्यक्ष विनोद मोदी परिवार को प्राप्त हुआ तथा अन्य सभी माताजी की आहार चर्या निरंतराय संपन्न हुई। पूज्य माता जी के दर्शन करने के लिए नगर पालिका अध्यक्ष भाई अश्विनी शर्मा एवं पार्षद श्रेणीक गोलछा ने भी श्रीफल अर्पित कर नगर की सुख समृद्धि हेतु कामना की एवं आशीर्वाद प्राप्त किया।

आर्यिका माताजीके दर्शन करने एवं अपने नगर पधारने हेतु निवेदन करने के लिए बिलासपुर, अकलतरा, बलौदाबाजार, से भी श्रावक गण उपस्थित हुए तथा भाटापारा की मात्र 40 घर की जैन समाज द्वारा इतनी अच्छी सुव्यवस्थित की गई व्यवस्था से अत्यंत प्रसन्न हुए। दोपहर के सामयिक के उपरांत नगर में सभी लोगों को धर्म लाभ देते हुए माताजी के संघ का बलौदा बाजार हेतु विहार हो गया, तथा सभी श्रावक उनके पीछे पीछे इस तरह दौड़े चले गए जैसे गुड के पीछे चिटी, और माता जी ने जाते जाते अपने पीछे भाटापारा केलिए एक नया इतिहास रच दिया। -**पीयूष जैन**

कुंडलपुर में आचार्य श्री समयसागर जी महाराज ससंघ का मंगल पदार्पण 22 मार्च को संभावित, आचार्य संघ की होगी भव्य अगवानी

कुंडलपुर दमोह (विश्व परिवार)। सुप्रसिद्ध सिद्धक्षेत्र कुण्डलगिरी कुण्डलपुर में महासमाधिधारक संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य विद्या शिरोमणि आचार्य श्री समयसागर जी महाराज ससंघ का मंगल पदार्पण 22 मार्च को संभावित है। ज्ञातब्य है कि सिद्धक्षेत्र कुंडलपुर में 16 अप्रैल 2024 को आचार्य पद पदारोहण होने के पश्चात आचार्य श्री ससंघ कुंडलपुर से विहार कर स्वर्णोदय तीर्थ खजुराहो में मंगल चातुर्मास हेतु पहुंचे।खजुराहो चातुर्मास उपरांत सतना में भव्य संगोष्ठी का आयोजन संपन्न होकर आचार्यसंघ सतना से विहार कर बड़े बाबा की नगरी कुंडलपुर की ओर निरंतर बढ़ते हुए संभावित 22 मार्च को कुंडलपुर की पावन वसुंधरा पर आचार्य ससंघ का मंगल पदार्पण होगा। आचार्य संघ की भव्य आगवानी हेतु कुण्डलपुर क्षेत्र कमेटी द्वारा तैयारियां की जा रही है। क्षेत्रीय श्रद्धालु भक्त समाज भव्य अगवानी हेतु तैयारी में जुटी हुई है। कुंडलपुर क्षेत्र कमेटी अध्यक्ष चंद्र कुमार सराफ महामंत्री इंजी. आरके जैन ने श्रद्धालु भक्तों से कुंडलपुर पधारकर भव्य आगवानी में सम्मिलित होने का अनुरोध किया है।आचार्य श्री समयसागर जी महाराज का 46 वां दीक्षा दिवस 20 मार्च को मनाया जाएगा। 20 मार्च को आचार्य श्री ससंघ की आहारचर्या हरदुआ मेंन रोड जिला पन्ना में संपन्न होगी। -**जय कुमार जैन**

कुंडलपुर महोत्सव उद्घाटन के लिए मुख्यमंत्री नितीश कुमार को दिया आमंत्रण

कुंडलपुर (विश्व परिवार)। भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर दिगम्बर जैन समिति नंद्यावर्त महल तीर्थ कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में आयोजित होने वाले कुण्डलपुर महोत्सव-2025 के लिए नितीश कुमार (मुख्यमंत्री-बिहार सरकार) को समिति के प्रमुख व मंत्री विजय कुमार जी ने पटना में मिलकर कुण्डलपुर महोत्सव के उद्घाटन हेतु सादर आमंत्रित किया।

इस अवसर पर बिहार सरकार के ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार जी उपस्थित रहे। जिसमें मुख्यमंत्री को सर्वप्रथम जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का मंगल आशीर्वाद प्रेषित किया एवं प्रतिवर्ष जैनधर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामीजी का जन्मकल्याणक चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को सारे देश में हर्षोल्लासपूर्वक मनाया जाता है, उसी श्रृंखला में भगवान महावीर की वास्तविक जन्मभूमि कुण्डलपुर में प्रत्येक वर्ष भगवान की जन्मजयंती कुण्डलपुर समिति एवं जिला प्रशासन नालंदा पर्यटन विभाग-बिहार सरकार के द्वारा बहुत ही भव्य कार्यक्रम के साथ प्रतिवर्ष मनाया जाता है। बिहार सरकार के पर्यटन विभाग के द्वारा एवं जिला प्रशासन नालंदा की देखरेख में यह कार्यक्रम प्रभावनापूर्वक मनाया जाने वाला कार्यक्रम होता है। भगवान महावीर के अमिट सिद्धान्तों को जन-जन तक पहुंचाने में बिहार सरकार एवं कुण्डलपुर दि. जैन समिति इस कार्यक्रम को सुनिश्चित तरीके से आयोजित करती है।

भगवान महावीर का जन्म 2623 वर्ष पूर्व कुण्डलपुर बिहार में भगवान का जन्म हुआ था। उसी श्रृंखला में प्रत्येक वर्ष सारे देश में भगवान महावीर की जन्मजयंती मनायी जाती है। जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के आदेशानुसार लगभग 23 वर्षों से प्रत्येक वर्ष कुण्डलपुर महोत्सव यहां पर बहुआयामी कार्यक्रमों के साथ में सम्पन्न किया जाता है, जिसमें प्रात:काल झण्डारोहण एवं भव्य रथयात्रा एवं पंचामृत अभिषेक जिसमें दूध, दही, घी, जल आदि से भगवान की अवगाहना प्रमाण प्रतिमा का मस्तकाभिषेक किया जाता है एवं सारे देश में अहिंसा की कामना को लेकर भगवान के मस्तक पर शांतिधारा सम्पन्न की जाती है। सायं सांस्कृतिक कार्यक्रम में बिहार सरकार जिला प्रशासन नालंदा द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम, मेंहदी, रंगोली, चित्र बनाओ आदि प्रतियोगिता आयोजित की जाती है, जिसमें जिले के अधिकांश बच्चे शामिल होकर कार्यक्रम को उत्साहपूर्वक सम्पन्न करते हैं।

कलशारोहण के साथ मंदिर निर्माण पूर्ण होता है : मुनिश्री योगसागर जी महाराज

सागर (विश्व परिवार)। कलशारोहण के बाद पूर्ण रूप से मंदिर का कार्य हो जाता है। 9 देवताओं के अंतर्गत यह जिनालय है जिस परिवार ने इस मंदिर का निर्माण कराया है सराहनीय कार्य किया है। मंदिर निर्माणकर्ता को पूजन अभिषेक करने का नियम भी लेना चाहिए। यह बहुत बड़ा पुण्य का उदय होगा। यह बात निर्यापक मुनि श्री योगसागर महाराज ने कलशारोहण कार्यक्रम के पश्चात आर्शीवचन में कही उन्होंने कहा हमें अपनी आत्मा को पवित्र बनाना है।जो अपवित्र चीजें हैं उन्हें छोड़ते जाना है आत्मा पवित्र होती जायेगी और मांगलिक आत्मा होती जायेगी।

विधानाचार्य ब्र संजीव भैया, ब्र अरुण भैया के निर्देशन में कलशारोहण का कार्यक्रम चिंतामणि जैन, आशीष जैन स्वाति जैन, अनुराग जैन वंदना जैन श्री पाइप इंडस्ट्रीज परिवार ने किया। मुख्य कलश स्थापना नीलेश मलैया, कमलेश मलैया नरसिंहपुर और 4 अन्य कलश डॉ मनीष जैन, सौरभ सिंघई बूंद, संजीव दिवाकर और सुमित मोदी परिवार के द्वारा स्थापित किए गए।

बंडा रोड पर स्थित इस जिनालय का निर्माण- हाल ही में किया गया है संत निवास का शिलान्यास कार्यक्रम भी मुनि संघ के सानिध्य में सम्पन्न हुआ इस अवसर पर सर्वतोभद्र जिनालय के लिए आशीष जैन के द्वारा एक स्तंभ निर्माण की घोषणा की गई है। कार्यक्रम में ब्र रजनीश भैया, ब्र विकास भैया, संतोष घड़ी, मुकेश जैन ढाना, प्रदीप रांधेलिया, पूर्व विधायक सुनील जैन, देवेन्द्र जैना, संदीप बहेरिया, ऋषि कैलाश सिंघई, संजीव दिवाकर, संजय शास्त्री, मनीष निर्माण जंक्शन, राजीव भारिल्ल, सहित सागर नगर बंडा कर्रापुर आदि स्थानों से श्रद्धालु पहुंचे थे। -**मुकेश जैन ढाना**

महाराष्ट्र के किसान गुल्लू में ले रहे हैं प्रशिक्षण, बीज प्रक्रिया केंद्र गुल्लू किसानों को कर रहे हैं आकर्षित

आरंग (विश्व परिवार)। प्रधानमंत्री की महत्वाकांक्षी योजना किसान उत्पादक संगठन योजना के अंतर्गत कृषि विज्ञान केंद्र इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर के मार्गदर्शन में महाराष्ट्र के विभिन्न कृषक समूहों को चावल एवं धान्य फसलों के बीज उद्पादन एवं प्रसंस्करण की प्रशिक्षण हेतु ग्राम गुल्लु के बीज प्रक्रिया केन्द्र में भ्रमण कराया जा रहा है। जिसके तहत् अब तक विभिन्न कृषक समूहों के सैकड़ों किसानों का प्रशिक्षण सह भ्रमण कराया जा चुका है। प्रशिक्षण में पहुंचे किसानों को कृषि विज्ञान केंद्र रायपुर के वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा चावल आधारित व्यवसायों के विषय में विस्तार पूर्वक जानकारी दिया जा रहा हैं। जिसमें विशेष रूप से राइस मिल एवं बीज उत्पादन के संबध में विशेष रूप से बताया जा रहा हैं। वहीं ग्राम गुल्लू स्थित मां विद्या बीज प्रक्रिया केन्द्र में किसानों ने भ्रमण कर हर्ष व्यक्त करते हुए महाराष्ट्र में बीज उत्पादन कर कृषि आधारित व्यापार को बढ़ावा देने की बात कहा है। प्रशिक्षण में कृषि वैज्ञानिकों सहित बड़ी संख्या में महाराष्ट्र व अंचल के किसानों की उपस्थिति व सहभागिता रही।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे रायपुर रेल मंडल में ट्रेनों के सुरक्षित परिचालन को लेकर रायपुर स्टेशन में संरक्षा सेमिनार का आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे रायपुर रेल मंडल के संरक्षा विभाग के द्वारा ट्रेनों के सुरक्षित परिचालन हेतु परिचालन, विद्युत परिचालन, सिगनल एवं दूरसंचार तथा इंजीनियरिंग विभाग के कर्मचारियों के साथ कर्मचारी विश्राम गृह, रायपुर स्टेशन में संरक्षा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें निम्न बिंदुओं पर चर्चा की गई-

शंटिंग के दौरान बरती जानेवाली सावधानियां एवं लोड का स्टेबलिंग, स्पैड से बचाव के लिए सावधानियां। ऑटोमेटिक सेक्शन में दिये जानेवाले प्राधिकार एवं रू के द्वारा बरती जानेवाली सावधानियां, इंजीनियरिंग विभाग के कर्मचारी के द्वारा बरती जानेवाली ग्रीष्मकालीन सावधानियां एवं कार्य स्थल की संरक्षा, प्वाइंटस एवं सिग्नल की विफलता के दौरान परिचालन एवं सिग्नल कर्मचारियों के द्वारा बरती जानेवाली सावधानियां, प्राथमिक उपचार पेटी का प्रदर्शन एवं अग्निशामक यंत्र का उपयोग एवं प्रदर्शन।

इस संरक्षा सेमिनार में श्री सुरेश चन्द्र, वरिष्ठ मंडल संरक्षा अधिकारी/रायपुर तथा संबंधित अधिकारी, के साथ-साथ संरक्षा सलाहकारो ने संरक्षा सेमिनार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संरक्षा संगठन/रायपुर मंडल के द्वारा प्रत्येक माह में 02 संरक्षा संगोष्ठी का आयोजन रायपुर मंडल के विभिन्न स्टेशनों में किया जाता है, जिससे कर्मचारियों में कार्य करने के दौरान संरक्षा के प्रति जागरुकता लाई जा सके। उक्त संरक्षा संगोष्ठी में संरक्षा सलाहकार, सुपरवाइजर, एवं फील्ड कर्मचारियों को मिलाकर कुल 62 लोगों ने भाग लिया।

बलौदाबाजार नगरी में परम प्रभावी माताजी एवं स संघ 45 माताजी का अगवानी-आहार-विहार हुआ सम्पन्न

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। बलौदाबाजार की पावन धरा पर परम पूज्य एवं प्रभावक 105 गुरुमति माताजी एवं दृढ़ मति माताजी 40 माताओ का ससंघ जो डोंगरगढ़ से शिखरजी झारखंड की ओर जैन धर्म के सर्वोच्च तीर्थ स्थल शिखर जी की ओर पैदल बिहार कर रहे हैं उनकी अगवानी जैन समाज ने बड़े ही गाजे बाजे के साथ की बलोदा बाजार जैन मंदिर में माताजी संघ ने दर्शन कर शांति धारा का पाठ पढ़ा उसके पश्चात आपने मंगल प्रवचन दिया एवं इसके पश्चात विधि मिलने पर पढगाहन और फिर आहार किया। आहारचर्या में समाज की महिला मंडल का योगदान अतुलनीय था समाज के अध्यक्ष दिनेश जैन सचिव अमित जैन के साथ बलोदा बाजार नगर अध्यक्ष अशोक जैन भी पूरे कार्यक्रम और व्यवस्था में साथ रहे उन्होंने माता जी के बिहार में भी अपना साथ दिया माता जी का मंगल प्रवेश और विहार, समाज के लिए इतने बड़े संघ का पूरी विधि नियम के साथ कार्यक्रम को सफल बनाना एक परीक्षा के समान था जिसमें माताजी ने बलौदा बाजार जैन समाज की प्रशंसा कर पास कर दिया जैन समाज के अध्यक्ष दिनेश जैन एवं सचिव अमित जैन एवं कमेटी ने भाटापारा, नैला जांजगीर और सर्व समाज बलौदा बाजार से आए हुए लोगों का , जैन महिला मंडल के अध्यक्षा सुमन जैन उनकी कमेटी एवं महिला मंडल साथ में श्रेयांश, रचित, आयुष, सुजल, दिलीप जैन संजय जैन (मोना मसाला)सुभाष जैन का हृदय से धन्यवाद दिया है और पूरे जैन समाज के सदस्यों का आभार प्रकट किया है।

[3/19, 21:04] +91 74 15 373515: बलौदा बाजार नगरी में परम प्रभावी माताजी एवं स संघ 45 माताजी का अगवानी- आहार-विहार संपन्न हुआ। -**विद्याधर तिवारी**

सब्जी बाड़ी के कार्य से बदली खैरवाही के महिलाओं की कहानी

रायपुर (विश्व परिवार)। यह कहानी बालोद जिले के गुरूर विकासखण्ड के छोटे से गांव खैरवाही की है। जहॉ सीमित अवसरों और संसाधनों के बीच गांव की कुछ महिलाओं ने अपने घर की चारदिवारी से निकलकर अपने जीवन की कहानी को एक नया मोड़ दिया है। इन महिलाओं ने सब्जी बाड़ी के कार्य को चुनकर अपने जीवन को आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण की राह पर लाया है। ग्राम खैरवाही की कमला स्वसहायता समूह की महिलाओं ने गॉव में की जा रही पारम्परिक रूप से धान की खेती से हटकर सब्जी बाड़ी के कार्य को चुना। जिससे उन्हें अब प्रतिमाह बेहतर आय अर्जित हो रहा है, वे अब अपनी जरूरतों के साथ ही घर का खर्च भी वहन करने में सक्षम हुई हैं। कमला स्वसहायता समूह की श्रीमती सीता साहू ने बताया कि उनके समूह में कुल 10 महिलाएं हैं।

किसी भी व्यवसाय को बढ़ाने की कुंजी नवाचार है : डॉ. सुरेश हावरे

एनआईटी रायपुर एफआईई द्वारा नवाचार और उद्यमिता पर डॉ. सुरेश हावरे के विशेषज्ञ सत्र का आयोजन

रायपुर (पीआईबी)। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान रायपुर के फाउंडेशन फॉर इनोवेशन एंड एंटरप्रेन्योरशिप (एफआईई), एक तकनीकी व्यवसाय इनक्यूबेटर, ने नवाचार और उद्यमिता में वास्तविक व्यावसायिक अंतर्दृष्टि विषय पर डॉ. सुरेश हावरे द्वारा एक प्रेरणादायक विशेषज्ञ सत्र का सफल आयोजन किया। यह सत्र संकाय विकास कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित किया गया। डॉ. सुरेश काशीनाथ हावरे, अध्यक्ष, शासी निकाय, एनआईटी रायपुर, एक प्रसिद्ध परमाणु वैज्ञानिक, दूरदर्शी उद्यमी और सामाजिक सुधारक हैं। उन्होंने एनआईटी रायपुर के शिक्षकों, शोधकर्ताओं और छत्तीसगढ़ राज्य से चयनित 50 शिक्षकों, इनक्यूबेशन प्रबंधकों और उद्यमियों को संबोधित किया। उन्होंने विज्ञान, व्यवसाय और सामाजिक परिवर्तन में अपने समृद्ध अनुभव से नवाचार-संचालित उद्यमिता के महत्व पर महत्वपूर्ण विचार साझा किए। इस अवसर पर एनआईटी रायपुर के निदेशक, डॉ. एन. वी. रमना राव, वृत्ति विकास केंद्र के प्रमुख डॉ. समीर बाजपेयी, डीन, विभागाध्यक्ष, संकाय सदस्य एवं प्रतिभागी उपस्थित रहे।

डॉ. हावरे ने अपने 27 वर्षों के भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र के अनुभव से लेकर वर्तमान में हावरे प्रॉपर्टीज और ग्रुप ऑफ कंपनीज, मुंबई के अध्यक्ष के रूप में अपने सफर को साझा किया। उन्होंने परमाणु ऊर्जा से रियल एस्टेट व्यवसाय में अपने परिवर्तन के बारे में बताते हुए कहा कि किसी भी व्यवसाय को बढ़ाने की कुंजी नवाचार है। उन्होंने व्यावसायिक गतिशीलता पर चर्चा करते हुए बिज़नेस साइकिल, ब्लू ओशन रणनीति, और प्रतिस्पर्धा में आगे बने रहने के लिए सतत नवाचार की आवश्यकता पर विस्तार से बताया। उन्होंने प्रतिभागियों को नौकरी खोजने वाले नहीं, बल्कि नौकरी देने वाले बनने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि तकनीक, अनुसंधान और सतत विकास को एकीकृत करके ऐसे व्यवसाय स्थापित किए जा सकते हैं, जो न केवल आर्थिक रूप से सफल हों, बल्कि समाज पर सकारात्मक प्रभाव भी डालें। यह सत्र एनआईटी रायपुर एफआईई के इनक्यूबेटेड स्टार्टअप फाउंडर्स और अन्य प्रतिभागियों के बीच जोश और उत्साह से भरा रहा, जहां सभी ने नवाचार संचालित व्यवसायों की जटिलताओं को समझने और व्यावहारिक मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए सक्रिय रूप से भाग लिया। सत्र के अंत में, डॉ. समीर बाजपेयी ने डॉ. सुरेश हावरे को स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया और इस प्रेरणादायक सत्र के लिए उनका आभार व्यक्त किया।

यह संकाय विकास कार्यक्रम नवाचार और उद्यमिता पर केंद्रित है और इसे शिक्षा मंत्रालय के नवाचार प्रकोष्ठ और अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद के सहयोग से एनआईटी रायपुर एफआईई की टीम द्वारा आयोजित किया जा रहा है। इस टीम में संकाय प्रभारी डॉ. अनुज कुमार शुक्ला, अधिकारी प्रभारी श्री पवन कटारिया, और बोर्ड निदेशक डॉ. समीर बाजपेयी शामिल हैं। इस गहन कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षाविदों, शिक्षकों, इनक्यूबेशन प्रबंधकों और स्टार्टअप संस्थापकों के बीच नवाचार-संचालित मानसिकता को विकसित करना है, जिससे शिक्षा और उद्यमिता के बीच की खाई को पाटा जा सके।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर गुरूवार 20 मार्च 2025

संक्षिप्त समाचार

नहीं होगी दिक्कत, शहर में पानी की समस्या से निपटने 27 नलकूप मंजूर – महापौर

जगदलपुर(विश्व परिवार)। गर्मी में पानी की किल्लत से बचने के लिए नगर निगम ने तैयारी तेज कर दी है। लगभग दो दर्जन से अधिक वार्डों में इस बार बोरिंग किया जाएगा। इसके लिए निगम के अधिकारियों व कर्मचारियों ने महापौर के निर्देश पर पूरी तैयारी कर ली है। दो-चार दिन में काम शुरू भी हो जाएगा। हर साल गर्मी में पानी की किल्लत होती है, जिसे ध्यान में रखते हुए इस बार निगम ने पहले से तैयारी कर ली है। महापौर संजय पांडे ने कहा है कि नगर निगम क्षेत्र में प्रदेश अध्यक्ष एवं क्षेत्रीय विधायक किरण सिंह देव के अनुशंसा पर (डीएमएफटी) मद से 27 बोरिंग स्वीकृत हुआ है। जिसमें शहिद गुंडाधुर वार्ड, अटल बिहारी बाजपेयी वार्ड, सिविल लाइन वार्ड, गुरुगोविंद सिंह वार्ड, अनुकूल देव वार्ड, महेंद्र कर्मा वार्ड, वीरसावरकर वार्ड, सुंदरलाल शर्मा वार्ड, दंतेश्वरी वार्ड, प्रवीर वार्ड, शांति नगर वार्ड, चंद्रशेखर आजाद वार्ड, राजेंद्र नगर वार्ड, रमैया वार्ड, गंगा नगर वार्ड, अब्दुल कलाम वार्ड, छत्रपति शिवाजी वार्ड, श्यामाप्रसाद मुखर्जी वार्ड, विजय वार्ड, सिविल लाइन वार्ड व बलीराम कश्यप वार्ड शामिल है। जिसका कार्यादेश जारी किया जा चुका है ।इन जगहों पर बोरिंग होने से एवं पानी उपलब्ध होने पर हजारों परिवारों को इसका सीधा फायदा मिलेगा । गर्मी में जल स्तर लगातार गिरने से शहर के जनप्रतिनिधि भी चिंतित हैं ।इसलिए बोरिंग खोदने के साथ ही टैंकरों का मरम्मत कार्य भी किया जा रहा है। महापौर ने जगदलपुर के विधायक किरण सिंह देव का धन्यवाद ज्ञापित किया है ,जिन्होंने डीएमएफटी फंड से 27 बोरिंग स्वीकृत कराया है।

कलेक्टर ने पेयजल समस्या के त्वरित समाधान पर दिया जोर

कोरिया(विश्व परिवार)। कलेक्टर श्रीमती चंदन त्रिपाठी की अध्यक्षता में मंगलवार को जिला स्तरीय समय-सीमा बैठक आयोजित की गई, जिसमें विभिन्न विभागों की लंबित योजनाओं और प्रकरणों की समीक्षा की गई। बैठक में कलेक्टर ने आगामी गर्मी को देखते हुए जिले में पेयजल व्यवस्था को सुदृढ़ करने के निर्देश दिए। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग को दूरस्थ स्वास्थ्य केंद्रों, आश्रम-शालाओं और आंगनवाड़ी केंद्रों में समुचित पेयजल उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए कहा गया। बिगड़े हुए हैंडपंपों को तत्काल सुधारने और पेयजल आपूर्ति में किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरतने के निर्देश भी दिए गए। ग्रीष्मकाल को ध्यान में रखते हुए कलेक्टर ने लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग को निर्देश दिया कि वे पिछले वर्ष की समस्याओं का आकलन करें और इस बार पहले से ही समाधान सुनिश्चित करें। खराब पंपों और स्टार्टर्स को समय पर ठीक करने को कहा। बैठक में कलेक्टर ने आयुष्मान कार्ड और राशन कार्ड की सूची के आनुपातिक अध्ययन पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि ग्राम सभाओं में राशन कार्ड की सूची पढ़वाई जाए ताकि यह स्पष्ट हो सके कि कौन गांव में रहता है और कौन नहीं। इसके बाद फिजिकल वेरिफिकेशन कर आयुष्मान कार्ड की स्थिति को सुधारा जाए। अंत्यावसायी योजना के तहत दिए गए ऋण की वसूली पर जोर देते हुए कलेक्टर ने तहसीलदारों को निर्देश दिया कि जो हितग्राही बकाया राशि जमा करने में टालमटोल कर रहे हैं, उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए। पंचायत के माध्यम से लिए गए ऋण की समय पर वसूली सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए गए। वन अधिकार पट्टा मामलों की समीक्षा करते हुए कलेक्टर ने वन विभाग को निर्देश दिया कि वे समुचित निरीक्षण कर पंजीयन करें और वन अधिकार पट्टा की प्रक्रिया को और प्रभावी बनाएं।

गरियाबंद पुलिस कप्तान ने ली समीक्षा बैठक, अपराध नियंत्रण और जनसुरक्षा के दिए कड़े निर्देश

गरियाबंद (विश्व परिवार)। गरियाबंद पुलिस अधीक्षक निखिल राखेचा ने आज पुलिस अधीक्षक कार्यालय के सभा कक्ष में जिले के समस्त राजपत्रित अधिकारियों और थाना प्रभारियों की समीक्षा बैठक ली। बैठक में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक जितेंद्र चंद्राकर, अनुविभागीय अधिकारी गरियाबंद निशा सिन्हा, अनुविभागीय अधिकारी मैनपुर विकास पटेल, डीएसपी गरिमा दादर सहित अन्य अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित रहे।

बैठक का मुख्य उद्देश्य जिले में अपराध नियंत्रण, जनता के साथ बेहतर संबंध स्थापित करना और पुलिस की कार्यप्रणाली को और अधिक प्रभावी बनाना था। पुलिस कप्तान ने सभी थाना प्रभारियों को निर्देश दिया कि थाने में आने वाले पीड़ितों और फरियादियों के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार करें, जिससे जनता का पुलिस पर विश्वास मजबूत हो।

महिला, साइबर और संपत्ति संबंधी अपराधों पर सख्ती- पुलिस अधीक्षक ने महिला संबंधी, साइबर, संपत्ति और शरीर से जुड़े अपराधों पर त्वरित कार्रवाई के निर्देश दिए। लंबित अपराध, मर्ग और गुम इंसान मामलों की जांच शीघ्र पूरी करने और दोषियों पर सख्त कार्रवाई करने के निर्देश भी दिए गए।

FSL टीम ने दी ड्रग्स डिटेक्शन किट की ट्रेनिंग- बैठक के दौरान रायपुर एफएसएल टीम द्वारा सभी थाना प्रभारियों को नारकोटिक ड्रग्स डिटेक्शन किट के उपयोग का प्रशिक्षण दिया गया। इससे नशीले पदार्थों की पहचान और जांच में पुलिस को मदद मिलेगी।

ई-साक्ष्य मोबाइल ऐप का प्रशिक्षण- सभी थाना प्रभारियों को अपराध मामलों की जांच के दौरान ई-साक्ष्य मोबाइल ऐप के माध्यम से वीडियो और फोटोग्राफी करने की प्रक्रिया का भी प्रशिक्षण दिया गया, जिससे जांच को अधिक सटीक और प्रभावी बनाया जा सके।

अवैध गतिविधियों पर सख्त कार्रवाई के निर्देश- पुलिस अधीक्षक ने थाना क्षेत्रों में अवैध शराब, गांजा, हीरा तस्करी और जुआ-सट्टा में शामिल लोगों पर कड़ी कार्रवाई करने के निर्देश दिए। साथ ही निगरानी बदमाशों की फाइल खोलने और जिला बदर की कार्रवाई के आदेश भी दिए गए।

सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के निर्देश- सड़क दुर्घटनाओं को कम करने और यातायात व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए विशेष निर्देश दिए गए। शराब पीकर वाहन चलाने वालों, बाइक स्टंट करने वालों और लापरवाही पूर्वक वाहन चलाने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई के आदेश दिए गए। पुलिस अधीक्षक निखिल राखेचा ने कहा कि गरियाबंद पुलिस जनता की सेवा और सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने सभी पुलिसकर्मियों से ईमानदारी और निष्ठा के साथ ड्यूटी करने और जनता का विश्वास जीतने का आह्वान किया।

गरियाबंद जिले में प्रतिबंधित हेरोईन (चिट्टा) की पहली बड़ी कार्यवाही, 90 हजार के अवैध हेरोईन के साथ आरोपी गिरफ्तार

गरियाबंद (विश्व परिवार)। पुलिस ने नशे के अवैध कारोबार पर बड़ी सफलता हासिल करते हुए 90 हजार रुपये मूल्य के 09 ग्राम प्रतिबंधित मादक पदार्थ हेरोईन (चिट्टा) के साथ आरोपी अजय मोटवानी को गिरफ्तार किया है। आरोपी को गरियाबंद जिले के थाना छुरा पुलिस और साइबर सेल की संयुक्त कार्रवाई में पकड़ा गया।

पुलिस अधीक्षक गरियाबंद के निर्देश पर जिले में अवैध नशे के कारोबार के खिलाफविशेष अभियान चलाया जा रहा है। इसी कड़ी में दिनांक 18 मार्च 2025 को थाना प्रभारी छुरा उप निरीक्षक दिलीप मेश्राम को मुखबिर से सूचना मिली कि एक व्यक्ति हल्की दाढ़ी के साथ मटमैले रंग का टी-शर्ट और आसमानी रंग का जींस पहने हुए मादक पदार्थ हेरोईन (चिट्टा) की अवैध बिक्री के लिए ग्राहक की तलाश कर रहा है।

सूचना के आधार पर पुलिस टीम ने ग्राम कोसमबुडा फिंगेश्वर तिराहा के पास घेराबंदी कर संदेही को पकड़ा। पूछताछ में उसने अपना नाम अजय मोटवानी (उम्र 35 वर्ष), पिता स्व. किशनचंद मोटवानी, निवासी तेलीबांधा, रायपुर बताया। आरोपी की तलाशी लेने पर उसकी जींस की जेब से प्लास्टिक की झिल्ली में बंधी हुई 09 ग्राम हेरोईन बरामद हुई, जिसकी कीमत लगभग 90 हजार रुपये आंकी गई।

कानूनी कार्यवाही: बरामद मादक पदार्थ को गवाहों के समक्ष जब्त कर आरोपी के खिलाफ थाना छुरा में अपराध क्रमांक 38/2025 धारा 21 ह्यछक्क एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया। आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया।

आरोपी का आपराधिक इतिहास: अजय मोटवानी आदतन अपराधी है। उसके खिलाफ रायपुर जिले के विभिन्न थानों में कुल 29 आपराधिक मामले दर्ज हैं।

पुलिस टीम की भूमिका: इस कार्रवाई में थाना प्रभारी उप निरीक्षक दिलीप मेश्राम, सहायक उप निरीक्षक मोहन सिंह ठाकुर, प्रधान आरक्षक कृष्ण कुमार गिलहरे, प्रधान आरक्षक दुकेश्वर साहू, आरक्षक डिगेश्वर साहू, रिजवान कुरैशी, अलिखेश वैष्णव, अरविंद जाटवर, अवध पटेल, राजकुमार मरकाम एवं साइबर सेल टीम ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

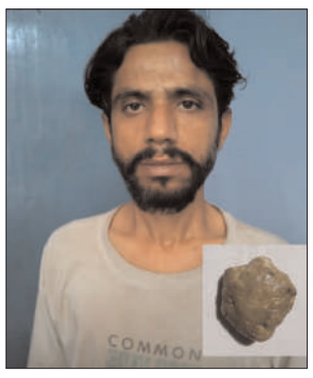

पांचवीं का हुआ गणित का पर्चा, पहले दिन 55 विद्यार्थी अनुपस्थित रहे

धमतरी(विश्व परिवार)। पांचवीं की परीक्षा आज से शुरू हो गई है। पहले दिन 10 हजार 884 विद्यार्थी इस परीक्षा में शामिल हुए। आज 55 विद्यार्थी परीक्षा से अनुपस्थित रहे। सबसे अधिक तीन हजार 402 विद्यार्थी धमतरी विकासखण्ड में, कुरूद विकासखण्ड में तीन हजार 261, नगरी विकासखण्ड में दो हजार 945 और मगरलोड विकासखण्ड में एक हजार 276 विद्यार्थियों ने पांचवीं और आठवीं की परीक्षाएं दीं। आज की परीक्षा में सबसे अधिक 26 विद्यार्थी धमतरी विकासखण्ड में अनुपस्थित रहे। इसी तरह कुरूद विकासखण्ड में 16, नगरी में 9 और मगरलोड विकासखण्ड में 4 विद्यार्थी अनुपस्थित रहे। जिला शिक्षा अधिकारी जगदल्ले ने बताया कि पांचवीं की परीक्षाएं आज से शुरू हो गई हैं। आठवीं की परीक्षा कल 18 मार्च से होंगी। जिले में इन परीक्षाओं के लिए एक हजार 581 परीक्षा केन्द्र बनाए गए हैं। परीक्षाएं सुबह 9 बजे से शुरू होंगी। पांचवीं की परीक्षाएं 11 बजे तक और आठवीं की परीक्षाएं दोपहर 12 बजे तक चलेंगी। पांचवीं और आठवीं की परीक्षाओं में जिले के 24 हजार 408 विद्यार्थी शामिल होंगे। परीक्षाओं को शांतिपूर्ण और निर्विघ्न सम्पादन के लिए उडनदस्ता दल का गठन किया गया है। दल में विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी, विकासखण्ड स्त्रोत समन्वयक, सहायक जिला समन्वयक समग्र शिक्षा आदि को शामिल किया गया है। उड़नदस्ता दल द्वारा आज परीक्षा केन्द्रों का निरीक्षण किया गया, जिसमें एक भी नकल प्रकरण नहीं मिला।

राज्यपालडेका ने प्रेस क्लब कोरबा परिसर में किया पौधारोपण

कोरबा(विश्व परिवार)। दो दिवसीय प्रवास में कोरबा पहुँचे छत्तीसगढ़ के राज्यपाल श्री रमेन डेका कोरबा प्रेस क्लब के कार्यक्रम में षामिल हुए। यहां प्रेस क्लब अध्यक्ष श्री राजेन्द्र जायसवाल सहित अन्य पदाधिकारियों द्वारा उनका आत्मीय स्वागत किया गया। उन्होंने प्रेस क्लब परिसर में एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। उन्होंने मानव जीवन मे वृक्ष के महत्व को बताते हुए सामी पौधे का रोपण किया और पौधे के उचित देखभाल करने के लिए कहा। साथ ही उन्होंने आमजनों को अपने आसपास अधिक से अधिक पौधे लगाने के लिए प्रोत्साहित किया।

गर्मी में न हो पानी की कमी, अभी से शुरू करें काम समय सीमा की बैठक में कलेक्टर के निर्देश

पंचायत फंड से भी करा सकेंगे बोरवेल पम्पों की मरम्मत

धमतरी(विश्व परिवार)। समय सीमा की साप्ताहिक बैठक में आज कलेक्टर श्री अबिनाश मिश्रा ने जिले में गर्मी के मौसम में पानी की समस्या वाली जगहों पर विशेष फोकस किया। उन्होंने पहले ही अधिकारियों को ऐसे स्थानों की पहचान कर पेयजल आपूर्ति के लिए विस्तृत कार्ययोजना तैयार करने के निर्देश दिए हैं। आज समय सीमा की साप्ताहिक बैठक में कलेक्टर ने इसकी विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने आने वाले दिनों में पानी की आपूर्ति बनाए रखने के लिए अधिकारियों को अभी से काम शुरू कर देने के निर्देश बैठक में दिए। कलेक्टर ने पानी की कमी वाले स्थानों पर जलस्त्रोतों की पहचान कर अभी से ही पानी पहुंचाने की वैकल्पिक व्यवस्था बनाने के निर्देश दिए। श्री मिश्रा ने ऐसे स्थानों पर जरूरत के अनुसार ज्यादा गहराई वाले नलकूप खोदने की सलाह दी। कलेक्टर ने पंचायतों में संचालित पेयजल योजनाओं में लगे बोरवेल पम्पों की मरम्मत आवश्यकतानुसार पंचायत फंड से भी कराने को कहा। उन्होंने लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी और सिंचाई विभाग के अधिकारियों सहित तीनों अनुभागों को एसडीएम से भी इस बारे में जानकारी ली। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के अधिकारियों ने बताया कि पानी की समस्या वाले जगहों पर पानी की आपूर्ति बनाए रखने के लिए कार्ययोजना तैयार कर ली गई है। अभी से ही गर्मी में जलस्तर नीचे जाने वाले नलकूपों की पहचान कर उनमें राईजर पाईप बढ़ाने का काम शुरू किया जा रहा है। खराब हेण्डपम्पों की भी पूरी पहचान कर उन्हें सुधारने का काम शुरू किया गया है। अधिकारियों ने बताया कि जिले में नलकूपों में राईजर पाईप बढ़ाने के लिए पर्याप्त संख्या में पाईप उपलब्ध हैं। स्पेयर पार्ट्स भी मौजूद हैं। अधिकारियों ने यह भी बताया कि आवश्यकतानुसार ही नए बोरवेल खोदने का काम किया जाएगा, जिसके लिए भी कार्ययोजना तैयार कर ली गई है। अधिकारियों ने बताया कि नगरी क्षेत्र में 13 ग्राम पंचायतों की पहचान पानी की समस्या वाले क्षेत्र के रूप में की गई है। इन पंचायतों में टेंकर के माध्यम से पानी पहुंचाने की व्यवस्था की जाएगी। इसी तरह कुरूद क्षेत्र में 10 और मगरलोड क्षेत्र में 2 ग्राम पंचायतें में पानी की समस्या की पहचान की गई है, यहां भी लोगों को पर्याप्त पानी उपलबध कराने के लिए जरूरी व्यवस्थाएं की जा रहीं हैं।

सरकार की योजनाओं से पहाड़ी कोरवा महिलाएं हो रही आत्मनिर्भर

सैंट्रिंग प्लेट के व्यवसाय से बना रहीं हैं समूह की महिलाएं अपनी पहचान

अम्बिकापुर(विश्व परिवार)। राज्य सरकार की योजनाओं से विशेष पिछड़ी जनजाति की पहाड़ी कोरवा महिलाएं अब आत्मनिर्भर बन रही हैं। कभी घर से बाहर न निकलने वाली ये महिलाएं आज स्वयं सहायता समूह से जुड़कर सैंटरिंग प्लेट के व्यवसाय से अच्छी आमदनी कमा रही हैं। अंबिकापुर विकासखंड के मलंगवा खुर्द गांव की महिलाएं पहले जागरूकता के अभाव में केवल घरेलू कामों तक ही सीमित थीं। लेकिन साल 2014 में बिहान योजना से जुड़ने के बाद उन्होंने आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ाया। लक्ष्मी स्वयं सहायता समूह की अध्यक्ष श्रीमती संगीता पहाड़ी कोरवा बताती हैं कि उन्होंने पहले बकरी और मुर्गी पालन शुरू किया, जिससे आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ। धीरे-धीरे बचत की आदत से उनके जीवन में बड़ा बदलाव आया। लक्ष्मी स्वयं सहायता समूह की सचिव श्रीमती सुशीला पहाड़ी कोरवा ने बताया कि सितंबर 2024 में समूह ने 90 हजार रुपये का लोन लेकर सैंटरिंग प्लेट का व्यवसाय शुरू किया।

प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत गांव में बनाए जा रहे पक्के मकानों के लिए एडवांस बुकिंग मिलने से उन्हें अच्छा मुनाफा हो रहा है। पिछले छह-सात महीनों में समूह की महिलाओं ने 30 से 40 हजार रुपये की कमाई की है, जिससे लोन भी पट रहा है और रोजगार भी मिल गया है। मुख्यमंत्री साय के नेतृत्व में महिलाएं आर्थिक आत्मनिर्भरता और उद्यमिता की ओर बढ़ रही हैं। संगीता और सुशीला बतातीं हैं कि महतारी वंदन योजना के तहत हर महीने उनके खाते में राशि आ जाती है, जिससे छोटी-मोटी जरूरतें पूरी हो जाती हैं। साथ ही, प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत पक्का मकान मिलने से रहने की समस्या भी दूर हो गई है। पहले छोटी-छोटी जरूरतों के लिए संघर्ष करने वाली ये महिलाएं आज आत्मनिर्भर और सशक्त हैं। सरकार की योजनाओं से इन्हें रोटी, कपड़ा और मकान की सुविधाएं मिली हैं, जिससे इनका जीवन स्तर सुधर रहा है। पहाड़ी कोरवा महिलाओं ने मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री का आभार जताया है। अब पहाड़ी कोरवा समूह की महिलाएं से अन्य ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित कर रही हैं।

सड़क हादसे में तीन लोगों की पर मौत

धमतरी(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले से सड़क हादसे का मामला सामने आया है यहां पर बेकाबू स्कॉर्पियो ने सड़क किनारे टहल रहे लोगों को कुचल दिया। इस दौरान मौके पर ही तीन लोगों की मौत हो गई है। स्कॉर्पियो की स्पीड अधिक होने के कारण वह लोगों को रौंदते हुए अनियंत्रित होकर नाले में जा गिरी। मामले में आरोपी कार चालक को गिरफ्तार कर लिया गया है। घटना बीती रात एनएच 30 पर दरबा गांव की है। वहीं यह पूरा मामला बिरेझर चौकी क्षेत्र का है। वहीं बैकुंठपुर के सोनहत के अंतर्गत आने वाले ग्राम कटगोड़ी में भीषण सड़क हादसे में चार युवकों की मौत हो गई। हादसे के बाद पूरे इलाके में शोक की लहर दौड़ गई। घटना पास में लगे ष्टष्टज्ञङ्क में रिकार्ड हुई है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार दोनों बाइकों की गति काफी तेज थी। शुरुआती जांच में दुर्घटना का मुख्य कारण ओवर स्पीड और लापरवाही पूर्वक वाहन चलाना बताया जा रहा है। हादसे में अमित कुमार प्रजापति निवासी कछार, कृष्ण कुमार, रोहित चौधरी राहुल पनिका की मौत हो गई। वहीं हादसे में एक अन्य युवक को गंभीर चोटे आई है, जिसका उपचार जारी है।

न्यूजीलैंड ने पाकिस्तान को 5 विकेट से हराकर सीरीज में 2-0 की बढ़त बनाई

डुनेडिन(एजेंसी)। न्यूजीलैंड ने पाकिस्तान के खिलाफ टी20 सीरीज में अपना दबदबा कायम रखते हुए यूनिवर्सिटी ओवल में खेले गए दूसरे मैच में 5 विकेट से आसान जीत दर्ज कर पांच मैचों की सीरीज में 2-0 की बढ़त बना ली। बारिश के कारण 15 ओवर के मैच में बल्लेबाजी के लिए बुलाए जाने के बाद पाकिस्तान ने कप्तान सलमान अली आगा की 28 गेंदों पर 46 रन की पारी की बदौलत 135/9 रन बनाए, जिसमें चार चौके और तीन छक्के शामिल थे। शादाब खान (26) और शाहीन शाह अफरीदी (नाबाद 22) दौरे पर आई टीम के लिए अन्य महत्वपूर्ण रन बनाने वाले खिलाड़ी रहे। मेजबान टीम के लिए बेन सियर्स, ईश सोढ़ी, जैकब डफी और जेम्स नीशम ने दो-दो विकेट लिए। जवाब में, सलामी जोड़ी टिम सीफर्ट (45) और फिन एलन (38) ने पहले विकेट के लिए 66 रनों की तेज साझेदारी की, जिससे न्यूजीलैंड ने 13.1 ओवर में पांच विकेट खोकर लक्ष्य हासिल कर लिया। पाकिस्तान के लिए हारिस राउफ ने तीन ओवर में 20 रन देकर दो विकेट लिए। कार्यवाहक कप्तान माइकल ब्रेसवेल द्वारा पहले गेंदबाजी करने का फैसला करने के बाद, डफी ने पहले ओवर में ही ओपनर हसन नवाज को आउट कर दिया। बेन सियर्स ने जल्द ही एक और महत्वपूर्ण सफलता हासिल की, उन्होंने आक्रामक मोहम्मद हारिस को 11 रन पर आउट कर दिया। जब कप्तान आगा ने पलटवार करने का प्रयास किया, तो पारी को फिर से बनाने के लिए कुछ शानदार स्ट्रोक खेले, लेकिन सोढ़ी ने पाकिस्तान की प्रगति को बाधित कर दिया क्योंकि स्पिनर ने पहले इरफान खान को आउट किया और फिर दो गेंद बाद खुशदिल शाह को एलबीडब्ल्यू आउट कर दिया। आगा की 28 गेंदों में 46 रनों की पारी ने पाकिस्तान को प्रतिस्पर्धी स्कोर तक पहुंचाने की कोशिश की, लेकिन दसवें ओवर में सियर्स द्वारा उनके आउट होने से मेहमान टीम संघर्ष करने लगी। शादाब (14 गेंदों पर 26 रन) और अफरीदी (14 गेंदों पर 22 रन) की शानदार पारियों की बदौलत पाकिस्तान ने 135/9 का स्कोर बनाया। 136 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए न्यूजीलैंड के सलामी बल्लेबाजों ने बिना समय गंवाए एलन के दूसरे ओवर में मोहम्मद अली की गेंद पर तीन बड़े छक्के लगाकर लक्ष्य का पीछा करना शुरू किया। तीसरे ओवर में सीफर्ट ने भी आक्रमण किया और एक्स्ट्रा कवर और डीप स्क्वायर लेग के बीच चार छक्के लगाकर अफरीदी को ध्वस्त कर दिया। तीसरे ओवर के अंत तक न्यूजीलैंड ने सात छक्के जड़ दिए थे। सीफर्ट ने 22 गेंदों पर 45 रनों की पारी खेली, लेकिन पांचवें ओवर में वह मोहम्मद अली की धीमी गेंद को मिड-ऑन पर खेल गए। एलन ने सातवें ओवर में जहानदाद खान की गेंद पर लगातार दो छक्के जड़कर अपनी आक्रामकता जारी रखी और अगली गेंद पर एलबीडब्ल्यू आउट हो गए। 16 गेंदों पर 38 रन बनाकर उन्होंने सुनिश्चित किया कि ब्लैक कैप्स सात ओवर में 88/2 के स्कोर पर मजबूती से नियंत्रण में थे और उन्हें इतनी ही गेंदों पर सिर्फ 48 रन की जरूरत थी।

उंगली की सर्जरी के बाद संजू सैमसन राजस्थान रॉयल्स की टीम से जुड़े

नई दिल्ली(एजेंसी)। पिछले महीने उंगली की सर्जरी करवाने के बाद संजू सैमसन सोमवार को राजस्थान रॉयल्स (आरआर) की टीम से जुड़ गए हैं। ईएसपीएनक्रिकइंफो से मिली जानकारी के अनुसार सैमसन बेंगलुरु में सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में रिहैब से गुजर रहे थे और यह पुष्टि नहीं हो सकी है कि वह अभी विकेटकीपिंग करेंगे या नहीं। अगर सैमसन फिट नहीं होते हैं, तो ध्रुव जुरेल विकेटकीपिंग का विकल्प हो सकते हैं। फरवरी में इंग्लैंड के खिलाफ पांचवें टी20 में भी जुरेल ने सैमसन की गैरमौजूदगी में विकेटकीपिंग की थी। उस मैच में बल्लेबाजी के दौरान जोफ्रा आर्चर की गेंद उनकी उंगली पर लगी थी। कंधे की चोट से पूरी तरह उबर चुके रियान पराग भी आरआर के लिए खेलने को तैयार हैं। इस चोट के कारण वह दक्षिण अफ्रीका और इंग्लैंड के खिलाफ टी20 से बाहर हो गए थे, लेकिन रणजी ट्रॉफी के दूसरे चरण में उन्होंने वापसी की थी। सौराष्ट्र के खिलाफ उन्होंने पहली पारी में अर्धशतक लगाया था और 26 ओवर की गेंदबाजी भी की थी।

राजस्थान रॉयल्स अपना पहला मुकाबला 23 मार्च को हैदराबाद में सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ खेलेगी। इसके बाद टीम 26 मार्च और 30 मार्च को गुवाहाटी में कोलकाता नाइट राइडर्स और चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ लगातार दो घरेलू मैच खेलेगी।

पूर्व भारतीय क्रिकेटर आकाश चोपड़ा ने राजस्थान रॉयल्स की टीम के संतुलन पर उठाए सवाल

नई दिल्ली(एजेंसी)। पूर्व भारतीय क्रिकेटर आकाश चोपड़ा ने आईपीएल 2025 से पहले राजस्थान रॉयल्स की टीम की संरचना पर चिंता जताई है, उन्होंने सवाल उठाया है कि क्या मेगा नीलामी के बाद टीम कमजोर हो गई है। अपने यूट्यूब चैनल पर एक वीडियो में, चोपड़ा ने बताया कि जोस बटलर, ट्रेंट बोल्ट, युजवेंद्र चहल और रविचंद्रन अश्विन जैसे प्रमुख खिलाड़ियों से अलग होने के आरआर के फैसले ने उन्हें स्पष्ट रूप से खाली कर दिया है, जिसे पर्याप्त रूप से नहीं भरा गया है। चोपड़ा ने कहा, उन्होंने अपने चार सबसे बड़े खिलाड़ियों को खो दिया, लेकिन प्रतिस्थापन उनके करीब भी नहीं हैं। शिमरॉन हेटमायर को छोड़कर

यह पूरी तरह से भारतीय बल्लेबाजी लाइनअप है। आपने कोई विदेशी बल्लेबाज नहीं चुना, जो काफी आश्चर्यजनक है। राजस्थान रॉयल्स ने नीलामी में जाने से पहले सैमसन, रियान पराग, ध्रुव जुरेल, यशस्वी जायसवाल और शिमरॉन हेटमायर को रिटेन किया था। हालांकि, काफी बड़ी रकम होने के बावजूद, उन्होंने कोई हाई-प्रोफाइल विदेशी बल्लेबाज नहीं चुना। इसके बजाय, उन्होंने अपने गेंदबाजी आक्रमण को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित किया, जिसमें जोफ्रा आर्चर (12.50 करोड़ रुपये), वानिंदु हसरंगा (5.25 करोड़ रुपये), महेश दीक्षाना (4.40 करोड़ रुपये), फजलहक फारूकी (2 करोड़ रुपये) और युवा दक्षिण अफ्रीकी तेज गेंदबाज क्वेना मफाका (1.50 करोड़ रुपये) को शामिल किया। हालांकि, चोपड़ा ने बताया कि आरआर में अभी भी एक उच्च गुणवत्ता वाले ऑलराउंडर की कमी है, जो पिछले सीजन में भी उन्हें परेशान कर रहा था।

वित्त वर्ष 2025-26 में भारत की खुदरा महंगाई दर चार प्रतिशत रहेगी : मॉर्गन स्टेनली

नई दिल्ली(एजेंसी)। अमेरिकी निवेश बैंक एवं वित्तीय सेवा कंपनी मॉर्गन स्टेनली ने वित्त वर्ष 2025-26 में भारत की खुदरा महंगाई औसतन चार प्रतिशत रहने की उम्मीद जताई है। कंपनी ने मंगलवार को जारी रिपोर्ट में कहा है कि उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) आधारित मुद्रास्फीति की दर चार प्रतिशत पर रहने का मतलब है कि आने वाले महीनों में आरबीआई द्वारा नीतिगत ब्याज दरों में 0.75 प्रतिशत की कटौती की जा सकती है, जबकि पहले 0.50 प्रतिशत की कटौती का अनुमान जारी किया गया था। मॉर्गन स्टेनली के अनुसार, खाद्य पदार्थों की कीमतों में कमी के कारण मुद्रास्फीति में नरमी से अतिरिक्त कटौती की गुंजाइश बनती है। रिपोर्ट में कहा गया है, लगातार दो महीने (जनवरी और फरवरी में) ओवरऑल मुद्रास्फीति की दर अनुमानों से कम रही है। इसे

देखते हुए हम अपने मौद्रिक नीति परिदृश्य को अपडेट करते हैं, और (नीतिगत दरों में) 0.25 प्रतिशत की एक और कटौती को जोड़ते हैं। इसमें उम्मीद जताई गई है कि वित्त वर्ष 2025-26 में खुदरा महंगाई औसतन चार प्रतिशत रहेगी, जबकि इसके पहले 4.3 प्रतिशत का अनुमान लगाया गया था। अमेरिका कंपनी ने कहा, इस प्रकार, हम 0.50 प्रतिशत के अपने पिछले अनुमान से 0.75 प्रतिशत की संचयी दर कटौती की ओर अग्रसर हैं। जनवरी और फरवरी के खुदरा महंगाई के आंकड़ों में अपेक्षा से तेज गिरावट देखी गई, जो खाद्य मुद्रास्फीति में कमी के कारण संभव हुई। वहीं, कोर मुद्रास्फीति निचले स्तर पर सीमित दायरे में बनी रही। मॉर्गन स्टेनली ने कहा, 31 मार्च को समाप्त होने वाली तिमाही के लिए अब हम हमारे पूर्व अनुमान 4.3 प्रतिशत की तुलना में खुदरा महंगाई के औसतन चार प्रतिशत पर रहने का अनुमान लगाते हैं। आरबीआई का ओवरऑल मुद्रास्फीति का एक लक्ष्य (2-6 प्रतिशत) है, इसलिए हमारा मानना है कि इससे अतिरिक्त नरमी की गुंजाइश बनती है। फरवरी में सीपीआई आधारित मुद्रास्फीति 3.61 प्रतिशत रही। छह महीने में पहली बार यह आरबीआई के चार प्रतिशत के लक्ष्य से नीचे आई है। खाद्य मुद्रास्फीति पिछले 12 महीने में ओवरऑल मुद्रास्फीति से ज्यादा रही है। इसमें मौसम संबंधी व्यवधानों का भी योगदान रहा है। रिपोर्ट में कहा गया है, हालांकि, वित्त वर्ष 2025-26 के लिए खाद्य मुद्रास्फीति के परिदृश्य में सुधार हुआ है क्योंकि रबी और खरीफ फसल उत्पादन में सालाना आधार पर वृद्धि का अनुमान है, जो अस्थिरता को कम करने में भी मदद करेगा। भले ही विकास में तेजी आ रही है, लेकिन ऋण वृद्धि की प्रवृत्ति अब भी 11 प्रतिशत पर नरम है, जो वित्तीय स्थिरता की चिंताओं को दूर रखता है और विनियमन तथा तरलता के मोर्चे पर और अधिक कटौती की संभावना को दर्शाता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि कोर मुद्रास्फीति में गिरावट आश्चर्यजनक रही है, जो कोर वस्तुओं और सेवाओं की मुद्रास्फीति के निचले स्तर से प्रेरित है। वास्तव में, भले ही बेस इफेक्ट सामान्य होने पर कोर मुद्रास्फीति बढ़ सकती है, लेकिन कमोडिटी की कीमतों में सीमा-बद्ध प्रवृत्ति से प्रेरित होकर इसके चार प्रतिशत के आसपास रहने की उम्मीद है। रिपोर्ट में कहा गया है कि खाद्य पदार्थों की मुद्रास्फीति में कमी का असर ओवरऑल सीपीआई में गिरावट की प्रवृत्ति की निरंतरता पर दिखने की संभावना है, जिस पर आरबीआई का फोकस होता है। इस संदर्भ में, ओवरऑल मुद्रास्फीति में नरमी आरबीआई द्वारा नीतिगत दरों में और अधिक कटौती के लिए अधिक गुंजाइश पैदा करती है।

रायपुर में फूड डिलीवरी के मामले में स्विगी की बोल्ट सर्विस ने किया शानदार विकास

रायपुर। भारत के अग्रणी ऑन-डिमांड कन्वीनियंस प्लेटफॉर्म स्विगी (स्2द्बद्दद्द4 स्ह्लस्न, ह्स्श्व: स्ङ्खढ्ढत्तत्तङ्ग / क्चस्श्व: 544285) ने आज रायपुर में अपनी बोल्ट सर्विस (बोल्ट बाय स्विगी) के शानदार विकास के आंकड़े साझा किए। यह क्विक फूड डिलीवरी सर्विस शहर में लोगों के खाने के तरीके को बदल रही है। ऑर्डर्स में मासिक आधार पर 22 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। इससे रेस्टोरेंट्स को अपना कारोबार बढ़ाने में मदद मिल रही है। बोल्ट बाय स्विगी के माध्यम से 10 मिनट के अंदर फ्रेश फूड की डिलीवरी की जाती है। सुपर-स्मार्ट बैकएंड ऑप्टिमाइजेशन के दम पर यह संभव हुआ है। रायपुर के 30 प्रतिशत रेस्टोरेंट इस सर्विस से जुड़ चुके हैं। शहर के खाने के शौकीन लोग ब्रेकफास्ट, लंच, स्नैक्स, डिनर और लेट नाइट बाइट्स के दौरान 5,000 से ज्यादा आइटम्स में से ऑर्डर कर सकते हैं। सभी डिलीवरी को टॉप स्पीड में ग्राहकों तक पहुंचाया जाता है। उल्लेखनीय रूप से बोल्ट के ऑर्डर्स में 39 प्रतिशत हिस्सेदारी डिनर की और 26 प्रतिशत हिस्सेदारी लंच की रही। स्विगी की बोल्ट सर्विस केवल स्पीड की बात नहीं है, बल्कि यह स्मार्ट ऑपरेशंस एवं ज्यादा खुश ग्राहकों की बात भी है। इसके माध्यम से रेस्टोरेंट्स का वर्कफ्लो बेहतर हुआ है, इंतजार का वक्त कम हुआ है और रिपीट ऑर्डर्स में बढ़ोतरी देखी गई है। होटल हैदराबादी, जूस जंगल, नेताजी होटल और थाली एक्सप्रेस जैसे प्रसिद्ध स्थानीय ब्रांड्स ने बोल्ट सर्विस का भरपूर फायदा उठाया है। इस सर्विस से जुड़कर इनके रोजाना के ऑर्डर्स में वृद्धि दर्ज की गई है। बोल्ट सर्विस इनके लिए महत्वपूर्ण रेवेन्यू ड्राइवर के रूप में सामने आई है। स्विगी में फूड मार्केटप्लेस के चीफ बिजनेस ऑफिसर सिद्धार्थ भाकू ने बोल्ट की सफलता को लेकर अपने विचार साझा करते हुए कहा, 'बोल्ट सर्विस वास्तव में सहूलियत को नए सिरे से परिभाषित कर रही है और इस उद्योग में नए मानक स्थापित कर रही है। रायपुर जैसे शहरों में इसकी तेजी से बढ़ती स्वीकार्यता फूड डिलीवरी के मामले में स्पीड और एफिशिएंसी के लिए बढ़ती मांग को दिखाती है। टेक्नोलॉजी एवं लॉजिस्टिक्स को सुगम तरीके से इंटीग्रेट करते हुए बोल्ट सर्विस रेस्टोरेंट्स को फ्रेश, हाई क्वालिटी मील सर्व करने में मदद क रही है, साथ ही सुनिश्चित कर रही है कि ग्राहकों को उनका पसंदीदा भोजन रिकॉर्ड टाइम में मिले।

एचडीएफसी बैंक में भारत सरकार की वरिष्ठ नागरिक बचत योजना भी उपलब्ध

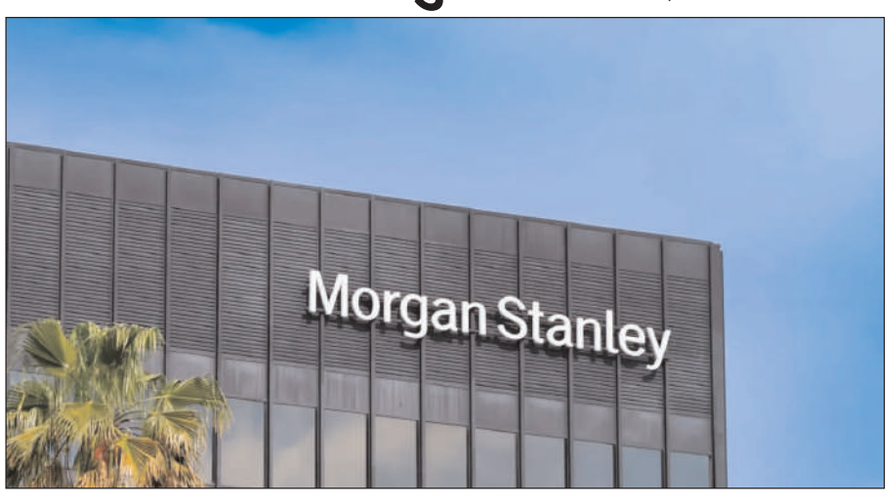

मुंबई। भारत के अग्रणी निजी क्षेत्र के बैंक एचडीएफसी बैंक ने आज घोषणा की कि वह अब वरिष्ठ नागरिक बचत योजना (एससीएसएस) के तहत जमा स्वीकार करेगा, जो बुजुर्गों के लिए भारत सरकार द्वारा संचालित एक बचत साधन है। एचडीएफसी बैंक भारत सरकार के लिए एक एजेंसी बैंक के रूप में कार्य करेगा और ग्राहकों को निर्बाध सेवा प्रदान करते हुए योजना जमा को स्रोत करने में मदद करेगा। सभी पात्र ग्राहक बैंक की किसी भी शाखा में जाकर एससीएसएस के लिए आवेदन कर सकते हैं। इस योजना के लिए पात्र ग्राहकों में 60 वर्ष या उससे अधिक आयु के व्यक्ति और 55 वर्ष या उससे अधिक आयु के सेवानिवृत्त व्यक्ति शामिल हैं। इसके अलावा रक्षा सेवाओं के सेवानिवृत्त कर्मी भी 50 वर्ष की आयु प्राप्त करने पर इस योजना के लिए आवेदन करने के पात्र हैं। एससीएसएस में निवेश आयकर अधिनियम की धारा 80सी के तहत लाभ के लिए पात्र है। यह योजना पांच साल की लॉक-इन अवधि के साथ तिमाही ब्याज भुगतान प्रदान करती है। इसे तीन साल के लिए कई बार बढ़ाया जा सकता है। इसके अलावा एससीएसएस के तहत दी जाने वाली ब्याज दर को सरकार द्वारा समय-समय पर अधिसूचित किया जाता है। एचडीएफसी बैंक के कंट्री हेड-पेमेंट्स, लायबिलिटी प्रोडक्ट्स, कंज्यूमर फाइनेंस एंड मार्केटिंग श्री पराग राव ने कहा, 卐एक प्रमुख एजेंसी बैंक के रूप में हम भारत सरकार के प्रमुख राष्ट्रीय लघु बचत योजना कार्यक्रम के तहत एक और योजना पेश करते हुए प्रसन्न हैं। एससीएसएस देश के बुजुर्ग नागरिकों को योजना के तहत दी जाने वाली आकर्षक ब्याज दर के आधार पर एक स्थिर आय स्ट्रीम विकसित करने में मदद करता है। आयकर गणना के लिए धारा 80 सी के नियमों अनुसार छूट के पात्र होना इस योजना का एक अतिरिक्त लाभ है। एससीएसएस बैंक की मौजूदा सरकार समर्थित पेशकशों जैसे पब्लिक प्रोविडेंट फंड और सुकन्या समृद्धि खाता योजना का पूरक है। प्रेस सूचना ब्यूरो और भारत सरकार के लेखा महानियंत्रक द्वारा रिपोर्ट किए गए आंकड़ों के अनुसार, वित्त वर्ष 24 में, एचडीएफसी बैंक द्वारा देश भर में कर संग्रह 10 लाख करोड़ रुपये को पार कर गया।

व्यापार समाचार

हीरो मोटर्स ने भारत में फोर्ज्ड पावरट्रेन पार्ट्स की मैन्युफैक्चरिंग के लिए जर्मनी की एसटीपी के साथ की साझेदारी

नई दिल्ली(एजेंसी)। हीरो मोटर्स लिमिटेड (एचएमएल) ने मंगलवार को भारत में फोर्ज्ड पावरट्रेन उपकरणों की मैन्युफैक्चरिंग के लिए जर्मनी की श्मीडे टेक्निक प्लेटेनबर्ग (एसटीपी) के साथ एक रणनीतिक ज्वाइंट वेंचर (जेवी) का ऐलान किया। जेवी के तहत लुधियाना के हीरो इंडस्ट्रियल पार्क में बनाई जाने वाली मैन्युफैक्चरिंग सुविधा में उत्पादन 2026 के मध्य में शुरू होने की उम्मीद है। हीरो इंडस्ट्रियल पार्क में अन्य ऑटोमोटिव और ईवी मैन्युफैक्चरिंग यूनिट्स जैसे एचएमसी एचआईवीई, एचवाईएम और स्पर टेक्नोलॉजीज भी मौजूद हैं। दोनों कंपनियों ने साझा बयान में कहा कि अंतरराष्ट्रीय बाजारों में उपस्थिति के साथ, इस संयुक्त उद्यम का लक्ष्य नियर-नेट शेप प्रिसिजन फोर्जिंग में अंतर को पाटना है और एडवांस मैन्युफैक्चरिंग में प्रमुख खिलाड़ी के रूप में भारत की स्थिति को मजबूत करना है। एचएमसी ग्रुप के चेयरमैन पंकज एम मुंजाल ने कहा, हमारी मजबूत रिसर्च एवं डेवलपमेंट और मैन्युफैक्चरिंग क्षमताओं के साथ एसटीपी के साथ यह साझेदारी हमें वैश्विक पावरट्रेन उपकरण बाजार में महत्वपूर्ण हिस्सेदारी हासिल करने में सक्षम बनाएगी। एसटीपी एक बड़ी जर्मन फोर्जिंग कंपनी है, जिसके जर्मनी में छह मैन्युफैक्चरिंग प्लांट हैं, जो ऑटोमोटिव और इंडस्ट्रियल उपयोग के लिए हाई-प्रिसिजन वाले फोर्ज्ड और मशीनीकृत उपकरणों का उत्पादन करते हैं। ऑटोमोटिव कम्पोनेंट टेक्नोलॉजी कंपनी एचएमएल, उच्च इंजीनियरिंग वाले पावरट्रेन सॉल्यूशंस और एलॉय एवं मेटालिक्स क्षेत्र में कार्यरत है और इसकी रिसर्च एवं डेवलपमेंट और मैन्युफैक्चरिंग सुविधाएं भारत, यूनाइटेड किंगडम और थाईलैंड में फैली हुई हैं। हीरो मोटर्स एचएमसी ग्रुप का हिस्सा है। ग्रुप का कारोबार ऑटोमोटिव उपकरणों, ई-मोबिलिटी, साइकिल, रियल एस्टेट और प्रीमियम रिटेल में फैला हुआ है।

MG कॉमेट EV 2025 को बेहतर सुविधा और आराम के साथ किया गया पेश

नईदिल्ली। भारत की स्ट्रीट-स्मार्ट कार को और भी स्टाइलिश और आकर्षक बनाते हुए, JSW MG मोटर इंडिया ने कॉमेट EV 2025 पेश किया है। स्त्र कॉमेट EV 2025 को 4.99 लाख (बैटरी-एज़-ए-सर्विस के साथ 2.5/किमी) की आकर्षक शुरुआती कीमत के साथ पेश किया गया है। बेहतर सुविधाओं और एडवांस टेक्नोलॉजी फीचर्स के साथ इस कार में भविष्य की डिज़ाइन देखने को मिलती है। वे ग्राहक जो तकनीक से भरपूर और शहरी आवागमन के लिए एक प्रैक्टिकल कार चाहते हैं, वे अपनी नज़दीकी स्त्र डीलरशिप पर जाकर नई स्त्र कॉमेट 2025 और हाल ही में लॉन्च किए गए कॉमेट ब्लैकस्टॉर्म एडिशन को 11,000 में बुक कर सकते हैं। MG कॉमेट EV 2025 को पांच अलग-अलग वैरिएंट में पेश किया गया है, इन वैरिएंट में एग्जीक्यूटिव, एक्साइट, एक्साइट फास्ट चार्ज, एक्सक्लूसिव और एक्सक्लूसिव फास्ट चार्ज शामिल हैं. इन सभी को एक बेहद खास ड्राइविंग अनुभव प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। एक्साइट और एक्साइट FC वैरिएंट अब रियर पार्किंग कैमरा और पावर-फोल्डिंग आउटसाइड रियर व्यू मिरर (ORVMs) से लैस हैं, ये फीचर्स वाहन चालकों के लिए ड्राइविंग को और भी सुविधाजनक और सुरक्षित बनाने हैं। एक्सक्लूसिव और एक्सक्लूसिव स्त्रष्ट वैरिएंट को प्रीमियम लेदरेट सीट और 4-स्पीकर ऑडियो सिस्टम के साथ अपग्रेड किया गया है, यह बदलाव इन-केबिन अनुभव को और भी प्रीमियम बनाता है। फास्ट चार्जिंग वैरिएंट 17.4 kWh बैटरी पैक के साथ आते हैं, ये एक बार चार्ज करने पर 230 किमी तक की ड्राइविंग रेंज प्रदान करते हैं। JSW MG मोटर इंडिया के सेल्स हेड राकेश सेन ने कहा, MG कॉमेट EV की इनोवेटिव डिजाइन और यूजर फ्रेंडली फीचर्स ने उन ग्राहकों के लिए इसे एक बेहतरीन विकल्प बना दिया है, जो रोजना आने जाने के लिए एक प्रैक्टिकल समाधान चाहते हैं।

आईआईएचएल ने 2030 तक 50 बिलियन अमेरिकी डॉलर के मूल्यांकन का रखा लक्ष्य : अध्यक्ष अशोक हिंदुजा

नईदिल्ली। इंडसइंड इंटरनेशनल होल्डिंग्स के चेयरमैन अशोक हिंदुजा ने कहा कि रिलायंस कैपिटल के अधिग्रहण के साथ इंडसइंड इंटरनेशनल होल्डिंग्स लिमिटेड (आईआईएचएल) 2030 तक 50 अरब अमेरिकी डॉलर के मूल्यांकन का लक्ष्य बना रही है। उन्होंने मंगलवार को घोषणा की कि रिलायंस कैपिटल के अधिग्रहण के साथ ही कर्ज में डूबी कंपनी की तीन साल लंबी समाधान प्रक्रिया पूरी हो गई है। इंडसइंड इंटरनेशनल होल्डिंग्स लिमिटेड (आईआईएचएल) ने बोली की राशि ऋणदाता के एस्क्रो खाते में स्थानांतरित कर दी है, और प्रशासक से प्रबंधन का अधिग्रहण बुधवार को होगा। मॉरीशस स्थित आईआईएचएल रिलायंस कैपिटल (आरसीएपी) के समाधान के लिए 9,650 करोड़ रुपये की बोली लगाकर सफल दावेदार के रूप में उभरी। बाद में, कंपनी ने रिलायंस जनरल इंश्योरेंस (आरजीआईसी) की सॉल्वेंसी को मजबूत करने के लिए 200 करोड़ रुपये का भुगतान किया, जो बोली राशि से अधिक था। हिंदुजा ने यहां मीडिया को संबोधित करते हुए कहा, हमारी ओर से लेन-देन पूरा हो चुका है। हमने इस सौदे पर तीन साल तक काम किया है। जैसा कि हम बात कर रहे हैं, पैसा एक एस्क्रो से दूसरे एस्क्रो खाते में जा रहा है। उन्होंने कहा कि अब मूल्य सृजन की यात्रा शुरू होगी। उन्होंने कहा कि रिलायंस कैपिटल के बीमा कारोबार का मूल्य रूढ़िवादी आधार पर 20,000 करोड़ रुपये होगा। हिंदुजा ने कहा कि आईआईएचएल पूरे आरसीएपी कारोबार की समीक्षा पूरी करेगा और आवश्यक फंड निवेश पर फैसला करेगा। उन्होंने कहा कि जब तक कारोबार मूल्य सृजन की जरूरतों को पूरा नहीं कर लेता, तब तक पूंजी निवेश कोई मुद्दा नहीं होगा। सहायक कंपनियों के बारे में उन्होंने कहा कि रिलायंस कैपिटल की करीब 39-40 इकाइयां हैं और नया प्रबंधन उनमें से कई को बेच देगा क्योंकि वे ज्यादातर छोटे कारोबार वाली छोटी मुखौटा कंपनियां हैं। ब्रोकिंग और एसेट रिकंस्ट्रक्शन कारोबार को नए प्रबंधन द्वारा बरकरार रखा जाएगा।

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, गुरुवार 20 मार्च 2025

मुख्यमंत्री साय ने वीरांगना रानी अवंती बाई लोधी की पुण्यतिथि पर किया नमन

रायपुर (विसं)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने वीरांगना रानी अवंती बाई लोधी की पुण्यतिथि (20 मार्च) पर उन्हें नमन किया है। उन्होंने कहा कि रानी अवंती बाई लोधी साहस, स्वाभिमान और बलिदान की प्रतीक हैं। उनका नाम भारतीय स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में अमर वीरांगनाओं में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। मुख्यमंत्री ने कहा कि रानी अवंती बाई लोधी ने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों का डटकर विरोध किया। उन्होंने अपने राज्य और मातृभूमि की रक्षा के लिए अंतिम क्षण तक संघर्ष किया और स्वाधीनता के लिए बलिदान दिया। रानी अवंती बाई नारी शक्ति और सामाजिक चेतना का प्रतीक थीं।

संक्षिप्त समाचार

उरकुरा में भव्य कलश यात्रा के साथ श्रीमद् भागवत महापुराण कथा का शुभारंभ

बीरगांव (विश्व परिवार)। उरकुरा भवानी शंकर मंदिर में चल रहे श्रीमद् भागवत महापुराण कथा ज्ञान यज्ञ सप्ताह का आयोजक सर्व विंध्य समाज के द्वारा किया जा रहा है जिसमें आयोजकों ने बताया कि यह कथा 18 मार्च से 25 मार्च तक चलेगी जिसमें कथा शुरू होने से पहले भव्य कलश यात्रा के साथ बड़ी शोभायात्रा निकाली गई जिसमें बड़ी संख्या में महिलाएं एवं पुरुष शामिल हुए यह शोभा यात्रा हर्षित विहार उरकुरा से बाजार चौक शीतला मंदिर से होते हुए कथा स्थल में स्थापना की गई इस कथा की व्याख्या रामललाचार्य जी महाराज के मुखारविंद से की जा रही है कथा के पश्चात महाराज जी ने जगत जननी मां बंजारी से आशीर्वाद लेने पहुंचे और क्षेत्र की जनता के लिए सुख शांति का आशीर्वाद मांगा यह कथा दोपहर 3:00 बजे से शाम 7:00 बजे तक आयोजित की गई है जिसमें बड़ी संख्या में भक्त पहुंचकर कथा का आनंद ले रहे हैं वही बीरगांव नगर निगम क्षेत्र के भक्तों के अलावा अन्य जगह से भी लोग कथा का आनंद लेने पहुंच रहे हैं इस कथा को सुनने लोगों में भारी उत्साह देखा जा रहा है।

नगर पंचायत नवागढ़ के वार्ड क्रमांक 14 में 08 अप्रैल को होगा मतदान, 11 अप्रैल को मतगणना

रायपुर (विश्व परिवार)। जांजगीर-चांपा जिले के नगर पंचायत नवागढ़ के वार्ड क्रमांक 14 के पार्षद पद के लिए मान्यता प्राप्त राजनैतिक दल के नामनिर्देशित अभ्यर्थी की मृत्यु दिनांक 08 फरवरी 2025 को हो गई थी। मृत्यु होने के कारण छत्तीसगढ़ नगरपालिका निर्वाचन नियम, 1994 के नियम 38 के प्रावधानानुसार उक्त वार्ड के पार्षद पद का निर्वाचन रिटर्निंग आफिसर द्वारा प्रत्यादिष्ट कर दिया गया। राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा नगर पंचायत नवागढ़ के वार्ड क्रमांक 14 पार्षद पद के निर्वाचन हेतु समय अनुसूची जारी कर की गई है.जारी कार्यक्रम अनुसार निर्वाचन की सूचना का प्रकाशन, स्थानों (सीटों) के आरक्षण के संबंध में सूचना का प्रकाशन एवं मतदान केन्द्रों की सूची का प्रकाशन आज दिनांक 19 मार्च को सुबह 10:30 बजे की गई तथा नाम निर्देशन पत्र प्राप्त करने हेतु आज दिनांक 19 मार्च 2025 से दिनांक 26 मार्च 2025 तक की तिथि निर्धारित की गई है। नाम निर्देशन पत्र सबेरे 10:30 बजे से अपरान्ह 3 बजे तक प्राप्त किया जायेगा। इसी प्रकार नाम निर्देशन पत्रों की संवीक्षा (रिटर्निंग आफिसर द्वारा) दिनांक 27 मार्च 2025 को पूर्वान्ह 10:30 बजे से की जाएगी. अभ्यर्थिता से नाम वापस लेने की आखिरी तारीख 29 मार्च 2025 को अपरान्ह 3 बजे तक निर्धारित की गई है.

गुरु कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी सरल से सरल मार्ग बताते हैं प्रिय वचन ही उत्कृष्ट वचन बनते हैं : मुनि श्री समता सागर जी महाराज

रायपुर (विश्व परिवार)। मां कभी बच्चे के साथ भेदभाव नहीं करती, दूध में पानी वह स्नेह भाव से मिलाती है जिससे बच्चे को दूध पच सके उसी प्रकार जीवन में किस व्यक्ति से क्या कार्य लिया जाऐ यह गुरु ही समझ सकता है, वह किसी की उपेक्षा नहीं करता, वल्कि किस व्यक्ति से कौनसा कार्य कराना है इस बात को वह अच्छी तरह समझते है, यथायोग्य कार्य देकर समाज को जोड़ने का कार्य करते है।

आतम बने परमात्मा, हो शांती सारे देश में, है देशना, सर्वोदयी महावीर के संदेश में मुनि श्री ने कहा कि भगवान के शासन को सर्वोदय शासन और जिन शासन क्यों कहा? भगवान महावीर ने अपने को जीता है इसलिये उनको जितेन्द्रिय कहा जाता है, सर्वोदय शासन का मतलब है जिसमें सबके कल्याण की बात आई हो ऐसा शासन सर्वोदय शासन माना गया है, आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने सर्वोदय शब्द की ब्याख्या दो हजार वर्ष पहले कर दी थी, महात्मागांधी ने सर्वोदय का नारा दिया तथा आगे बड़ाते हुये सत्य अहिंसा के इस प्रयोग को अपनाते हुये अपने देश को तो आजाद कराया ही कराया बल्कि सारी दुनिया के सामने चमत्कृरित कर दिया ऐसा सर्वोदय का सिद्धांत तीर्थंकर भगवन्तों का सिद्धांत है जिसमें सभी जीवों के कल्याण की बात कही गई है, समवसरण में तीर्थंकरों की जब देशना होती है तो यंहा पर भले ही हम चतुर्मुखी भगवान को विराजमान किये है, लेकिन साक्षात समवसरण में तो भगवान का मुख तो एक ही रहता है लेकिन आप जिस दिशा से देखना चाहते हो उस दिशा से भगवान और उनकी देशना खिरती है।

मुनि श्री ने कहा गुरु के बचन को उपकरण कहा गया है जो मानवीय उतत्थान के साथ कार्य करती है पिच्छिका जीवदया के क्षेत्र में संयम का उपकरण है कमंडल शुद्धि का उपकरण है उसी प्रकार नयन का उपनयन अर्थात चश्मा भी उपकरण है।आचार्यों ने तो इस शरीर को भी उपकरण ही माना है क्योंकि मनुष्य पर्याय से ही मुनि बनकर मोक्ष पद को पाया जा सकता है, इसलिये इस शरीर का उपभोग नहीं करना है उपयोग करना है, मुनि श्री ने कहा कि जो पुण्यशाली जीव होते है वह समवसरण के बाहरी रागरंग से प्रभावित नहीं होते यदि आपका मन उस रागरंग में चला गया तो आत्मतत्व से बंचित हो जाओगे और यदि इस शरीर का उपयोग किया तो यही शरीर आपको मुक्ती का मार्ग प्रशस्त करेगा मुनि श्री ने कहा कि कड़वी तुम्वी का उपयोग भी है और उपभोग भी है यदि उसे सुखा दिया तो वह तुम्हारे काम आऐगी और यदि उपभोग कर लिया तो वह जहर का काम भी करती है। मुनि श्री ने कहा कि यह सारी चर्चा आपके ज्ञान वर्धन के लिये यंहा पर की जा रही है जिससे समाज और परिवार में समरसता का बातावरण बना रहे, मुनि श्री ने कहा कि परिवार को बनाना और परिवार से निभाना बहूत कठिन कार्य होता है हम अपने परिवार को तो समृद्ध बना सकते है, लेकिन सारी समाज को समृद्ध बनाने के लिये बड़ी उदारता का परिचय दैना पड़ता है, अपना पराया छोड़कर व्यवहार को निभाना पड़ता है। मुनि श्री ने कहा कि जैसे शरीर के किसी अंग में तकलीफ होती है तो वह शरीर की ही तकलीफ़ मानी जाती है, उसी प्रकार समाज में कोई छोटा बड़ा नहीं होंना चाहिये, यदि किसी को कोई दु:ख दर्द है तो उसका सहारा बनकर आगे आना चाहिये।

मुनि श्री ने कहा, किसी भी संरचना में बहुत परिश्रम तथा समय लगता है बनाने में बहूत समय लगता है, बनी बनाई विल्डिंग को गिराने में बिचार नहीं करना पड़ता मुनि श्री ने कहा कि जन्म कुंडली सब बनवाते है मरण कुंडली कोई नहीं बनबाता इसलिये जिस कार्य के लिये आप सभी रायपुर वासियों ने आचार्य गुरुदेव से आशीर्वाद लिया है उस और खूब सलाह के साथ कार्य को आगे बड़ाऐं कार्यकर्ताओं को ताश के पत्तों का महल नहीं बनाना है गगन चुम्बी मंदिर बनाना है सभी बातें सभी को नहीं बताई नहीं जाती योजना को अमल करने में थोड़ा बिलंब हो सकता है हम सभी ने नई तथा पुरानी कमेटी के सभी पदाधिकारियों से चर्चा की सभी को मिल जुल कर कार्य को आगे बड़ाना है आप लोगों ने हमें जो योजना बताई है मुनिसंघ का आपको बहूत बहूत आशीर्वाद है।

इस अवसर पर मुनि श्री पवित्रसागर महाराज ने कहा कि भगवान के ज्ञान में जो नाम आ जाता है वह अविनाशी है, भगवान की वाणी की उपासना वही कर सकता है जो विषय भोग से दूर होता है, पंचेन्द्रिय विषय में जो लिप्त रहते है वह भगवान के समवसरण के भीतर जा ही नहीं सकता वह तो बाहर ही बाहर नाट्यमंडप में ही घूमता रहता है। राष्ट्रीय प्रवक्ता अविनाश जैन विद्यावाणी एवं स्थानीय प्रचार प्रमुख अतुल जैन गोधा ने बताया मंगल देशना के उपरांत मुनिसंघ की आहार चर्या संपन्न हुई निर्यापक मुनि श्री समता सागर महाराज को पड़गाहन कर आहार देने का सौभाग्य इन्द्र कुमार अनिल कुमार जैन भाटापारा वाले परिवार को मिला तथा मुनि श्री पवित्र सागर महाराज को आहार देने का सौभाग्य प्रीतम कुमार महेन्द्र कुमार जैन परिवार को प्राप्त हुआ।

सांयकाल 4 बजे मुनिसंघ का मंगल विहार श्री पदमप्रभु दि. जैन मंदिर लाभांडी के लिये हुआ 20 मार्च गुरुवार को आचार्य समय सागर महाराज का दीक्षा महोत्सव प्रात:कालीन धर्मसभा लाभांडी के दि. जैन मंदिर परिसर में रखी गई है।उपरोक्त संद्रभ में मंदिर कमेटी की ओर विनोद बड़जात्या ने रायपुर की समस्त जैन समाज को आमंत्रित किया तथा श्री समवसरण विधान का समापन हुआ विधानाचार्य धीरज भैया ने हवन के साथ समापन का कार्य कराया दि. जैन बड़ा मंदिर मालवीय रोड़ के मेंनेजिंग ट्रस्टी नरेन्द्र जैन गुरुकृपा को मंदिर निर्माण की जिम्मेदारी के साथ उनका सम्मान किया गया अध्यक्ष यशवंत जैन, उपाध्यक्ष लोकेश जैन सचिव सुजीत जैन कोषाध्यक्ष दिलीप जैन सहित समस्त पदाधिकारियों ने विधान में आऐ सभी सहयोगियों का अंगवस्त्र एवं तिलक श्रीफल से स्वागत किया।

-अविनाश जैन

एएमएनएस द्वारा मिश्रा कैम्प और पटवारीपारा-किरंदुल बस्ती में मेगा हेल्थ कैंप का सफल आयोजन

किरंदुल (विश्व परिवार)। AMNS ने मिश्रा कैम्प और पटवारीपारा किरंदुल बस्ती में एक मेगा हेल्थ कैंप का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया जिसमें सैकड़ों ग्रामीणों ने स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ उठाया। यह कैंप सुबह 11 बजे से शाम 4 बजे तक आयोजित किया गया। इस पहल का मुख्य उद्देश्य ग्रामीणों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना और उनकी स्वास्थ्य समस्याओं का समाधान करना था। इस शिविर में मेडिकल कॉलेजों और निजी प्रैक्टिस से जुड़े डॉक्टरों ने अपनी सेवाएँ दीं।

नि:शुल्क स्वास्थ्य सेवाएँ और जाँच शिविर में विभिन्न रोगों के विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम ने रक्त शर्करा स्तर, बीपी और मलेरिया की जांच की गई, और 77 मरीजों को नि:शुल्क दवाइयां का वितरण किया गया, जिससे लोगों को स्वास्थ्य संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी मिली।

एएमएनएस का यह प्रयास क्षेत्र के लोगों के लिए बेहद लाभकारी साबित हुआ, जहां सीमित स्वास्थ्य सेवाओं के बीच लोगों को सही समय पर जांच और उपचार प्राप्त हुआ। शिविर में चिकित्सकों और स्वास्थ्य कर्मियों की टीम ने लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक भी किया और उन्हें बीमारियों से बचाव के उपाय बताए।

स्थानीय निवासियों ने एएमएनएस के इस पहल की सराहना की और आग्रह किया कि इस प्रकार के शिविरों का आयोजन आगे भी किया जाए, ताकि अधिक से अधिक लोग इसका लाभ उठा सकें। एएमएनएस का यह प्रयास न केवल स्वास्थ्य सेवाओं को बढ़ावा देता है, बल्कि सामुदायिक कल्याण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

महापौर, सभापति, कमिश्नर, पार्षद और सैकड़ों नागरिकों ने तालाब सफाई का लिया संकल्प

महापौर, सभापति व कमिश्नर ने पकड़ा फावड़ा, नागरिकों ने उठाया कचरा

दुर्ग (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम द्वारा स्वच्छता अभियान के तहत बुधवार को वार्ड 18 शक्ति नगर, जवाहर नगर स्थित शक्ति तालाब की सफाई की गई। जिसमें महापौर श्रीमती अलका बाघमार ने तालाब के आस पास फैले जलकुंभी और कचरे को निकालने फावड़ा उठाया। वही सभापति श्याम शर्मा, आयुक्त सुमित अग्रवाल, लोक कर्म विभाग प्रभारी व वार्ड पार्षद देव नारायण चन्द्राकर का सहयोग करने सैकड़ों लोगों ने कतार में खड़े हो कर सफाई अभियान में हाथ बढ़ाया।

तालाब सफाई अभियान में एम आईसी सदस्य लोक कर्म प्रभारी देवनारायण चन्द्राकर, राजस्व विभाग प्रभारी चंद्रशेखर चन्द्राकर, स्वास्थ्य विभाग प्रभारी नीलेश अग्रवाल, गरीबी उन्मूलन, समाज कल्याण विभाग प्रभारी शिव नायक, वार्ड पार्षद श्रीमती सावित्री दमाहे, पार्षद सुरुचि उमरे, अरुण सिंह, मनमोहन शर्मा के अलावा सहायक अभियंता संजय ठाकुर, वीपी मिश्रा, धर्मेंद्र मिश्रा, पंकज साहू, मोहित मरकाम, तेखन सिन्हा, जितेंद्र सिंह राजपूत आदि शामिल हुए।

उन्होंने पहले नागरिकों से चर्चा की, फिर तालाब को साफ करने आम लोगों से सहयोग की अपील की।महापौर और वार्ड पार्षद का सयोग करने आम लोगो सहज रूप से तैयार हो गए। महापौर, सभापति, कमिश्नर एमआई सी, पार्षद और निगम अधिकारियों व पदाधिकारियों के साथ मिलकर तालाब से पालीथीन को तालाब से बाहर निकाला। दो घंटा से अधिक समय तक चले इस अभियान में टैक्टर ट्राली भरकर कचरा निकाला गया।महापौर श्रीमती अलका बाघनर ने अंत में शहर के प्रत्येक तालाब को साफ रखने नागरिकों को सजग रहने कहा।

भावना बोहरा ने विधानसभा में बैगा आदिवासी किसानों को कृषि व सिंचाई हेतु पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करने का उठाया मुद्दा

आदिवासी संस्कृति के संरक्षण व किसान हित में भी पूछा प्रश्न

पंडरिया (विश्व परिवार)। पंडरिया विधानसभा विधायक भावना बोहरा ने आज विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा आदिवासी परिवारों के हित एवं उन्हें कृषि और सिंचाई में आ रही समस्याओं को विधानसभा पटल में रखा। उन्होंने बैगा आदिवासी किसानों को जल संकट की वजह से सिंचाई व कृषि कार्य में हो रही समस्या के समाधान एवं पूर्व में उन क्षेत्रों में हुए ट्यूबवेल खनन में अनियमितता के संबंध में भी प्रखरता से मुद्दा उठाते हुए उन्हें सिंचाई हेतु पर्याप्त पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करने एवं अनियमितता की जांच की मांग सदन में की।

भावना बोहरा ने प्रश्न किया कि वर्ष 2019 से 2024 तक में कबीरधाम जिले में कितने विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा हितग्राहियों के खेतों को ट्यूबवेल खनन कार्य हेतु चयनित किया गया था तथा ट्यूबवेल खुदाई कर पंप प्रतिस्थापन किया गया? क्या इस ट्यूबवेल खनन कार्य में अनियमितता होने संबंधी कोई शिकायत प्राप्त हुई है? यदि हाँ, तो अनियमितता से संबंधित अधिकारी / कर्मचारी पर क्या कार्यवाही की गई? परन्तु विभाग द्वारा 6 वर्ष की व्यापक जानकारी को नियमों के परिपेक्ष्य में उत्तर आ सके इस हेतु सचिवालय द्वारा प्रश्न की अवधि को कम करने की जानकारी दी गई। विभागीय मंत्री श्रीराम विचार नेताम जी की अनुपस्थिति में वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री श्री केदार कश्यप ने बताया कि वर्ष 2021 से 2024 तक विभाग द्वारा कबीरधाम जिले में विशेष पिछड़ी जन-जाति बैगा हितग्राहियों के खेतों को नलकूप खनन हेतु चयनित नहीं किया गया है, अत: नलकूप खनन कर पम्प प्रतिस्थापन की जानकारी निरंक है। प्रश्नाधीन अवधि में नलकूप खनन एवं पम्प प्रतिस्थापन कार्य में अनियमितता होने संबंधित कोई भी शिकायत प्राप्त नहीं हुई है। भावना बोहरा ने कहा कि विधानसभा के समक्ष यह प्रश्न करने का हमारा उद्देश्य यही है कि विशेष पिछड़ी जनजातीय बैगा आदिवासी परिवारों को कृषि व सिंचाई हेतु उन्हें पर्याप्त जल की आपूर्ति हो सके वे केवल वर्षा जल पर ही निर्भर रहते हैं जिसकी वजह से उन्हें खेती-किसानी करने में बहुत ही समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने मंत्री जी के पूछा कि वर्तमान में सरकार द्वारा क्या बैगा आदिवासी परिवारों को सिंचाई के लिए बोरवेल खनन को लेकर कोई योजना बनाई जा रही है क्या? जिसके उत्तर में वन मंत्री जी ने बताया कि पीएम जनमन योजना के तहत हमारे बैगा आदिवासी एवं जनजातीय समुदाय के विकास, कृषि, शिक्षा एवं अधोसंरचना निर्माण के लिए कार्य कर रहें हैं। इसके तहत उनकी हर सुविधाओं एवं आवश्यकताओं के लिए योजना बनाकर कार्य किया जा रहा है। भावना बोहरा ने वर्ष 2019 के बाद से इन क्षेत्रों में अब तक बोर खनन का कार्य नहीं हुआ है और हमारे वनांचल क्षेत्र में निवासरत परिवार चाहे वह जनजातीय समुदाय हो या बैगा आदिवासी परिवार हैं कृषि पर ही निर्भर रहते हैं। वहीं वर्ष 2019 में इन क्षेत्रों में हुए नलकूप खनन में हुई अनियमितता के बारे में भावना बोहरा ने कहा कि वर्ष 2019 में इन क्षेत्रों में 93 नलकूप खनन की स्वीकृत शासन द्वारा दी गई थी जिसमें भारी अनियमितता हुई है जिसकी पूर्ण जानकारी उन्होंने सदन के समक्ष रखा। उन्होंने कहा कि इस नलकूप खनन में प्रति नलकूप का भुगतान तत्कालीन अधिकारियों एवं कार्य करने वाली एजेंसियों के साथ मिलकर 94 हजार रुपए की दर से इसका भुगतान किया गया है और जी.आई.पाइप की जगह उसमें प्लास्टिक पाइप लगाया गया जिसकी जांच की मांग भी उन्होंने सदन में रखी। भावना बोहरा ने प्रश्न पूछा कि छत्तीसगढ़ राज्य में आदिवासी संस्कृति, लोक कला व धार्मिक संस्कृति रीति रिवाज के संरक्षण, संवर्धन एवं समूह बनाने हेतु क्या प्रयास किया जा रहे हैं?

प्रधानमंत्री मोदी के प्रवास को लेकर लोगों में भारी उत्साह : अरुण साव

रायपुर (विश्व परिवार)। उप मुख्यमंत्री तथा बिलासपुर जिले के प्रभारी मंत्री अरुण साव ने आज मोहभठ्ठा में अधिकारियों की बैठक लेकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 30 मार्च के प्रवास को लेकर की जा रही तैयारियों की समीक्षा की। उन्होंने अब तक हुए कार्यों की जानकारी लेकर 25 मार्च तक तमाम कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए। श्री साव ने कहा कि प्रधानमंत्री का छत्तीसगढ़ और विशेषकर बिलासपुर आगमन हमारे लिए बड़े सौभाग्य की बात है। उनके कार्यक्रम को लेकर लोगों में बड़ा उत्साह है। इसे ऐतिहासिक एवं यादगार बनाने के लिए लोग ब्रेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। उप मुख्यमंत्री श्री साव ने प्रधानमंत्री के आगमन के पूर्व 25 मार्च से 29 मार्च तक पूरे जिले में विशेष स्वच्छता अभियान चलाने के निर्देश दिए।

छत्तीसगढ़ से MSMEs और निर्यात पारिस्थितिकी तंत्र को समर्थन देने के लिए, मल्टी-सेक्टरल एक्सपो CITEX 2025 का आयोजन 20-23 मार्च को रायपुर में

रायपुर (विश्व परिवार)। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSMEs) और संबंधित निर्यात पारिस्थितिकी तंत्र को समर्थन देने के उद्देश्य से, PHD चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (PHDCCI) 20-23 मार्च 2025 को रायपुर के सेंट पॉल चर्च कम्पाउंड, सिविल लाइंस में छत्तीसगढ़ अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एक्सपो 2025 (CITEX 2025) का आयोजन कर रहा है। CITEX 2025 का उद्घाटन 20 मार्च को किया जाएगा। CITEX 2025, MSMEs और उनके जुड़े निर्यात पारिस्थितिकी तंत्र से संबंधित एक प्रमुख पहल है, जो केंद्रीय भारत में एक अद्वितीय एक्सपो के रूप में होगा। यह एक्सपो सूक्ष्म, लघु और मध्यम व्यवसायों के व्यापारिक संभावनाओं को बढ़ाने के लिए एक मंच प्रदान करेगा, ताकि उन्हें उपयुक्त बाजार लिंक मिल सकें और वे बड़े कॉर्पोरेट्स के साथ सहायक इकाइयों या आपूर्तिकर्ताओं के रूप में जुड़ सकें।

इस एक्सपो के माध्यम से संवाद और नेटवर्किंग के द्वारा, CITEX 2025 वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों, उद्योग के हितधारकों, शिल्पकर्मियों, पेशेवरों, अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों, नागरिक समाज के सदस्य, मीडिया और उपभोक्ताओं की भागीदारी आकर्षित करेगा। अन्य बातों के अलावा, CITEX 2025 एक मल्टी-सेक्टरल एक्सपो होगा, जिसमें MSMEs के प्रतिनिधित्व वाले विभिन्न क्षेत्र होंगे- हस्तशिल्प, फर्नीचर और खिलौने; रत्न और आभूषण; निर्माण उपकरण; कृषि और खाद्य प्रसंस्करण; आयुष; शिक्षा, हरित और वैकल्पिक ऊर्जा; होटल उद्योग; साहसिक पर्यटन।

छत्तीसगढ़ के MSMEs और संबंधित निर्यातकों को समर्थन देने की आवश्यकता को देखते हुए, CITEX 2025 एक परिवर्तनकारी पहल है, जो स्थानीय उत्पादों और उनसे जुड़े MSMEs को सही स्थानों पर स्थापित करने के लिए हितधारकों के बीच सहयोग को गहरा करने में मदद करेगा। CITEX 2025 स्थानीय उद्योग उत्पादों को विभिन्न दर्शकों के सामने प्रदर्शित करने के लिए अवसर प्रदान करेगा, जिसमें उद्योग के हितधारक और उपभोक्ता दोनों शामिल होंगे। CITEX 2025 में लगभग साठ MSMEs अपनी स्टॉल्स के साथ भाग लेंगे, जिन्हें व्यापार लिंक और व्यावसायिक अवसरों से लाभ मिलेगा।

CITEX, छत्तीसगढ़ में MSMEs के विकास और निर्यात पारिस्थितिकी तंत्र को और बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक मल्टी-सेक्टरल एक्सपो है, और यह PHDCCI की वार्षिक प्रमुख पहल बनेगा। मूल रूप से, CITEX 2025 छत्तीसगढ़ के MSME समुदाय और विभिन्न आकारों के उद्योग के हितधारकों के लिए एक अत्यंत प्रभावशाली मंच बनने की उम्मीद है, जो इस परिवर्तनकारी मंच का हिस्सा बनने के लिए आगे आएंगे।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा आसमां पब्लिसर्स इंडिया प्रा.लि. पंजाब नेशनल बैंक के सामने, जयस्तंभ चौक, रायपुर से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354